उसके नाम पर

मूल लेखक
श्री० ई० ई० हेल

अनुवादक
पं० सिद्धिनाथ चौबे, एम० ए०

प्रकाशक
श्रीमती सी० ए० आर० जैनवियर
ए० पी० मिशन, इलाहाबाद

१६३२

विषय-सूची

विषय | पृष्ठ

थी। वह अपने
माता गेब्रियल
नाम तथा गुणः'';
नाम था, वैसे ही
हती थी और अन्य
गृह, पितृ-कार्यालय,
थी। प्रातःकाल वह

विषय पृष्ठ

उसके नाम पर

पहिला परिच्छेद

फ़लौची

'फ़लौची' 'जीन-वाल्डो' की कन्या थी। वह अपने पिता का जीवन-आनन्द और माता गेब्रियल की जीवन-मूरि थी। "यथा नाम तथा गुणः"; के अनुसार जैसा उसका नाम था, वैसे ही उसमें गुण भी थे। वह स्वयं प्रसन्न-चित्त रहती थी और अन्य लोगों को भी प्रसन्न रखती थी। वह अपने गृह, पितृ-कार्यालय, गृहांगण तथा सम्पूर्ण पड़ोस का प्रकाश थी। प्रातःकाल वह

अपने जनक-जननी को सुमधुर गायन द्वारा जगाती थी। उसका पिता सूत का व्यापार करता था। आसपास के जुलाहे सूत कातकर उसके हाथ बेचा करते थे। प्रायः जीन-वाल्डो उनके साथ निर्दयता पूर्ण सौदा करता था। वह पैसे-पैसे को दाँत से पकड़ता और कम दामों में अधिक माल लेना चाहता। परन्तु सौदा करते समय भी यदि फ़लीची गृह-प्रांगण से होकर निकल जाती तो वह उसकी झलक मात्र से अपना सौदा भूल जाता; अथवा यदि फ़लीची द्वारा गाये हुए भजन या विजय-गीत का एकाध पद उसके कानों में पड़ जाता, तो वह अपने आना पाई के मोल भाव को ऐसा त्याग देता, मानो उसमें कभी लगा ही न हो। इन्हीं मंत्रों द्वारा फ़लीची अपने पड़ोसियों को भी मुग्ध कर लेती थी। भिक्षुक उससे प्रेम करते थे और जुलाहों को तो वह अत्यंत ही प्रिय थी। वह अपनी इच्छानुसार जुलाहे तथा रंगरेज सदृश असभ्य लोगों के बीच स्वतंत्रता पूर्वक आया जाया करती थी। उनकी स्त्रियों तथा बाल-बच्चों पर उसका पूर्ण प्रभाव था। जब ग्रामीण सूत कातने वाले अथवा जुलाहे अपने सूत या कपड़े लेकर वहाँ आते, तो किसी न किसी बहाने से रुक कर उससे अवश्य बातचीत करते। घाटी में बहुत से ऐसे किसान थे, जिनके पास गर्मी तथा पतझड़ की ऋतु में अपनी इच्छानुसार वह जाती और बहुत देर तक वहीं रहती। वास्तव में फ़लीची अपने तथा अपने पड़ोसियों के घर की रानी थी।

जब दिसंबर समाप्त होने को आता तो अपने नियमानुसार फ़लीची 'फ़ोरवीयर्स' में स्थित गिरजाघर की तीर्थयात्रा करती। यह गिरजाघर 'भक्त टामस' के नाम पर प्रख्यात है। फ़ोरवीयर्स की पहाड़ी प्राचीन 'लायंस' नगर के मध्य से प्रारंभ होकर एकदम ऊँची हो गई है। फ़लीची को इस पर्वत की चोटी पर शीघ्रता परन्तु कठिनता से चढ़कर चारों ओर के दृश्यों का अवलोकन करने में बड़ा आनन्द मिलता था। वह प्रतिदिन यह तीर्थयात्रा किया करती थी। उसने इस पर्वत-यात्रा का नाम "तीर्थ-यात्रा" अनादर से नहीं, पर विनोदवश रखा था; क्योंकि जाते समय उसे बहुत सी वह बुड्ढी स्त्रियाँ मिलतीं जो भक्त टामस के गिरजाघर की (जिसे Our Lady का गिरजाघर कहते हैं) यात्रा के लिए आती थीं। अब भी वह ऐसा ही करती हैं। उनका विश्वास था और अब भी है कि वहाँ जाकर प्रार्थना करने से मनुष्य के सारे अनिष्ट दूर हो जाते हैं। फ़लीची जब उधर जाती तो सदा उस छोटे गिरजाघर की ओर ध्यान पूर्वक देखती, पवित्र जल से अपने शरीर पर क्रूश का चिह्न बनाती, और गिरजे के एक छोटे से खंड में जाती और घुटने टेक कर 'हे मेरी' अथवा 'हे हमारे स्वर्गवासी पिता' वाली प्रार्थना करती। इसी खंड में भक्तिन फ़लीची का एक चित्र था जिसमें वे भूमि पर लेटी थीं और उनके ऊपर 'मेरी' की अलौकिक प्रभा जगमगा रही थी। प्रार्थना करने के पश्चात् फ़लीची घुटने टेके हुए कुछ देर तक

प्रतीक्षा करती मानो वह अपने स्वर्गवासी पिता का उत्तर सुनना चाहती हो। तत्पश्चात् वह फिर अपने शरीर पर क्रूश का चिह्न बनाती और बड़ी वेदी के पास फिर एक बार घुटने टेककर, शीतल-स्वतंत्र वायु में विहार करने चली जाती।

यह उसका प्रति दिन का नियम था। इस दिन फ़लीची ने अधिक देर तक प्रतीक्षा की। वहाँ पर मानता-पूर्ति की सैकड़ों भेंटें लटक रही थीं। इनमें से दो को फ़लीची ने पहिले कभी नहीं देखा था। ये तस्वीरें थीं। सच पूछिये तो, उन चित्रों का चित्रण अति सुन्दर न था, पर फ़लीची को कला की सुन्दरता अथवा उसके भद्देपन से कुछ मतलब न था। प्रत्येक चित्र में भयावह बात से रक्षा करने का दृश्य अंकित था। एक में फ़लीची ही की समवयस्का एक बालिका का चित्र था जो एक भग्न पुल के छिन्न-भिन्न भागों को बहा लेजाने वाली नदी के किनारे बह कर लग गई थी। दूसरे चित्र में एक अश्वारोही शूरवीर का चित्र था जिस पर पाँच भयानक तुर्क वार कर रहे थे, पर उन वारों से उसकी कोई हानि न होती थी। पवित्र-माता (मेरी) कर में दंड धारण किये हुए बादलों में दृष्टिगोचर हो रही थीं और उन्हीं की कृपा से पेनिम के भाले चूकते जा रहे थे। फ़लीची ने इस चित्र की ओर एक क्षण तक देखा, पर दूसरे की ओर तो वह बहुत देर तक देखती रही।

फ़लीची ने स्वयं इस चित्र में चित्रित भयानक दृश्य को अपना आँखों देखा था और उसका जीवन-पर्यन्त-अमिट प्रभाव भी उस पर पड़ा था। एक वर्ष पूर्व सिंह-हृदय (शेर-दिल) रिचर्ड और फ्रांस के फ़िलिप ऑगस्टस, लायन्सको एक साथ आये थे। वे दिग्विजय करने निकले थे। उनके साथ अश्वारोही शूरों तथा अन्य सैनिकों की बड़ी भीड़ थी। लायन्स के गिरजाघर के प्रधान अध्यक्ष उस समय एक स्वतंत्र राजा थे। उन्होंने स्वतंत्र राजा की भाँति उन दोनों महाराजाओं का स्वागत किया। नाना प्रकार के उत्सव मनाये गये। कथीड्रल (बड़े गिरजा) में बड़ी धूमधाम से पूजोत्सव रचा गया और अंत में जब दोनों सेनाएं सुसज्जित हो गई तब घोषणा की गई कि वह "पवित्र-नगर" को प्रस्थान करेंगे। सब लायन्स-निवासी इस तमाशे को देखने की प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछ लोग नदी में नावों पर जा बैठे थे, कुछ सेनाओं के पुल पार करने की प्रतीक्षा कर रहे थे और कुछ लोग दूर सड़क पर टहल रहे थे। बालिकाएँ सुन्दर अंग्रेज़-राज के अश्व पर पुष्प-वर्षा कर रही थीं। पुरोहित-गण सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित हो गिरजे की झंडियाँ उठाए जा रहे थे साथ ही भजन भी गाते जाते थे। वृद्ध अथवा युवक सम्पूर्ण लायन्स-वासियों को विश्वास था कि दो-तीन महीने में यह विजयी-दल प्रभु के नगर में पहुँच जायगा।

पर हाय ! हाय !! यह क्या हुआ ? कठिनता से दोनों नरेश स्वयं अपने कुछ पार्श्ववर्ती सेवकों के साथ पुल पार कर पाये थे और ज्यों ही नगर-निवासी सैनिकों का तमाशा देखने की उत्सुकता से उन पर टूटे पड़ते थे त्योंही उनके पैरों के नीचे एक क्षण तक भयंकर कँपकँपी मालूम हुई और पुल का एक स्तंभ गिर पड़ा और फिर एकएक कर के दो और गिरे। सम्पूर्ण भीड़, सैनिक, घोड़े, मनुष्य, स्त्रियाँ तथा बच्चे नीचे रोन नदी में जा गिरे। नदी के प्रचंड-प्रवाह में पुल का भग्न भाग तथा छटपटाते हुए मनुष्य भयंकर गड़बड़ी (अशांति) मचाते हुए बह चले। नाविकों ने अपनी शक्ति भर लोगों को बचाने का प्रयत्न किया, पर पानी में छटपटाने वालों की भाँति स्वयं उनकी जानें जोखिम में थीं। राजा-द्वय अपने घोड़ों को घुमा तीर की ओर चले परन्तु बच्चों की भाँति वे शक्तिहीन थे, न तो स्वयं सहायता पहुँचा सकते थे और न किसी को ऐसा करने की आज्ञा ही दे सकते थे। इस भाँति, केवल एक घंटे में यह ऐश्वर्य तथा विजय का दिवस घनघोर अंधकार की घटा में विलीन हो गया।

अवश्य यह आश्चर्यजनक बात थी कि उस अशांति में बहुत कम लोग डूबे, पर रक्षितों में से बहुतों के अंग जीवन-पर्यन्त के लिये भंग हो गये। लायन्स में कोई भी ऐसा घर नहीं बचा था जिसे अपने ख़तरों और दुःखों की कहानी नहीं कहनी थी।

भक्त टामस के गिल्जेव्र वाले चित्र में जिसे देखने को फ़लीची खड़ी हो गई थी वही ध्वंसकारी दृश्य, और फ़लीची की माता की धर्म-पुत्री 'गेब्रियल ले स्ट्राँज' की आश्चर्यजनक रक्षा का चित्र चित्रित था। फ़लीची ने स्वयं इस पुल का गिरना अपनी पार्वतीय-यात्रा के सुरक्षित दूरस्थ स्थान से देखा था। इस बालिका ने अपनी बुद्धिमत्ता से ज्ञात कर लिया था कि ऐसी बड़ी भीड़ में उसके पिता की शुभेच्छाएं भी उसके किसी काम की नहीं। उसने सम्पूर्ण दृश्य देखने की प्रतिज्ञा कर ली थी। अस्तु, जब अन्य लोग सैनिक-दल का अवलोकन करने के लिये गलियों में गये, उस समय फ़लीची फ़ोरवियर्स पर्वत की शिखा पर बैठी थी। वहाँ से वह प्रत्येक संघ को दल में सम्मिलित होते देख सकती थी और मैदान से आई हुई संगीत-ध्वनि को भली-भाँति सुन सकती थी।

जब वह वहाँ बैठी थी और जब सेना ने पुल पार करना आरंभ किया था तभी उस बालिका को इस विध्वंसकारी दृश्य का आभास मिल गया था। उसने पिछली पंक्ति के सैनिकों को पंक्ति तोड़ कर नदी की ओर दौड़ते देखा और उसने यह भी देखा कि भग्न पुल की धूल नदी पर छा गई है और लोग चीखते चिल्लाते हुल्लड़ मचा रहे हैं। वह इस विपत्ति को ताड़ गई और शीघ्र घर चली आई। वहाँ उसने व्यक्तिगत कष्टों की अनेक कथाएं सुनीं। रात्रि के पूर्व ही लोगों को ज्ञात हो गया कि किस भाँति गेब्रियल डूबती डूबती बची।

फ़लीची ने अपनी सखी की रक्षा का वह चित्र देखा तो उस दिन का ऐश्वर्य तथा दुःख-मिश्रित संपूर्ण दृश्य उसके नेत्रों के सम्मुख आ गया।

फ़लीची ने पवित्र जल से फिर अपने ऊपर क्रूश का चिन्ह बनाया और जितनी गंभीर वह गिर्जे के भीतर आते समय थी, उससे कहीं अधिक गंभीर होकर वह वहाँ से बाहर निकली। अब "बुराई की समस्या" (The Problem of evil) उसके मस्तिष्क में आ उपस्थित हुई। उसने अपने तईं पूछा, "क्या कारण है कि कुमारी मेरी की सहायता से गेब्रियल तो बच गई और अन्य लोग नष्ट होने को छोड़ दिये गये?" परन्तु हठपूर्वक उसने अपने आप से यह प्रश्न नहीं किया। वह जानती थी कि इस प्रश्न का उत्तर कहीं न कहीं अवश्य है। और जब वह पर्वत-शिखर पर और ऊँची चढ़ कर हिमऋतु की मन लुभाने वाली अलौकिक शोभा का अवलोकन करने लगी जो उस दिन उसे और दिनों की अपेक्षा अधिक सुन्दर प्रतीत होती थी— तो उसका मृत्यु, शोक अथवा संदेह सम्बन्धी सारा ध्यान विस्मृत हो गया। वह अपने मोटे दुशाले को भली भाँति ओढ़ कर अपनी चिर संगिनी दीवार की आड़ में बैठ गई। सूर्यदेव की सुमधुर किरणें उस पर अठखेलियाँ करने लगीं। ऐसी स्थिति में बैठ फ़लीची सत्रहवीं बार अपने नेत्रों को नीचे के सुविस्तृत दृश्यों की कमनीयता से सींचने लगी।

कुछ लोगों का कथन है कि फ्रांस में कोई भी ऐसा दृश्य नहीं है जो उसकी बराबरी कर सके और मैं निश्चय पूर्वक कह सकता हूँ कि उनका कहना यथार्थ है; इसमें तनिक भी अत्युक्ति नहीं है। ठीक इसके नीचे 'नाओन' और 'रोन' नदी के संगम पर प्रफुल्ल बदना नगरी स्थित थी। मुख्य गिरजाघर तथा अन्य गिरजाघरों के उच्चतम कंगूरे और शिखर फ़लीची के आसन से बहुत नीचे थे। स्थिर वायु में ऊपर उठते हुए धूम्र-स्तम्भ भी वहाँ तक नहीं पहुँच सकते थे। वहाँ से सुविस्तृत खेत और उनमें बने हुए कृषक-गृह, घासों के गाँज, खलियान तथा बारी-बगीचे भली भाँति दृष्टिगोचर होते थे। वह उनमें से प्रत्येक स्थान का नाम बतला सकती थी जहाँ इसी साल फ़सल के समय वह गई थी। इसके आगे का दृश्य भूरे, बैंगनी, नीले तथा खाकी रंगों में परिवर्तित हो अस्पष्ट हो गया था। कभी कभी वह किसी पर्वत-स्थित गिरजेघर की चोटी अथवा किसी गढ़ की लंबी दीवारों या कुछ ऐसे चिह्नों को देख कर अनुमान कर लेती थी कि वहाँ भी स्त्री, पुरुष तथा उसी की भाँति प्रसन्न बालिकाएँ रहती होंगी। परन्तु फ़लीची के नेत्र इन वस्तुओं पर देर तक स्थित न रहते थे क्योंकि उससे कहीं ऊँचे सुदूर स्थित उसका प्राचीन मित्र था जिसे वह 'मोंबलाँ' (श्वेत पर्वत) कहा करती थी। कभी कभी वह कहती, "आज इसका मुँह गुलाब की भाँति खिला है।" सूर्यास्त की सुनहली किरणों से मिल कर

पर्वत का हिम-मय कपोल रक्त आभा धारण कर लेता था। फ़ली ची के शब्दों में "इस स्वर्गीय दृश्य से बढ़ कर कोई दृश्य नहीं था"। ऐसे दृश्य का दर्शन फ़लीची को भी कठिनता से वर्ष भर में पाँच बार प्राप्त हो पाता था। आलसी महंतों, पुरोहितों, तथा उसके पिता के सदृश धनी जुलाहों और नगर के मितव्ययी व्यापारियों की तो बात ही जाने दीजिये—उन्हें तो उसका दर्शन कभी मिल ही नहीं सकता था।

उस श्वेत-पर्वत-माला को देख फ़लीची हँसते हुए कहती "प्रणाम, मेरे प्राचीन मित्र, प्रणाम" मानो वह पर्वत नब्बे मील की दूरी से उसकी बात सुन सकता था। "आज संध्या के वस्त्र धारण कर आप बड़े सुन्दर प्रतीत हो रहे हैं। क्या आप मेरे प्रीति-भोज में उपस्थित न होंगे? हे प्रिय मित्र, इन दर्शनों के लिये मैं आपको धन्यवाद देती हूँ। यदि आप न दिखलाई पड़ते तो मुझे अत्यंत खेद होता। यह चुम्बन आप के लिये है और यह दूसरा है। यह पंख आपके लिये है और यह दूसरा भी।" यह कह कर वह पंख के दो छोटे टुकड़े हवा में फेंक देती और प्रसन्नता पूर्वक पर्वत पर पूर्व की दिशा में उनको उड़ते हुए देखती रहती। फिर कहती, "अच्छा, अब मैं चली, मित्रवर! माता जी का आदेश है कि सूर्यास्त तक मैं घर पहुँच जाया करूँ। क्या आप मुझ से बोलेंहीगे नहीं? अच्छा, कोई चिन्ता नहीं। मैं तो जानती ही हूँ कि आप मुझे प्यार करते हैं। अच्छा, नमस्कार।" ऐसा कह वह नीचे उतरने लगती और

उतरते हुए यह सोचा करती कि हर एक मनुष्य और प्रत्येक वस्तु मुझे प्यार करती है। यह बात सत्य भी थी। उसका विचार था कि उसी के लिये ईश्वर के राज्य की सृष्टि हुई है और इस में स्वर्ग की भाँति उसी की इच्छा की पूर्ति होगी। घर लौटते समय उस भयानक दृश्य की छाया जो उसने भक्त टामस के गिरजे में चित्रित देखी थी उसके मस्तिष्क से बिल्कुल दूर हो गई थी।

खुले हुए गिरजे के पास से होकर फ़लीची नीचे उतरी। गिरजे के द्वार पर बहुत से भिक्षुक बैठे रहते थे। उन्हें देख कर फ़लीची कहती, "ईश्वर की दया तुम पर हो।" भिक्षुक भी उसे आशीर्वाद देते थे फिर वह मठ की दीवारों के पास से हो कर नीचे उतरने लगी और उसे आश्चर्य हुआ कि क्या भीतर की वाटियाँ संसार के बहिर्भाग की आधी भी सुन्दर नहीं हो सकतीं। ओह! क्या ही अच्छा होता कि यहाँ की बहिनें घंटे घर पर चढ़ कर पूर्वीय क्षितिज की ओर देखतीं जहाँ उसका प्राचीन मित्र था और यह जानतीं कि वह अपने अनुरागियों का कितना बड़ा मित्र है। वह अपने पूर्व परिचित टेढ़े मेढ़े मार्ग से जो उसके तथा पार्वतीय बकरियों के सिवा और किसी को ज्ञात न थे उतरी। अतएव सूर्यास्त से पूर्व ही उसने पीरे जुलाहे के नमस्कार का उत्तर सिर हिला कर दिया। और कुछ देर रुक कर रानेट नामक रंगरेज से बात चीत की तथा नवयुवक स्टीफन के जुड़वें (यमज) बच्चों को

उठा कर चूमा जो कठिनता से मार्ग में चल पाते थे और जिन्हें स्टीफन की पत्नी मारगरेट हाथ पकड़ कर ले जा रही थी। वह आँगन में के कारीगरों तथा उनकी स्त्रियों से आनंदपूर्ण बातें कर के भारी किवाड़ों को खोल जीन-वाल्डो के सुखमयगृह में आ पहुँची।

फ़लीची की माता अपनी पुत्री से मिलने के लिये रसोईगृह से दौड़ती हुई निकली और फ़लीची भी अपनी सुन्दर रीति के अनुसार अपनी माता का चुम्बन लेने को दौड़ी। श्रीमती गेब्रियल को ऐसा ज्ञात हुआ मानों फ़लीचा के समान सुन्दर इस संसार में कोई है ही नहीं। इस भाँति इन्होंने केवल एक नहीं बल्कि हजारों बार सोचा था और प्रत्येक बार उन्हें फ़लीची ऐसी सुन्दर जँचती थी जैसी पहिले कभी नहीं जँची थी।

बालिका का चुस्त वस्त्र ऊनी था और उसकी ओढ़नी जो उस समय "कोप" कहलाती थी चमकीले लाल ऊन की थी। जब वह उसे अपने सिर पर बाँध लेती थी तो ठीक 'रेड राइडिंगहुड' के सदृश दिखायी पड़ती थी। जब वह शीतल वायु में दौड़ कर आती, तो उसके गालों में स्वास्थ्यमय जीवन का श्रोत बहता हुआ दृष्टिगोचर होता था। उसके कपड़ों के रंगों की विभिन्नता से उसका चेहरा और भी खिल

उठता था। उसका मुखारविन्द वास्तव में जीवनानन्द का जीता जागता चित्र था।

माता ने कहा, "मेरी प्यारी फ़लीचों, मैं सभों से तुम्हारे विषय में पूछ रही थी। देखो, आज भक्तिन विक्टोरिया की रात है और मैं लोगों को दवाइयाँ बाँट रही हूँ।"

फ़लीची ने आश्चर्यान्वित हो कर पूछा, "क्या कहा मेरी प्यारी अम्माँ, दवाई......मेरे लिये दवाई!" सचमुच उस बालिका को औषधि की वैसी ही आवश्यकता थी जैसी लावा (लार्क) पक्षी को।

"अवश्य मेरी प्यारी बच्ची," माता ने कहा, "क्या तुम्हारे जन्म से लेकर आज तक कोई ग्रीष्म ऋतु अथवा क्रिस्टमस ऐसा बीता है जिसमें मैंने तुम्हें औषधि न दी हो? यही कारण है और कुमारी मेरा तथा भक्तिन फ़लीची की कृपा है कि तुम्हारा स्वास्थ्य इतना अच्छा है। तुम्हारे पिता तथा अन्य लोगों को उनकी दवाई दे चुकी हूँ। इस नये अच्छे बोतल में मैंने लवंडर तथा रोज़मरी के सत्त को मिला कर तुम्हारे पाने की दवा तैयार की है। ये सत्त मैंने स्वयं उस समय निकाले थे जब तुम पड़ोसी लान्ड्रन के यहाँ थीं। अब इसे पी डालो, बेटो।"

फ़लीची कई बार के अनुभव से जानती थी कि तक वितर्क से कोई विशेष लाभ न होगा। निस्सन्देह वह बालिका

अपनी माता की आज्ञाओं को बिना किसी तर्क वितर्क के पालन करती थी। वह जानती थी कि औषधि कड़वी तथा बुरी है, पर उसे यह भी मालूम था कि इसके पश्चात् उसको मधु का छत्ता तथा नारंगियाँ खाने को मिलेंगी। अस्तु, वह अपनी माँ का चुम्बन लेकर अपनी ओढ़नी, पेटी आदि रखने को कोठे पर चली गई और यह गाते हुए नीचे उतरी।

"भामिन अपने भवन ते, उतरि बैठि दालान।
कुसुमित-कुसुम गुलाब से, पूरित गोद सुहाग॥
कोमल-कोमल अंगुलिन, गुम्फत केश कपाल।
गुल गुलाब मय केश ते, ताज बनायो भाल॥

नीचे उतर कर उसने पूछा, "मुझे कितनी दवा पीनी है? इतनी तो पहिले मैंने कभी नहीं पी थी।"

माता ने कहा, "मेरी प्यारी बच्ची, अब तुम बड़ी हो गई हो और लड़कपन की अवस्था को पार कर चुकी हो।" श्रीमती गोब्रियल कभी कभी अपनी बुद्धिमानी का इच्छानुसार परिचय भी दे देती थीं।

"पर अम्मा उसका स्वाद बड़ा कड़ुवा है। इतनी कड़ुवी तो यह पहिले न थी।"

"प्यारी बेटी, झट से पी जा। स्वाद बदलने के लिये यह ले नारंगी। कदाचित् इस बार औषधि कुछ अधिक तीक्ष्ण हो गई है। जिन पत्तियों की यह बनी है वे सर्वोत्तम पत्तियाँ थीं।

तब उस बालिका ने हँसते हुए मुँह बिगाड़ कर माता की आज्ञानुसार घुट घुट करके औषधि पी ली। औषधि पीते ही उसके मुँह की कान्ति जाती रही। कष्ट के मारे वह चिल्ला उठी, "माँ, माँ, जली, जली, आपने तो अपनी प्यारी बच्ची को ऐसा कष्ट पहिले कभी नहीं दिया था। अम्माँ, प्यारी अम्माँ, मैं तो भस्म हुई जाती हूँ, ओफ़ बड़ी तेज़ ज्वाला उठ रही है।" सिसकते हुए उसने अपनी माता की गोद में सिर रख दिया।

श्रीमती गेब्रियल अत्यंत भयभीत हो गई। उन्होंने तुरन्त नारंगी फाड़ कर उसे दी, पर उससे तनिक भी आराम न पहुँचा। उन्होंने तेल, बरफ़, कुएँ की तह का ठंढा पानी आदि मँगाया, पर बच्ची का कष्ट ज़रा सा भी कम न हुआ। यद्यपि अपनी शक्ति भर वह बालिका दृढ़ता से कराहने को रोकती थी, तथापि सिर से पैर तक के कम्पन को रोकना उसके लिये नितान्त असंभव था। इस कम्पन से मुख, गले तथा पेट की जलन प्रकट होती थी। श्रीमती गेब्रियल ने 'जेनी' तथा 'मेरी' को बुलाया और वे उसे पलंग पर ले गईं। उन्होंने उसको गरम कपड़ा उढ़ाया, उसके हाथ-पैर सेंके, लोहबान तथा छाल की धूनी दी, और गृहस्थी के संपूर्ण साधारण तथा असाधारण उपाय किये। एक के पश्चात् दूसरे पड़ोसी आते और पहिले के बताये हुए उपायों को काट कर अपना मत प्रगट कर जाते।

किसी किसी औषधि से एकाध क्षण के लिये शान्ति मिल जाती थी, पर वह एकाध ही क्षण के लिये। आँसू जिन्हें फ़लोची रोक न सकती थी उसके गालों पर बह कर उसकी आंतरिक मर्मवेदना प्रगट करते थे और तीन तीन चार चार मिनट पर वह भयानक कांकरी आ जाया करती थी जिसे देख कर श्रीमती गेब्रियल की नाड़ी काँप जाती थी। दोबार उसने अपने पति जानवाल्डो को बुलवाया, पर बुलाने जाने वाले बालकों में से किसी को वह न मिला। रात की अँधियारी छा गयी, पर जानवाल्डा न आया। तब श्रीमती ने अपने ऊपर वह उत्तर दायित्व लिया जिसे उसने कभी न लिया था और उस नवयुवक फ़ज़ारेस के वैद्य को बुलवाया, जिसका गिरजेघर की बगल वाली दूकान से सम्पूर्ण पड़ोसी आकर्षित हो कर आश्चर्य तथा मिथ्याविश्वास करते थे। उसने 'पाडुग्रन' से कहा," जाकर वैद्य को अभी बुला लाओ। उससे कहना कि मेरी बेटी मर रही है और ख्रीष्ट के प्रेम के निमित्त बिना एक क्षण खोये हुए आ जाय। "मर रही है" इन शब्दों ने उस घर में जहाँ पहिले ही से लोग घबराये हुए थे खलबली डाल दी। प्रत्येक को फ़लोची की बीमारी का दुःख था, पर किसी के भी ध्यान में यह बात न आई थी कि उन सभों की आँखों की ज्योति जो अभी अभी आनन्दमय तथा बलपूर्ण थी बुझ जायगी। सब से कम गेब्रियल को ऐसी कल्पना थी। पर अब उसकी औषधि-निपुणता का गर्व खर्व हो गया। वही गेब्रियल

जो प्रत्येक वैद्य पर राह चलते अपनी दवा-दक्षता की धाक जमाती थीं, आज भीगी बिल्ली बनी बैठी हैं; इतनी नम्र हो गई हैं कदाचित् उतनी नम्रता से 'निओबी' ने भी 'अपालो' को दंडवत् नहीं किया था। वह जानती थी कि जो कुछ सहायता फ्लारंस के वैद्य से मिलने को है, वह तुरन्त मिलनी चाहिए। अतएव निराशामयी शान्ति से उसने उसके पास कहला भेजा कि, "मेरी पुत्री मर रही है।"

दूसरा परिच्छेद

जीनवाल्डो

फ़्लारंस का वैद्य 'ग्यूलियो' उस बालक के साथ जा उसे बुलाने गया था एक हब्शी को लेकर जिसके पास औषधि तथा औज़ारों से भरी टोकरी थी, आया। वे द्वार के समीप पहुँचनेवाले थे कि मार्ग में धीरे-धीरे उसी ओर जाता हुआ जीनवाल्डो भी मिल गया। पिता (जीनवाल्डो) को कन्या (फ़लोची) की विपत्ति के विषय में तबतक अनभिज्ञता रही जबतक उसने वैद्य से वार्तालाप न की।

यदि आप उस तीसरे पहर को जब वह पंचायती—सभा में कोषाध्यक्ष के स्थान पर विराजमान था उससे यह कहते कि संसार में उसके नाम की प्रसिद्धि अत्यधिक होगी

क्योंकि पियेरवाल्डो उसका सम्बन्धी था, तो वह आश्चर्य प्रकट करता और आपको मूर्ख समझता। निस्सन्देह पियेरवाल्डो उसका सम्बन्धी था; और यदि कोई इन दोनों की मुखाकृति, नेत्र, दाढ़ी, हाथ अथवा नाखूनों पर दृष्टि डालता, तो वह यही समझता कि ये दोनों समीप के सम्बन्धी हैं। पर यदि कोई जीनवाल्डो से पूछता, तो वह यही कहा करता था कि "हम दोनों 'वो' नामक घाटी से आये हैं।" परन्तु वह इस प्रकार के प्रश्नों पर अप्रसन्न होता था। वह सावधानता पूर्वक पियेर के मत से अपने को अलग रखता था। जीनवाल्डो कहता, "पियेर पुरोहितों के झमेले में क्यों पड़ता है? वह वैसा ही क्यों नहीं करता जैसा मैं करता हूँ? मैं अपनी परवाह करता हूँ, संसार अपनी करे। आप भला तो जग भला। यदि पियेरवाल्डो मेरा सम्बन्धी है, तो मेरी नाईं क्यों नहीं करता?" इसी भाँति जीनवाल्डो उन्नति-पथ पर अग्रसर होता गया। वह सूत कातनेवालों तथा बुननेवालों को जो उसके पास अपना माल लाते थे भली भाँति मूंड़ता था। अपनी दूकान में वह अच्छे से अच्छे कारीगर रखता था। उसके पास निज के चालीस करघे तथा जुलाहे थे। व्यापारी कहते कि जीनवाल्डो का कपड़ा सम्पूर्ण लायन्स में अन्य बिकाऊ कपड़ों की अपेक्षा अधिक सुन्दर तथा स्वच्छ होता है।" अतः उसकी खूब उन्नति हुई। वह कहता था कि "यह अपना काम करने तथा दूसरों के काम से कोई सम्बन्ध न रखने का फल है।"

पियेरवाल्डो जिससे जीनवाल्डो इतनी घृणा करता था लायन्स का एक धनीमानी व्यापारी था। उसी पियेरवाल्डो का नाम आजकल सम्पूर्ण ईसाई-जगत् में स्मरण किया जाता है। पियेरवाल्डो ऐसे लोगों में से न था जो पूजा-गृह में इस लिए जाते हैं कि पुरोहित की आज्ञा है, बल्कि वह इसलिए जाता था कि ईश्वर की उस पर तथा उसके लोगों पर दया थी और वह इसके लिए ईश्वर को धन्यवाद देना चाहता था। अन्य लोग जहाँ प्रार्थना करते थे वहीं वह भी करता था। वह सदा पुस्तकाध्ययन का बड़ा इच्छुक रहता था। बालकपन में उसकी माता ने उसे पढ़ना-लिखना सिखाया था। संयोगवश एक दिन एक लैटिन सुसमाचार की हस्तलिखित पुस्तक उसके हाथ आ गई। उसने अवर्णनीय प्रसन्नता तथा आश्चर्य के साथ उस पुस्तक का पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। 'ल्यूगियो' के पुरोहित 'जॉन' से उसकी जान-पहचान थी। वह लैटिन भाषा का अच्छा विद्वान् पादरी था। उसने लैटिन भाषा सीखने में पियेर की बड़ी सहायता की। उन दिनों लैटिन तथा रोमांस भाषाओं में अत्यधिक अन्तर न था। पियेर के आधे ग्राहक रोमांस भाषा का प्रयोग करते थे, इसलिए उसको उस पुस्तक की भाषा समझने में बहुत कठिनाई न पड़ी। जब पिता जॉन ने देखा कि पियेरवाल्डो को ऐसी किताबें पढ़ने में बड़ा आनन्द आता है तब उसने प्रसन्नतापूर्वक गिरजे में रखी हुई अन्य हस्तलिखित पुस्तकें भी उसे दिखलाईं जिनमें "पौलूस

के पत्र'' तथा "प्रकाशित वाक्य" नामी पुस्तकें थीं। अन्त में पियेर ने सम्पूर्ण पुराने सुसमाचार पढ़ डाले और पुरोहित के साथ प्राचीन नियम भी।

कौन कह सकता था कि यह सुसमाचार-ज्ञान पियेरवाल्डो के किसी काम आता। पर एक ऐसी घटना घटी जिसका प्रभाव उसके सम्पूर्ण जीवन पर पड़ा। उस मुहल्ले के रहनेवाले व्यापारी प्रायः छोटे-छोटे भोजों में सम्मिलित हुआ करते थे और एक दूसरे को सत्कार प्रदान करते, एवं अपना धन प्रदर्शित करते थे। इन भोजों में अच्छे से अच्छे भोजन तथा प्राचीन से प्राचीन द्राक्षासव का आस्वादन किया जाता था। एक रात को "रॉबर्ट गैस्कनी" के मकान पर मित्रमंडली एकत्रित हुई। सभों ने खूब डट कर भोजन किया और स्वतंत्रतापूर्वक मद्य पी। उनमें से एक ने जो सभों का प्रिय था एक प्रचलित प्रेम-गीत गाया। मारे प्रसन्नता के श्रोतागण गिलासों पर ताल देने लगे और उस व्यक्ति से पुनः गाने को कहा। पर किसी कारणवश गायक 'वाल्टर' ने गाने से इनकार कर दिया। ज्योंही उसने कहा, "नहीं, अब मैं न गाऊँगा," त्योंही पियेरवाल्डो के प्रिय मित्र 'विलियम जाल' ने उठ कर बड़े ज़ोर से हँसते हुए कहा, "परमेश्वर की शपथ, वाल्टर, तुम्हें गाना होगा, नहीं तो मैं कभी मद्य पान न करूँगा।"

वे भयानक शब्द उनके मुँह से निकलने भी न पाये थे कि यकायक किसी आंतरिक पीड़ा के कारण उसके चेहरे का रंग

पीला पड़ गया। क्षण भर तक वह मेज़ के सहारे खड़ा रहा, तत्पश्चात् मृतक हो धराशयी हो गया।

उसी क्षण से पियेरवाल्डो के हृदय में एक नवीन मनुष्यत्व का प्रादुर्भाव हुआ। वह भयानक रात्रि, जिसमें हँसी-दिल्लगी के बाद यह दुर्घटना हुई, उसके जीवन में एक विप्लव मचाने वाली रात्रि थी। वह तथा उसके मित्र उस मृतक शरीर को गाड़ने के लिये घर ले गये। उस मृतक पुरुष की विधवा स्त्री तथा उसके अनाथ बच्चे उस समय सो रहे थे। जब शव को देखने के लिये उन्हें जगाया गया, तब घर भर में कुहराम मच गया। पियेर ने उन्हें शान्त करने का बहुत प्रयत्न किया। उसी रात्रि से वह बहुत कुछ आगा-पीछा सोचने लगा और अब सुसमाचार को वह केवल साहित्यिक आनन्द के लिये न पढ़ता था। उसने उसकी एक दूसरी प्रति अपने लिये लिखी और अपने पड़ोसियों के लिये उसका अनुवाद किया। उसे ज्ञात हुआ कि अन्य लोग भी जो उत्सुक तथा धार्मिक हैं उसी की भाँति चाहते हैं कि सम्पूर्ण लोग दृष्टान्त, गीत तथा प्रभु की अन्य बातों को पढ़ें। उसके बहुत से ग्राहक अपने नगर से आते समय पौलुस, मत्ती अथवा लूक के प्रचलित भाषा में अनुवाद उसके पास लाते थे। पियेरवाल्डो का घर तथा उसकी दूकान उन लोगों का केन्द्रस्थान बन गई जो पवित्र तथा साधारण जीवन व्यतीत करना चाहते थे। रहा उसके लिये, उसने तो उसी भयानक रात्रि में यह प्रतिज्ञा

कर ली कि "मेरे पास जो कुछ है मैं सब ग़रीबों को दे दूँगा।" लायन्स तथा समीप के रहनेवाले जिस किसी को किसी बात की आवश्यकता पड़ती थी वह पियेर के पास राय तथा सहायता लेने आता था। पियेर भी उनको सब प्रकार से सहायता देने के लिये सदैव प्रस्तुत रहता था। यदि वे भोजन के हेतु आते, तो उनको भोजन मिलता। पियेर उन सभों का सदैव के लिये एक मित्र बन गया।

उस रात को जितने व्यापारी वहाँ थे उनमें से लगभग सभों ने सहायतार्थियों की सहायता करने में पियेर का हाथ बटाया। ये लोग अपने को लायन्स के "दीन मनुष्य" कहते थे और दूसरे लोग भी उनको उसी नाम से पुकारते थे। उनका कोई नया धर्म न था। उनका धर्म वही था जो त्राण-कर्ता ने नवयुवक मछुवे 'पतरस' तथा 'मेरी मगदलीनी' से कहा था। उन पर उन शब्दों का इतना प्रभाव पड़ा था कि जो उनके पास सहायतार्थ आता उनको वे वही शब्द पढ़कर सुनाते थे। वे उन शब्दों को मनुष्य-मात्र की भाषा में उलथा करके ऐसे लोगों को देने के लिये उत्सुक थे जो ले जाकर उनका प्रचार करें।

लगभग उसी समय 'असिसी' के 'फ्रांसिस्को' का भी हृदय द्रवीभूत हो गया। उसने भी अपनी सारी सम्पत्ति ग़रीबों में बाँट दी और दीनता का धर्म प्रचार करने लगा।

क्या ही अच्छा होता यदि ये दोनों (फ्रांसिस्को और पियेरवाल्डो) एक ही साथ होते। पर ऐसा ज्ञात नहीं होता कि उनमें से किसी एक ने दूसरे का नाम भी सुना हो।

उस समय लायन्स की शासन-डोर एक धार्मिक संस्था के हाथ में थी जिसका नाम "चैप्टर आफ़ सेन्ट जॉन" था। इस संस्था का प्रधान एक आर्कबिशप (श्रेष्ठ पुरोहित) था जो वास्तव में एक राजा था और जो राजा की भाँति अपनी इच्छा के अनुसार नगर तथा गाँवों पर शासन करता था। जब उसे ज्ञात हुआ कि नगर के कुछ व्यापारी सुसमाचार में गड़बड़ी मचा रहे हैं और उसे लोगों को पढ़ कर सुना रहे हैं तब उसने तथा उसकी संस्था ने उन्हें मना किया और कहा कि "लायन्स के दीन मनुष्य" यह सब काम पुरोहित पर छोड़ दें।

यह हस्तक्षेप देख कर पियेर तथा उसके मित्रों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे रोम के "पवित्र पिता" के पास गये और उनसे अपने कार्य के विषय में कहा। वह उनके कार्य से अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उनको अपनी स्वीकृति दे दी, पर यह कहा कि "बिना आर्क बिशप" तथा उसकी संस्था की आज्ञा के अपने धर्म का प्रचार न करना। पर वे बड़े लोग इन 'दीनों' को ऐसी आज्ञा ही क्यों देने लगे। उन्होंने बिल्कुल इन्कार कर दिया।

आश्चर्य की बात है कि प्रभु यीशु की शिक्षाओं का प्रचार मना किया जाय। इस बात पर पियेरवाल्डो तथा 'लायन्स के दीन मनुष्य' पुरोहित तथा पोप से झगड़ा कर बैठे। उसने घोषित किया, "इन लोगों ने विश्वास करना त्याग दिया है और हमें चाहिये कि हम ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करें न कि मनुष्यों की।"

इस पर आर्कबिशप तथा उसके संघ ने पियेरवाल्डो एवं उसके अनुयायियों को लायन्स नगर से निकाल दिया। पियेर का घर, दूकान, पुस्तकें आदि जो कुछ मिला, सब छीन लिया गया और उसको तथा उसके सम्बन्धियों को पर्वतों की शरण लेनी पड़ी।

यही कारण था जिससे जुलाहा-पति, सुन्दर फ़लीचो का पिता, धनी जीनवाल्डो, यह पूछने पर कि पियेरवाल्डो उसका सम्बन्धी है अथवा नहीं, अप्रसन्न हो जाया करता था। वह "लायन्स के दीनों" से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखना चाहता था। वह उनमें से न तो था और न होना ही चाहता था। वह कहता, "पियेरवालडो कुशल व्यापारी था, उसके व्यापार का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल था। लायन्स का कोई भी व्यापारी उसके समान उन्नतिशील न था। लेकिन व्यापारोन्नति करने के बदले उसने पढ़ना-लिखना आरम्भ किया तथा भिक्षुकों और प्रचारकों से मेल-जोल बढ़ाया"। वह (जीनवाल्डो) बार-बार अपनी आदर्श-वार्ता कहा करता

था कि मैं अपनी संभाल करता हूँ, लोग अपनी करें। यदि पियेर अपना काम करता, तो आज उसे पर्वतों में न छिपना पड़ता।''

वह मनुष्य जो पर्वत पर धीरे-धीरे चढ़ रहा था अपने मन में समझता था कि इस संसार में हमको किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है। यदि फ्लारंस निवासी 'ग्यूलियो' बिना बोले बगल से निकल जाता तो वह व्यक्ति उसके चेहरे से परिचित होते हुए भी उसे न पहिचानता। यदि आप उससे पूछते कि वह ऐसे मनुष्यों को नमस्कार क्यों नही करता अथवा उनकी उपस्थिति से भिज्ञ क्यों नहीं होता, तो वह उत्तर देता, "मैं अपनी परवाह करता हूँ, फ्लारंस निवासी अपनी करें। मेरे और उसके दो भिन्न-भिन्न मार्ग हैं।"

पर, जैसा कहा जा चुका है, तंग गली में उस फ्लारंस निवासी वैद्य, उसके नौकर, तथा पड्रियन से जो वैद्य को बुलाने गया था जीनवालडो के घर जाते हुए भेंट हो गई। फ्लारंस निवासी को भी कुछ कम घमंड न था। वह प्रातःकाल की भांति जुलाहों की समिति के कोषाध्यक्ष के समीप से हो कर निकल जाता और उससे तनिक भी जान-पहचान न करता, पर पड्रियन ने अपने स्वामी को पहिचान लिया और तुरन्त उसे सारा दुखमय समाचार सुना दिया। पहिले तो जीनवालडो की समझ ही में कुछ न आया, पर कुछ कठिनता के

साथ इतना समझ गया कि उसकी सारी सम्पत्ति और प्रसन्नता, उसकी निज की फ़लोची, जो अभी भोजन के समय बिलकुल भली-चंगी और प्रसन्न थी, इस समय मर रही है अथवा जिसे वह अभी-अभी घर में छोड़ कर बाहर गया था वह मरती सी प्रतीत हो रही है।

यह समाचार सुन कर जीनवाल्डो धीरे-धीरे शान से न चल सका। उसने काले नौकर से टोकनी ले ली, अपनी शक्ति भर वेग से झपटा। वह बार-बार फ्लारंस निवासी से पूछता था कि "उसको क्या हो गया है?" पर वह उत्तर न दे सकता था। इस भाँति वह दल हाँफते हुए जीनवाल्डो के फाटक के नीचे पहुँचा।
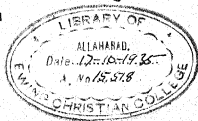
तीसरा परिच्छेद

फ्लारेंस-निवासी

वह नवयुवक वैद्य जिसे श्रीमती गेब्रियल ने सहायतार्थ बुला भेजा था फ्लारेंस का रहने-वाला था। अभी उसको लायन्स में रहते इतने दिन न हुए थे कि वह वहाँ का निवासी कहा जाता; तब भी लोग उसको फ्लारेंस-निवासी ही कह कर पुकारते थे। उस समय वैद्य-जीविका कोई अलग जीविका न थी। पादरियों ही से रोग तथा उनके उपचार-सम्बन्धी ज्ञान की आशा की जाती थी और कभी-कभी वास्तव में ये लोग इस विषय के पूर्ण ज्ञाता भी निकलते थे।

परन्तु अन्य पूर्वीय कलाओं के साथ ही साथ मनुष्य की शारीरिक बनावट तथा दुःखों का शास्त्रीय-ज्ञान भी प्रचलित मिथ्या विश्वास का स्थान ग्रहण करने लगा। यह ज्ञान प्रथम

तथा द्वितीय धार्मिक युद्ध के साथ इस देश में आया। साथ ही साथ उन तत्व-ज्ञानों को जिन्हें रसायन कहते हैं लोग बड़े ज़ोरों से सीखने लगे। इसी से कहीं-कहीं एकाध ऐसे मनुष्य भी मिल जाते थे जो पादरी अथवा नाई न होते हुए भी रोगों को भली भाँति समझते थे और लोगों को मृत्यु से बचा लेते थे। फ्लारेंस निवासी ग्यूलियो भी ऐसा ही व्यक्ति था।

वह शीघ्रता तथा गंभीरतापूर्वक चल रहा था और तनिक बात-चीत न करता था। हाँ, यदि उससे कोई प्रश्न पूछा जाता था तो एकाध क्षण के पश्चात् उत्तर दे देता था। ऐसा ज्ञात होता था कि वह किसी कल द्वारा उत्तर देता है जिसके पुरज़े ठीक करने में एकाध क्षण लग जाते हैं। उसकी चाल के समान उसका उत्तर भी गंभीर तथा निश्चयात्मक होता था। उसके प्रत्येक कार्य से आत्मविश्वास टपक रहा था। यहाँ तक कि कमरे को पार करने अथवा रोगी का सिर तकिये पर ठीक करके रखने में भी उसका आत्म-विश्वास प्रकट हो रहा था। 'मैठिल्ड' नामक एक नौकरानी थी। वह रसोई घर में गरम पानी लाने को भेजी गयी थी। उसने आकर उन लोगों से जो बाहर घबराये हुए खड़े थे कहा, "मुझे तो ऐसा मालूम होता था मानो कमरे में कोई देवदूत उपस्थित हो।"

जब वैद्य कमरे में आया, तो फ़लीची को माता की दी हुई वह कड़ुवी औषधि पिये एक घंटे से अधिक हो गया था। प्रथम घूँट की जलन शांतिदायी औषधियों से बहुत कुछ कम हो

गई थी, पर दूसरे का कष्ट प्रथम के कष्ट से सम्भवतः कुछ अधिक ही होने वाला था। फ़लीची अपने कमरे में एक सुन्दर पलंग पर जिस पर लोगों ने उसे लिटा दिया था पड़ी थी। यह कमरा उन नाना प्रकार की वस्तुओं से सजा हुआ था जिन्हें फ़लीची ने अपने भ्रमण में प्राप्त किया था। कुछ समय तक तो वह अचेत हो लेटी रहती, पर कुछ देर बाद उसका सारा शरीर भयानक रूप से ऐंठ जाता और वह उछल पड़ती। वह बार-बार करवटें बदलती और उन लोगों में से जो उसको शान्त करने का यत्न कर रहे थे और उसको ज़ोर से पकड़े हुए थे, किसी को भी न पहिचानती थी। कुछ मिनट की ऐंठन के पश्चात् वह फिर अचेत हो जाती थी, और यह दशा ऐंठन ही के समान भयानक होती थी।

ऐसी ही एक ऐंठन के पश्चात् फ़लीची की माता उसके नथनों से बहे हुए रक्त मिश्रित झाग को पोंछ रही थी कि उसी समय फ्लारेंस निवासी वैद्य ने कमरे में प्रवेश किया। वह पलंग के पास से हट गई और उसके लिये स्थान छोड़ दिया। वैद्य ने देवदूत के समान स्थिर हाथों से जिन पर मैठिल्ड आश्चर्य प्रकट कर रही थी रोगिणी के मस्तक को देखा और उसकी नाड़ी की परीक्षा की। तब उसने एक-एक करके उन सम्पूर्ण औषधियों की जो फ़लीची की माता तथा अन्य पड़ोसिनें उसे शान्त करने को, तथा क़ै कराने के लिये उसे देती थीं परीक्षा की। उनके बदले में उसने अपनी टोकनी से

निकाल कर टिंक्चर की औषधि दी। इसमें उसके हब्शी दास ने भी सहायता की। इस औषधि का प्रचार अभी हाल ही में हुआ था और उसके प्रभाव को वह भली भाँति जानता था और उस पर विश्वास करता था। इसके पश्चात् उसने उन स्त्रियों का कार्य जो फ़लीची के शरीर पर लेप कर रही थीं जारी रखा। थोड़ी ही देर में उसे मालूम हो गया कि उन स्त्रियों में से कौन सुबुद्धिवती है और बातें नहीं करती। अतएव फ़लीची की माता को छोड़ उसने सब लोगों को बाहर निकल जाने की आज्ञा दी। वह आज्ञा इतनी आग्रहपूर्ण थी कि कोई भी उसका विरोध न कर सका। वह खिड़की के पास गया और उसे खोल कर रात्रि की ठंढी वायु को भीतर आने दिया। तब वह श्रीमती गेब्रियल के पास लौट आया और राजा के समान नम्र भाव से इस कष्टमय घटना का विवरण आदि से अन्त तक पूँछा। उसी नम्र भाव से वह व्यर्थ की बातों से भरी हुई श्रीमतीजी की कहानी सुनता रहा। पर जब वह बक-बक कर रही थीं, उसके हाथ रोगिणी के मस्तक अथवा नाड़ी की परीक्षा कर रहे थे। श्रीमती गेब्रियल ने रो-रोकर सारा दास्तान सुनाना प्रारम्भ किया। जो कुछ उन्होंने कहा उसे वह ध्यान-पूर्वक सुनता रहा, उन्हें रोकने का एक बार भी प्रयत्न न किया। कभी-कभी श्रीमतीजी बड़े जोश में आ जातीं थीं; पर वह वैद्य चुपचाप सुनता ही रहा। वह जानता था कि जैसे बहुत भटकने के पश्चात् नाव बन्दर ही में आ

जाती है, उसी भाँति यह अंटशंट वृत्तान्त भी समाप्त ही होगा।

जब सम्पूर्ण विवरण समाप्त हो गया तब वैद्य ने उनसे वह पाचन-औषधि दिखलाने को कहा जिससे यह सब कष्ट उत्पन्न हुआ था। परन्तु उसी क्षण बेचारी रोगिणी को फिर ऐंठन का दौरा होने लगा।

उस समय उस वैद्य को आश्चर्यपूर्ण गम्भीरता एवं स्थिरता प्रकट हुई जिसके कारण लोग उसे देवदूत समझते थे। केवल एक ही बात से उसने रोगिणी को ऐसा अपने वश में कर लिया जैसा बहुत बातें और विनती करने से भी वे लोग नहीं कर सके थे जिन्हें वैद्य ने बाहर भेज दिया था। जब उसने पकड़ लिया, तो पकड़ लिया, फिर उस रोगिणी की क्या सामर्थ्य थी कि छटपटा सके। हब्शी नौकर ने उसके आज्ञानुसार उसे औषधि दी। उसे निगलने के लिये उसने बालिका से मुँह खोलने को कहा। बेचारी अचेत बालिका ने उसकी आज्ञा वैसे ही मान ली जैसे ईश्वर की। उसकी माता के कथनानुसार अब का दौरा आधे घंटे पूर्व वाले दौरे की अपेक्षा अधिक आसानी और जल्दी से जाता रहा। पर अब भी उसी प्रकार का रक्त-मिश्रित झाग उसके होठों तथा नथनों पर था, उसके चेहरे पर वही मुर्दनी छाई हुई थी, बल्कि उसके गाल की हड्डियाँ और निकल आईं जिन्हें देख कर श्रीमती

गेब्रियल तथा उनकी अन्य दो नौकरानियाँ पहिले से अधिक भयभीत हो गईं। जब बालिका बलहीन होकर बिस्तर पर गिर पड़ी और ज़ोर-ज़ोर से साँस लेने लगी तो वैद्य ने फिर नाड़ी की गति देखी। अब उसने पहिली बार उस विष की परीक्षा करनी प्रारम्भ की।

उसने निर्भय होकर उसे फिर एक बार चखा, मानों वह पानी अथवा पेया है। संभव है वह परीक्षा-फल से अत्यन्त भयभीत हो गया हो अथवा घबरा गया हो, पर उसका भय अथवा उसकी घबराहट उन काली-काली आँखों या अन्य भाव-भंगियों से तनिक भी प्रगट न हो पाई। उसने फिर एक बार श्रीमती गेब्रियल की ओर घूम कर पूछा, "औषधि कब निचोड़ी गई, और आपको वह कहाँ मिली?"

उत्तर पहिले ही की भाँति ऊटपटाँग था। उससे अधिक सहायता न मिल सकी। श्रीमतीजी कहने लगीं, "जब से मेरा व्याह हुआ तब से मैं प्रतिवर्ष 'सेंट जोन', 'सेंट मारगरेट', 'असम्पशग की संध्या', तथा 'हैलोवीन' आदि मुख्य त्योहारों को अपने परिवार के कल्याणार्थ नाना प्रकार की जड़ी-बूटियाँ एकत्रित करने निकल जाती हूँ।" उन्हीं जड़ी-बूटियों के विचित्र नाम वे सुनाने लगीं। यद्यपि उन जड़ी-बूटियों के नाम सुनकर उस वैद्य का कलेजा काँप गया, क्योंकि वे विषैली औषधियाँ थीं, तथापि वह उस अनभिज्ञ और लापरवाह स्त्री पर तनिक भी क्रोधित न हुआ। कम से कम उसका क्रोध प्रगट न हो पाया।

वह निश्चित रूप से जानता था कि, यदि "योहन" दिवस को पूर्णिमा हो तो उनमें से कुछ औषधियाँ अत्यन्त ही शक्तिशाली हो जाती हैं श्रीमती ने कहना जारी रखा, 'सेंट मरगरेट दिवस' को संध्या के समय मैं तीन बड़ी टोकरियों में झाड़-पात भर अपनी जोड़ी पर लाद लाई। 'सेंट असम्पशन-दिवस' को भी मैंने ऐसा ही किया। परन्तु 'हैलोवीन' के दिन मैं आडू का मुरब्बा बनाने के लिये घर ही पर रह गई। अतएव धाय 'प्रूधन' को मैंने जड़ी-बूटी लाने भेज दिया। यह दुर्घटना उसी समय हुई होगी। लेकिन दाई प्रूधन बड़ी चतुर है। यदि संसार में जड़ी-बूटियों का कोई ज्ञानी है तो धाय प्रूधन है। उसी ने पतझड़ की छाल और जड़ें इकट्ठी की थीं। इसे मैं स्वयं न कर सकी थी। रहा औषधि का तैयार करना, वह तो 'सेंट एलिज़बथ-दिवस' तथा 'सेंट सिसिल-दिवस' को हुआ था।" औषधि बने छः सप्ताह से अधिक नहीं हुए थे।" वैद्य ने पूछा "क्या आपके पास वह छाल और जड़ें कुछ बाक़ी भी बची हैं अथवा सब लग गई हैं?" श्रीमती गेब्रियल ने उत्तर दिया, "अजी नहीं, मुझे पूर्ण निश्चय है कि सब ख़र्च नहीं हुई हैं।" उन्हें लाने के लिये वह अपने कमरे में चली गई। इस समय वहाँ से हट जाने में उन्हें शोक न हुआ, क्योंकि उसका दुःखित पति वहाँ उपस्थित हो गया था। इसके पहिले किसी बहाने से चतुर वैद्य ने उसे बाहर भेज दिया था, पर इसी क्षण वह बाहर से आ गया था।

अस्तु, जब बेचारी फ़्लीची को दुबारा दौरा हुआ तो जोनवाल्डो ही ने फ्लारेंस निवासी वैद्य के आज्ञानुसार कार्य किया। उसी भयावह समय में वैद्य ने यह भी समझ लिया कि जोनवाल्डो किस भाँति का मनुष्य है। वह भी वैद्य ही के समान दृढ़ था। उसको अपनी स्थिति का पूर्ण ज्ञान था और वह आज्ञा का अक्षरशः प्रतिपालन करता था। उसकी बड़ी आकांक्षा थी कि फ़्लीची उसे सेवा करते हुए पहिचान ले, पर शोक, ऐसी आकांक्षा व्यर्थ थी। परन्तु, आशा से अथवा निराशा से, वह वैद्य की आज्ञाओं का पालन अवश्य करता था। जो कुछ वैद्य माँगता था वह तुरन्त लाकर उपस्थित कर देता था, और जहाँ वह उसे खड़ा रहने को कहता, वहीं वह खड़ा रहता था। वैद्य ही की भाँति दृढ़ हाथों से उसने चाँदी के पात्र में रखी हुई औषधि बूँद बूँद करके उँडेली, वैसी ही दृढ़ता से उसने उस तकिये को संभाला जिस पर दवा पीने के बाद बालिका गिरने को थी। अबकी बार ऐंठन का दौरा कुछ कम ज़ोर से हुआ और पहिले की अपेक्षा कम देर तक ठहरा। इस कमी का कारण यह न था कि रोग में कुछ अन्तर पड़ गया था; बल्कि इसका कारण बालिका की कमज़ोरी थी। जोनवाल्डो स्वयं जानता था कि उस बालिका का शरीर ऐसी कठिन ऐंठन को अधिक देर तक सहन न कर सकेगा।

जब रोगिणी फिर गिर पड़ी, तो फ्लारेंस निवासी ने उसकी नाड़ी तथा साँस की पुनः पूर्ववत् परीक्षा की। उसने

अपनी जेब से एक चाँदी का गोला निकाला और स्क्रू (पेंच) द्वारा उसे खोला। उसके भीतर से उसने एक रेशम की डोरी निकाली जिसका एक सिरा उसमें लगा था। डोरी के दूसरे सिरे पर एक चाँदी का हुक (काँटा) था। कमरे में जहाँ वह बैठा था, ठीक उसी के सामने उसने उस डोर को पर्दे पर लटका दिया। इस भाँति उसने कई गज़ लम्बा एक पेंडुलम बनाया और गम्भीरतापूर्वक उसे हिलाकर बालिका की चारपाई के पास लौट आया। उस पेंडुलम को गति से उसने उसके हृदय की गति की परीक्षा की, इस बीच में उसने कई बार जीनवाल्डो को पेंडुलम हिलाने की आज्ञा दी क्योंकि उसकी गति कुछ देर बाद धीमी पड़ जाती थी।

जब वे लोग यह कार्य कर रहे थे, उसी समय इस विपत्ति की जन्मदात्री श्रीमती गेब्रियल लौट कर आईं। उनका अंचल जड़ी-बूटी की पोटलियों से भरा था और प्रत्येक पोटली पर एक कागज़ लगा था जिसमें उस जड़ी के नाम आदि लिखे थे। वैद्य ने उनको एक एक करके लिया और चख-चखकर उनकी परीक्षा की। उसने उनमें से प्रत्येक का नाम लिख लिया, और जब वह नाम लिख रहा था, उस समय उसका हब्शी दास दवात लिये खड़ा था। पर मारे भय के श्रीमती के मुँह से एक भी शब्द न निकल रहा था। हाँ, जब उनसे कोई प्रश्न किया जाता था तो वे विश्वासपूर्वक उत्तर देती थीं। एक एक करके निश्चयपूर्वक उन जड़ी-बूटियों का पता लग गया जिनसे

बालिका को पिलाने के लिये दवाई बनाई गई थी और वे दो बंडल पत्तियाँ तथा श्वेत जड़ें मेज़ पर रख दी गईं।

फ्लारेंस निवासी का स्वभाव बहुत कम बोलने का था। बोलने के पूर्व मानो वह अपने वाक्-यंत्रों को ठीकठाक कर लेता था और तब बोलता था। उसने माता-पिता से कहा, "धाय प्रूधन से यहाँ पर एक बड़ी भारी भूल हुई है। उसने समझा था कि उसे स्पेन की जड़ी मिल गई, परन्तु उसने पत्तियों की ओर नहीं ध्यान दिया। कदाचित् पत्तियाँ सूख कर झड़ गई थीं। यह वह जड़ी नहीं है, बल्कि यह एक विषैली जड़ी है जिसे ग्रामवासी 'सर्प-जड़ी' कहते हैं।" फिर उसने दास से उस जड़ी की पोटली मँगवा कर उन्हें दिखाई, और कहा, "जिसको धाय प्रूधन ने दवाई की जड़ी समझा था, वह बड़ा ही भयानक विष था।"

पिता ने उत्सुकतापूर्वक पूछा, "क्या इस विष को शान्त करने की कोई दवा नहीं है ?"

वैद्य ने दयार्द्र हो उत्तर दिया, "इसको शान्त करने का वही उपाय है जो आपकी स्त्री ने किया है, अर्थात् प्रिय बालिका के शरीर से उसे बाहर निकाल देना।" तब उसने उनको धैर्य बँधाने के लिये कहा, "यह बहुत अच्छा हुआ कि बालिका घर ही पर थी और श्रीमती गेब्रियल भी वहीं रहीं। परमेश्वर ही जानते हैं कि अभी कितना विष बालिका के पेट में शेष रह गया है।

लेकिन उसने इतना पी लिया था कि उससे हम सभों की मृत्यु हो जाती। यह तो श्रीमतीजी की तत्परता थी जिसके कारण विष का अधिकतर भाग पेट से बाहर निकल गया है।

बस, इतनी ही बात वह कहना चाहता था और इससे अधिक कुछ नहीं। पिता और माता को उससे कुछ पूछते हुए भय मालूम होता था और उनका साहस न होता था कि और कुछ पूछें। आध-आध घंटे के उपरान्त वह उन दोनों में से किसी एक को पेंडुलम हिलाने की आज्ञा देता था और स्वयं बालिका की नाड़ी की परीक्षा कर परीक्षा-फल लिख लिया करता था। पर न तो जीनवाल्डो और न उनकी स्त्री का साहस पड़ता था कि उससे पूछें कि रोग घट रहा है अथवा बढ़। उसने कई बार बालिका के पैर और पेट पर लेप करवाया। कई बार रोगिणी को ऐंठन का दौरा हुआ; लेकिन ये दौरे क्रमशः कम और देर देर में होने लगे। इसका कारण थी या तो दवा की शक्ति या विष के प्रभाव में कुछ परिवर्तन हो रहा था। जीनवाल्डो की समझ में वैद्य के लिये दौरे की अपेक्षा दौरे के बाद की दशा अधिक आश्चर्य-जनक थी, परन्तु किसका साहस था कि उस कड़े विचारवाले मनुष्य से पूछे कि उसको समझ में क्या बात थी। बेचारा पिता जानता था कि वह कदाचित् उसका वहम था कि वैद्य अपनी उत्सुकता प्रगट कर रहा है, पर उससे कुछ पूछने का साहस उसे न होता था।

आधी रात को बालिका कष्ट के मारे बड़बड़ाने लगी। इस बार की बर्राहट में पहले की अपेक्षा कुछ अधिक विचार-शृंखला थी। बाई की ललक में वह कह रही थी, "इधर! इधर!! क्या तुम मेरी बात नहीं सुन रही हो, मेरी प्यारी बच्ची, मेरी प्यारी गेब्रियल। गेब्रियल, मैं तुम्हारी प्यारी सखो फ़लीची हूँ। डरो मत, डरो मत। मैंने अपनी माता, "आवर लेडी" से कहा है। समझी न। शाबाश, मेरी प्यारी बहन, शाबाश। सँभल जाओ, सँभल जाओ, देखो वह एक बड़ा शहतीर आ रहा है। ठीक, ठीक, बहुत ठीक। अब बच गईं, बच गईं।" जब वह बर्रा रही थी, उसके अंग बुरी तरह से ऐंठ रहे थे, मानो वह कोई कठिन प्रयत्न कर रही थी और उसे बड़ी मेहनत पड़ रही थी। पर वह फ्लारेंस निवासी इन बातों को तनिक भी न समझ सका।

यह पहला अवसर था जब उसने रोग के लक्षण के विषय में कुछ पूछताछ की, पर अपनी चिंता अथवा भय तनिक भी प्रगट न होने दिया। श्रीमती वालडो को इससे हर्ष हुआ कि उन्हें कुछ बातचीत करने का अवसर मिल गया। उन्होंने कहा, "गेब्रियल फ़लीची की मौसेरी बहिन, मेरी बहिन की ज्येष्ठ पुत्री है। फ़लीची गेब्रियल को बहुत प्यार करती है। वह सोचती है कि गेब्रियल किसी भय में है। हाँ, वह सोच रही है कि वह पुल टूट कर गिर रहा है और गेब्रियल नदी में है। आपको तो याद होगा कि जब वह पुल टूटा था तो

'पवित्र-माता' की कृपा से गेब्रियल और बहुत से अन्य लोग बच गये थे।" इसी समय वैद्य नम्रतापूर्वक सिर झुका कर नाड़ी-परीक्षा करने लगा और संकेत-द्वारा जीनवाल्डो को पेण्डुलम हिलाने की आज्ञा दी।

कदाचित् इस बार परीक्षा-फल पहिले की अपेक्षा अधिक संतोषजनक था, पर निश्चयपूर्वक कौन कह सकता है? क्योंकि उस अंधेरे कमरे में उपस्थित चार जनों में से किसी का साहस उस वैद्य से इसके विषय में पूछने का न होता था।

तब वैद्य ने जीनवाल्डो को बाहर जाने की आज्ञा दी। बेचारे पिता ने वहाँ रहने के लिये बड़ी विनती की, पर वज्र के समान फ्लारेंस निवासी ने उसे वहाँ नहीं रहने दिया। उसने कहा, "मेरा नौकर तो यहाँ है ही। उसके अतिरिक्त श्रीमती गेब्रियल और उनकी एक दासी पर्याप्त होगी। उनसे सारी सहायता मैं ले लूँगा। आपकी कोई विशेष आवश्यकता न पड़ेगी।" फिर उसने धीरे से अपने मन में कहा, "मैं तो चाहता हूँ कि श्रीमतीजी भी चली जायँ। पर यहाँ से हटने में उन्हें बड़ा कष्ट होगा।" अन्त में उसे उस प्रार्थी पिता पर दया आ गई और उसने प्रतिज्ञा की कि सूर्योदय से एक घंटे पूर्व मैं आपको भीतर आने दूँगा और श्रीमतीजी के स्थान पर बालिका के पलँग के पास बैठने दूँगा। यद्यपि जीनवाल्डो वहाँ

से हटना नहीं चाहता था, पर वह वैद्य की आज्ञा का उल्लंघन न कर सका। उसकी स्वार्थमयी इच्छा उस अजनबी की स्वार्थ-रहित इच्छा के सामने न टिक सकी। वास्तव में वह देव-दूत था। देवदूत ने जीनवाल्डो को आज्ञा दी और उसे पूरा कराया; अवश्यमेव यह एक आश्चर्य-कर्म था।

सूर्योदय से बहुत पहिले भग्न-हृदय पिता अपनी बारी लेने आया। जब से वह गया था, उसकी पलक तक नहीं झपकी और बीच के ये घंटे उसने बुरी तरह से काटे। अब वैद्य तथा उसने गेब्रियल को आराम करने भेज दिया, क्योंकि अपनी भूल, जागने एवं चिन्ता के कारण वह बहुत निर्बल हो गई थीं। उस रात्रि में रोगिणी की दशा अधिक नहीं सुधरी। हाँ, ऐंठन के दौरे कुछ कम हो गये थे, परन्तु दौरों के बाद का गिरना अधिक भयानक होता था। माता को भली-भाँति ज्ञात हो गया था कि बालिका इतनी शक्तिहीन हो गई है कि दौरों का सहन कर लेना और उसके पश्चात् सचेत रहना उसके लिये अत्यन्त कठिन है। यह बात ठीक भी थी। उसकी चेतना-शक्ति फिर न लौटी। हब्शी दास की काली और विचित्र आकृति से वह तनिक भी आश्चर्य-चकित न हुई और न अपनी माता के प्रतिदिन के देखे हुए चेहरे ही को वह पहिचान सकती थी। दौरों के पश्चात् वह बिलकुल निश्चेष्ट हो जाती थी, न तो देखती ही थी, न बोलती या सुनती ही थी। पर जब ऐंठन का दौरा आरम्भ हो जाता था तो वायु की ललक में वह कुछ

बरबराने लगती थी। या तो वह गिरते हुए पुल को देखती थी या किसी लँगड़ी भिखमंगी से इतनी तेज़ी से बातें करती थी कि एक शब्द समझना भी कठिन हो जाता था, अथवा अपने प्रिय पर्वत को चुम्बन भेजती और बिदा-सूचक हाथ हिलाती थी, या फ़ोरवियर पर्वत पर से वह दौड़ती हुई उतरती थी ताकि ब्यालू के समय वह अपने पिता से भेंट कर ले। बाई की इन्हीं ललकों में वैद्य उसे हँसाना चाहता था, परन्तु उसे वैद्य या किसी की भी उपस्थिति का तनिक भी ज्ञान न था। उसे तो केवल बाई ही की चीज़ें दिखाई या सुनाई पड़ती थीं। और वे चीज़ें जिस आश्चर्यमय ढँग से उसके सामने आती थीं, उसी भाँति और उतनी ही जल्दी वे लुप्त भी हो जाती थीं। बकते-बकते वह कभी-कभी उस तकिये पर गिर पड़ती थी जिसे हब्शी दास थामे तैयार रहता था और वह इतनी थकी मालूम पड़ती थी कि एक शब्द और अधिक कहना उसके लिये कठिन था।

इसी भाँति की एक बाई और उसके साथ-साथ होने वाली अस्वस्थता के पश्चात् जीनवाल्डो आया और उसकी स्त्री बाहर भेज दी गई। ऐसा प्रतीत होता था कि वह दृढ़-व्रत मनुष्य बगल वाले कमरे में दृढ़ता एकत्रित कर रहा था और उसने पक्का इरादा कर लिया था कि मैं उस नवयुवक से अवश्य पूछूँगा और अपनी पुत्री की सारी दशा, चाहे वह बुरी हो, चाहे भली, अवश्य जानूँगा। उसने आज्ञानुसार पेराडुलम

हिला दिया, पैर रखनेवाले घड़े में गरम पानी भर दिया, चारपाई पर के घड़े को बदल दिया, और दवा पिलाते समय बालिका के मुँह पर रुमाल फैला दिया। जीनवाल्डो ने देखा कि यह दवा अर्द्धरात्रि को दी जाने वाली दवा से भिन्न थी। और जब बालिका चुप होकर पड़ रही और सब शान्त हो गया, तब उसने दृढ़तापूर्वक कहा, "मैं बुरे से भी बुरा समाचार सुनने को तैयार हूँ। आप मुझे बतलाइये कि मेरी बच्ची मर गई है अथवा जीवित है। मैं मूर्ख नहीं हूँ।"

फ्लारेंस निवासी ने ऊपर सिर उठा कर एक क्षण की तैयारी के बाद कहा, "यदि मैं यह सोचता कि आप मूर्ख हैं, तो मैं आपको इस कमरे में अपनी रोगिणी के पास कदापि न रहने देता। जितना मैं जानता हूँ उतना आप भी जानते हैं। आपके आँखें हैं और आप देख सकते हैं। कष्ट का दौरा अब कम हो गया है। मेरी समझ में अंतिम दौरा पहिले के दूने समय के पश्चात् हुआ है। अब उसका दर्द भी जाता रहा है और उसकी नाड़ी की गति यद्यपि अभी अति तीव्र है तौ भी मेरे आने के समय की अपेक्षा बहुत अच्छी है। लेकिन बालिका की शक्ति क्षण प्रति क्षण घट रही है और उसकी साँस की गति भी अधिक तीव्र हो गई है। संध्या की अपेक्षा दौरा इस लिये कम हो गया है क्योंकि उसकी शक्ति अथवा उसके प्राण निर्बल पड़ गये हैं। वे दौरों की तीव्रता को सहन ही नहीं कर सकते। उसकी अवस्था शक्तिपूर्ण थी और उसका जीवन

स्वर्ग-दूत की भाँति शक्तिशाली एवं शुद्ध था। यदि ऐसा न होता तो वह अब के बहुत पहिले मर गई होती।" इतना कह कर वह शान्त पुरुष रुक गया। लेकिन उसके रुकने के ढंग से प्रतीत होता था कि वह अभी और कुछ कहना चाहता है।

इसलिए वह दुःखी पिता कुछ देर तक प्रतीक्षा करता रहा। उसकी समझ में तो यह प्रतीक्षा-काल अनन्त-काल के समान था, परन्तु इसके बाद वैद्य ने कुछ भी न कहा। अन्त में उसने अत्यन्त कष्ट से कहा, "क्या आप कुछ और नहीं बतला सकते? हम लोग क्या कर रहे हैं? ये पीने और लेप की दवाइयाँ क्या हैं? क्या ईश्वर की सृष्टि में कोई ऐसी दवा नहीं है जो इस विष की ज्वाला को वैसे ही शान्त कर दे जैसे पानी अग्नि को बुझा देता है?"

फ्लारेंस निवासी ने अपने वाक्-यन्त्रों को ठीक करते हुए पहिले की अपेक्षा अधिक गम्भीर होकर कहा, "आप इस विष को शान्त करनेवाली दवा के विषय में पूछते हैं? यदि वह दवा है, तो अभी तक मानव-बुद्धि ने उसका पता नहीं पाया है। पा भी कैसे सकती है? वही पानी जो अग्नि को बुझा देता है, जल-यात्रियों को भी डुबा देता है। कौन कह सकता है कि यह विषमय जड़ी जिसके पीते ही आपकी पुत्री ज्वाला से भस्म होने लगी, किसी मछली, जानवर या पक्षी

को जिसके लिये परमात्मा ने इसकी सृष्टि की है जीवन प्रदान नहीं कर सकती? मेरे मित्र, (मित्र शब्द का प्रयोग उस घर में पहिली बार हुआ) हम अपनी पहिले की की हुई भूलों ही के सुधारने का प्रयत्न कर सकते हैं। हमने बालिका के पेट से इस विष को निकालने का प्रयत्न किया है और अब हम समय, प्रकृति, तथा जीवन को, चाहे वे कुछ भी हों, अपना पूर्ण कार्य करने का अवसर दे रहे हैं। इससे अधिक हम कुछ नहीं कर सकते। परमपिता परमात्मा की इच्छा, तथा मन्तव्य है कि स्वास्थ्य, शक्ति, प्रसन्नता एवं अक्षय जीवन सुरक्षित रहें। इतना हम जानते हैं, और यह जानते हुए हमें परमात्मा के एक निर्दोष बच्चे की शक्ति और जीवन (जैसा इस बच्ची में है) आशा रखने का पूर्ण अधिकार है।"

पिता ने समझा कि फ्लारेंस निवासी कुछ और कहने जा रहा है। कुछ देर तक प्रतीक्षा करने के पश्चात् उसने उदास हो कर कहा, "बस! तो फिर यह लेप क्या है? यह सरसों जो उसके पेट पर रखा है क्या है? इसे मलने से क्या लाभ? उसके पैर के नीचे गरम पानी रखने का क्या काम? आपकी शीशी में रखी हुई यह दवा किस काम की है?"

अब की बार कुछ अधिक देर में अपने बोलने के कल पुर्जे को ठीक करते हुए वैद्य ने उत्तर दिया, "आह, वास्तव में ये वस्तुएँ क्या हैं? ये तो केवल इस सुन्दर कल में की विचित्रता-पूर्ण प्रकृति को वाह्य सहायता पहुँचाने का प्रयत्न मात्र हैं।

पैरों के नीचे का गरम जल उनको उस गर्मी के समीप रखता है जो प्रकृति उन्हें प्रदान करती है। मेरे गुरु ने मुझे सिखाया था कि जब हाथ और पैर गरम रहते हैं, तो हृदय की प्रत्येक धड़कन उन सभों में जीवन का रक्त प्रवाहित करती रहती है। आप समझ सकते हैं कि घड़े की गर्मी इस निर्बल हृदय को अपना कार्य करने में कितनी सहायता पहुँचा रही है। ऐसा ज्ञात होता है कि इन कपड़ों से रगड़ कर हमने अधिक सहायता पहुँचाई है। यही काम इस लेप ने भी किया है। हम भली-भाँति जानते हैं उसके शरीर में वह टिंक्चर जिसे हमने दिया है इस निर्बल जीवन को वही सहायता पहुँचाता है। कदाचित् शरीर के उस भाग में पहुँच कर जहाँ विष प्रवेश नहीं कर पाया था उसने विष-प्लावित अंगों की सहायता की है।"

इसके पश्चात् ऐसा ज्ञात हुआ मानो वैद्य का वाक्-यंत्र बिगड़ गया हो। उसने कई बार अपना मुँह खोला और तब उसके मुँह से "मैं" शब्द दो तीन बार निकला, ऐसा मालूम होता था मानो वह अपने इरादे के विषय में विचार कर रहा है। अन्त में उसने कुछ न कहने ही का इरादा पक्का कर लिया।

पिता ने कहा, परन्तु हम इतनी अच्छी तरह से हैं और मेरी बच्ची इतनी मूर्छित है। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि मैं अपना ताज़ा रक्त, अथवा अपने जीवन में से पाँच,

दस, बीस बरस उसको नहीं दे सकता ? यदि मैं दे सकता तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होती ।"

अब की बार बिना किसी हिचकिचाहट के वैद्य ने कहा, "आह, मेरे मित्र, यह न कहिये कि हम लोगों ने कुछ दिया है अथवा कुछ किया है। ईश्वर ही देता है और वही लेता है। हम लोग केवल इस निर्बल यंत्र को इस क्रम से रख सकते हैं, अथवा इस प्रकार इसे कष्ट-मुक्त कर सकते हैं अथवा इसकी कुछ सहायता कर सकते हैं ताकि ईश्वर प्रदत्त श्वास इसमें भगवान् का कार्य कर सके। बस, हम लोग इतना ही कर सकते हैं। मुझे संदेह नहीं है कि आप बच्ची के लिये अपना जीवन दे सकते हैं। यदि हो सकता तो मैं भी अपने प्रियतम भाई के लिये अपना जीवन दे देता। मेरे गुरु ने इस नश को जिसे आप चिह्नयुक्त देखते हैं खोल कर एक चाँदी के ट्यूब द्वारा मेरे स्वास्थ्यपूर्ण ताज़े रक्त को मेरे भाई के बुझते हुए जीवन की शक्तिहीन नशों में प्रवेश कराया। पर कुछ न हुआ।" बहुत देर तक चुप रहने के पश्चात् फिर उसने कहा, "उसका जीवन उसका था, और मेरा जीवन मेरा। कदाचित् परलोक में हमारा जीवन और निकटतर होगा और हम दोनों एक होकर पूर्णता प्राप्त करेंगे।" इस हृदय की बात ने मानो वैद्य की जिह्वा पर बैठे हुए जादू को छिन्न-भिन्न कर दिया। वह कुछ देर तक चुपचाप बालिका के हृदय पर हाथ रखे बैठा रहा तत्पश्चात् उठ कर चारपाई की परिक्रमा की और पीठ की ओर

से बालिका की साँस सुनी। फिर घड़े को छूकर उसकी गर्मी मालूम की। जब वह बैठने लगा, तो धीरे से कहा, "यदि मेरे गुरु जी यहाँ होते।" उसने यह अपनी पहिली इच्छा प्रकट की थी। इससे पहिली बार यह सूचना मिली कि वह, उसका हब्शी दास एवं उसका सारा सामान उस अवसर के लिये पर्याप्त नहीं था। वे सब मिल कर भी उस दशा में सब कुछ नहीं कर सकते थे जो मानव-बुद्धि करने में समर्थ थी।

इस बात को सुन कर जीनवाल्डो मारे उत्सुकता के उछल पड़ा। उसने पूछा, "आपके गुरु? वे कौन हैं? कहाँ हैं? मैं उन्हें बुलवाऊँगा, मैं स्वयं जाकर उनसे आने के लिये प्रार्थना करूँगा। क्या वे रुपये के लालची हैं? मैं उन्हें पर्याप्त धन दूँगा। यदि मेरी बच्ची मर गई, तो सोना-चाँदी लेकर मैं क्या करूँगा?"

वैद्य ने सदैव से अधिक गर्वित स्वर से कहा, "क्या इस रात्रि ने अभी आपको यह शिक्षा नहीं दी है कि जीवन न तो मोल लिया जा सकता है और न बेचा जा सकता है। क्या आप जानते हैं कि मेरे गुरुजी जो इतने चतुर, सहृदय और अनुभवी हैं इस बच्ची के पास इस समय क्यों नहीं उपस्थित हैं? इसका कारण यह है कि वे लायन्स के दीनों की धनियों की अपेक्षा अधिक चिन्ता करते थे।"

इतना कहने पर फिर उसके वाक्-यंत्र में कुछ गड़बड़ी सी हो गई, मानो इसके बाद बोलने में उसे घृणायुक्त क्रोध हो आया हो। परन्तु वह कहता गया, "आपके पुरोहितगण जो घंटा बजाते, प्रार्थना करते और बिहार के भीतर दावतें उड़ाते हैं, आपके पादरीगण और पोप महाशय यह सहन नहीं कर सकते थे कि 'लायन्स के दीन पुरुष' भरपेट भोजन पावें अथवा सुशिक्षित बनें। अतएव उन्होंने मेरे गुरु, आपके सम्बन्धी तथा और बहुत आदमियों को देश से निकाल दिया। लोग कहते हैं और मैं भी विश्वास करता हूँ कि ये लोग उनकी अपेक्षा "पवित्र पुस्तक" का अधिक ज्ञान रखते थे और उनकी अपेक्षा ग़रीबों को अधिक प्यार करते थे। इसीलिए उन्होंने इन्हें यहाँ से भगा दिया। यह निश्चय है कि ये लोग सदा भलाई करते थे, भूखों को भोजन तथा प्यासों को पानी देते थे, भूले हुओं को उनके घर का मार्ग बतलाते और रोगियों तथा बन्दियों की सेवा करते थे। ग़रीबों को प्रसन्नता का सुसमाचार सुनाते एवं दुखियों को शान्ति प्रदान करते थे। मैं 'पवित्र पुस्तक' के विषय में बहुत अधिक नहीं जानता, पर मैं सदा समझता था कि यही शुद्ध सुसमाचार है। आपके पुरोहितों के लिए यह शुद्ध समाचार नहीं था, अतएव लायन्स के महाप्रभुओं ने उन मनुष्यों को यहाँ से निर्वासित कर दिया। यही कारण है कि आज मेरे गुरुजी आपकी पुत्री के पास नहीं हैं।" यकायक वह नवयुवक वैद्य रुक गया। उसे

प्रतीत हुआ कि उसने अपने घृणा मिश्रित क्रोध को औचित्य की सीमा से परे पहुँचा दिया है। यह सुनकर जीनवाल्डो को एक प्रकार की झेंप, एक प्रकार की हार्दिक वेदना मालूम होने लगी। उसे याद आ गया कि मैंने कई बार उन निर्वासित मनुष्यों से कहा था कि "बुद्धिमानी इसी में है कि तुम अपना काम करो और संसार को अपना काम करने दो।" अपने निज के सम्बन्धी के विषय में भी उसने कई बार कहा था कि "यदि वह अपनी चिन्ता करे तो सब ठीक हो जाय।" अब जीनवाल्डो को मालूम होने लगा कि उसे एक ऐसे आदमी की आवश्यकता है जो उसकी और उसके लोगों की सँभाल करे। अब उसे प्रकट हो गया कि उसकी स्वार्थपरता केवल वैभव-पूर्ण दिनों में ही योग्य थी।

उसने पूछा, "क्या आपके गुरुजी किसी तरह भी नहीं बुलाये जा सकते ?" इसी समय उसके मस्तिष्क में यह बात स्मरण आई जो उसने समीप के नगर में रहनेवाले कुछ धनियों से सुनी थी कि "लायन्स के दीन मनुष्य" पहाड़ों में छिपे हैं।

फ्लारेंस निवासी ने बहुत विचार कर उत्तर दिया, "मैंने गुरुजी के विषय में कई वर्षों से कुछ नहीं सुना है। वे 'ब्रेवन' की कन्दराओं में उन लोगों के साथ रहते हैं जिन्होंने उन्हें कभी धोखा नहीं दिया है। ये कन्दराएँ 'कॉर निलम' और 'सेंट रैम्बर्ट' की उस ओर हैं।

पिता ने उत्सुकता से कहा, "सेंट रैम्बर्ट—यह तो समीप ही है। छः घंटों का रास्ता है। मेरे अस्तबल में ऐसे घोड़े हैं जो छः घंटे में मुझे वहाँ पहुँचा सकते हैं।"

जब पिता छः घंटे की बात कर रहा था, उस समय चतुर वैद्य ने बच्ची की ओर अधीरता भरी दृष्टि से देखा, मानो वह कह रहा था कि "छः घंटे व्यतीत होने पर यह बच्ची कहाँ रहेगी?" परन्तु उसने यह नहीं कहा। उसने कहा, "मेरे गुरुदेव कॉरनिलम में नहीं हैं। वे उसके परे ब्रीनन की घाटी में हैं। तो भी, जैसा आप कहते हैं, यह बहुत दूर नहीं है।"

पिता ने चिल्ला कर कहा, "उन्हें बुलवाइये, उन्हें बुलवाइये। यदि अणुमात्र भी आशा हो तो उन्हें बुलवाइये।" उसके चिल्लाने के ढँग तथा उसके शब्दों से जो उत्सुकता टपकती थी उससे फ्लारेंस निवासी क्या, उससे भी कठोर-हृदय व्यक्ति का हृदय द्रवित हो जाता। ऐसा प्रतीत होता था मानो बच्ची भी इन बातों को सचेत होकर सुन रही थी। उसने तकिये पर अपना सिर थोड़ा सा घुमाया और एक मृदुल मुसकराहट उसके चेहरे पर छा गई। वहाँ चिन्ता और कष्ट को छोड़ कर यह पहिला चिह्न वैद्य को दृष्टिगोचर हुआ।

वैद्य ने कहा, "यदि उनको बुलाने के लिए आप आदमी भेजें, तो मैं उनको एक पत्र लिख दूँगा"। इसके बाद उसने हब्शी के कान में कुछ कहा। दास ने सामान की टोकरी में

से एक खाल-पत्र लाकर उसे दिया जो पत्र लिखने के लिये पहिले ही से मुड़ा हुआ था।

"क्या आपके यहाँ कोई विश्वसनीय नौकर है जो पत्र लेकर उनके पास जाय? आप अपने साईस को घोड़ा तैयार करने की आज्ञा दीजिये, तबतक मैं पत्र लिखे दे रहा हूँ।"

जीनवाल्डो बिना कुछ पूछे ही कार्य करने के लिए कमरे से बाहर चला गया।

फ्लारेंस निवासी ने लिखा।

"यहाँ एक बालिका मृत्यु-शय्या पर पड़ी है क्योंकि उसने विषैली पत्तियाँ पीस कर पी ली हैं। केवल एक ही प्रकार की नहीं, प्रत्युत कई प्रकार की विषैली पत्तियाँ उसमें मिली थीं। यदि आप हमारी सहायता कर सकते हैं तो जल्द आइये।

खीष्ट के प्रेम के निमित्त।" ग्यूलियो।

पृष्ठ के बीच में नीचे की ओर उसने सँभालकर यह चिह्न बनाया जो 'माल्टा का क्रूश' कहलाता है।

बाद में उसने लिखा, "हम एक क्षण भी नहीं खो सकते। सेंट आइग्ल का प्रातः काल।"

इस बीच में जीनवाल्डो अंधकारावृत मार्गों से होकर आँगन तथा कारखाने को पार करता हुआ उस कमरे में पहुँचा जहाँ 'ह्यू प्रिन हैक' सो रहा था। यह एक बलवान् जुलाहा था जिसने कई बार अपने शिष्य जुलाहों को लेकर रँगरेज़ों पर चढ़ाई की थी और उनको मार भगाया था।

उसने किवाड़ खटखटाये और बराबर खटखटाता रहा। अन्त में उसे भीतर किसी के चलने की आहट सुनाई पड़ी और शब्द आया "कौन है?" जीनवाल्डो ने अपना नाम बतलाया। अपने मालिक का नाम सुनकर आश्चर्य-चकित जुलाहे ने तुरन्त किवाड़ खोल दिये।

जीनवाल्डो ने कहा, "प्रिनहैक मेरी पुत्री मृत्यु-शय्या पर पड़ी है। यदि कोई उसे बचा सकता है तो वह यह इटली निवासी है जिसके यहाँ तुम पाँच घंटे में पहुँच सकते हो। प्रिन हैक, यदि तुम मुझसे तनिक भी प्रेम करते हो तो यह चिट्ठी तुरन्त उसके पास ले जाओ और जितनी जल्दी हो सके उसे लिवा लाओ।"

प्रिनहैक अभी पूर्णरूप से जाग्रत भी न हुआ था। उसे यह परिश्रम का कार्य ठीक न जँचा और न अपने प्रति प्रेम की दुहाई देने में जीनवाल्डो की कुछ बुद्धिमत्ता ही प्रतीत हुई। अस्तु, प्रिनहैक ने हिचकिचाते हुए कुछ प्रश्न करना आरम्भ कर दिया।

पर उस बेचारे वृद्ध ने कहा, "खीष्ट के प्रेम के निमित्त वाद-विवाद न करो।"

बिना जाने-बूझे ही जीनवाल्डो ने इन पवित्र शब्दों का प्रयोग करके एक ऐसा राग छेड़ दिया कि वह जुलाहा कोई भी कार्य करने के लिए तुरन्त तैयार हो गया। उसने कहा, "आप से वाद-विवाद करने को यहाँ ठहरता कौन है? अपने काले घोड़े को तैयार करवाइये। घोड़ा तैयार होकर यहाँ आयेगा, उस समय तक मैं सवारी करने के लिए तैयार रहूँगा। खीष्ट के प्रेम के हेतु! कौन कहता है कि जब मैं "उसके नाम पर" बुलाया जाता हूँ, तो मैं देर करता हूँ?"

चौथा परिच्छेद

पर्वतों तक

जब काँपता हुआ बूढ़ा हाथ में लालटेन लिये हुए बार्ब-नॉयर नामक घोड़े को अस्तबल के छोटे फाटक से निकाल जुलाहे के कमरे तक पहुँचा, तो वह बूट और मेख पहन कर पूर्णतः तैयार हो द्वार की सीढ़ी पर खड़ा था। बहुत दिनों से जीनवाल्डो ने घोड़े की पीठ पर जीन और उसके मुँह में लगाम अपने हाथों नहीं लगाई थी। परन्तु लड़कपन में सीखी हुई कला उसे अब भी नहीं भूली थी। और उस अरबी घोड़े को क्या चिन्ता थी, क्योंकि इस समय उसका स्वामी स्वयं उसका साईस बना हुआ था। इसी समय फ्लारेंस-निवासी ग्यूलियो भी नीचे उतर आया और ज्यों ही प्रिनहैक घोड़े पर सवार हुआ,

ग्यूलियो ने घोड़े के अयाल (कंधे पर के बालों) पर हाथ रख दिया और उसके कान में बतला दिया कि ग्यूलियो कहाँ और कैसे मिलेगा। यद्यपि उस रात्रि में वहाँ केवल वे ही तीन मनुष्य थे, परन्तु फ्लारेंस-निवासी ने बड़ी सावधानी से धीरे-धीरे बातें कहीं। तत्पश्चात् उसने पत्री प्रिनहैक को दे दी। प्रिनहैक ने घोड़े की पीठ पर झुके हुए सब बातें सावधानता-पूर्वक सुनीं और प्रत्येक बात उसने स्वयं दुहराई ताकि किसी प्रकार की ग़लती न होने पाये।

"अब कोई चिन्ता नहीं।" इतना कह कर उसने घोड़े को एड़ लगाई और नौ दो ग्यारह हो गया।

जब वह कुछ दूर निकल गया तो जीनवाल्डो ने चिल्ला कर कहा, "सूर्यास्त होने से पूर्व उन्हें पुल के पार हो जाना चाहिए।" पर जब उसने सोचा कि कितना कम समय है तो स्वयं आश्चर्यान्वित हो गया।

"कोई भय की बात नहीं," प्रिनहैक ने प्रसन्नतापूर्वक उत्तर दिया, और रात्रि के अँधेरे में लुप्त हो गया।

कुछ ही मिनटों में वह 'लाओन' और 'रोन' के बीच वाले प्रायःद्वीप को पार कर गया जो इस समय लायन्स नगर का सब से सुन्दर स्थान है; और तुरन्त उस लम्बे-पतले पुल पर पहुँच गया जिसे सिंह-हृदय (शेर दिल) रिचर्ड ने उस पुल के स्थान पर कुछ समय के लिए बनवा दिया था जो पिछले

लाल नदी में गिर कर बह गया था। प्रिनहैक अपने मन में सोच रहा था कि, "बूढ़े ने हमें सूर्यास्त से पहिले लौटने को कहा है। वह भूल गया है कि मैं सूर्योदय से पूर्व ही रवाना हो गया हूँ।" यह सोच कर उसके कठोर चेहरे पर मुसकराहट की एक रेखा खिच गई और उसी दशा में वह पुल के फाटक के पास पहुँच गया।

बात यह थी कि सूर्योदय से पूर्व कोई उस पुल पर से पार नहीं हो सकता था, क्योंकि 'वजीर' की आज्ञा से इस नियम का पूर्ण रूप से पालन किया जाता था। परन्तु इस पुरोहिती-राज्य में लायन्स में बहुत सी ऐसी बातें होती थीं जिन पर न तो वजीर, न सेनेशलस, न कोरियर्स, न पादरी और न विशप ही संदेह करते थे।

प्रिनहैक ने चिल्ला के कहा, "फाटक पर कौन है? निकल आओ। क्या इसी ढँग से हमारे पुलों की रक्षा की जाती है?"

एक अर्द्धनिद्रित रक्षक दिखाई पड़ा।

फिर निर्भीक जुलाहे ने चिल्ला कर पूछा, "फाटक पर कौन है?"

रक्षक ने पैंतरा बदलते हुए अपने भाले को आगे करके कहा, "आपसे क्या मतलब? यदि आप एक रक्षक देखते हैं, तो वह आपके लिए पर्याप्त होना चाहिए।"

प्रिनहैक ने उससे वाद-विवाद न किया। बल्कि रक्षक ने उस धुँधले प्रकाश में देखा कि आकाश में वह माल्टा का क्रूश बना रहा है और धीरे से उसके कान में कह रहा है कि "उसके नाम पर रक्षकों के सरदार को मेरे पास भेज दो।"

यह काना-फूसी और चिह्न पर्याप्त था। रक्षक फ़ौजी ढँग में अपने भाले द्वारा सलाम करके तुरन्त वहाँ से चला गया। उसे एक भी मिनट उस शीत में प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी कि हथियारों से सुसज्जित हो रक्षकों के सरदार ने फाटक से निकल कर सलाम किया। सरदार से प्रिनहैक ने शान्ति और नम्रतापूर्वक कहा, "क्या आप मुझे पुल पर से होकर जाने देंगे? मैं ख्रीष्ट के प्रेम के निमित्त जा रहा हूँ।"

सरदार ने उत्तर दिया, "उसके नाम पर चले जाओ।" इतना कहकर वह रक्षक-गृह में घुस गया और वह फाटक प्रिनहैक के सामने ही ऊपर उठ गया, मानो किसी अलक्षित हाथ ने उसे ऊपर खींच लिया। प्रिनहैक के मार्ग में यही एक बाधा थी। उसे पार कर वह तुरन्त पुल पर पहुँच गया। उसे पार करते ही वह फाटक फिर गिर पड़ा और प्रिनहैक ने फिर अकेले ही अपना रास्ता लिया।

उसने अपने मन में कहा, "मेरा स्वामी कैसे फाटक में घुस पाता?" और फिर उसके चेहरे पर गम्भीर मुसकराहट की एक रेखा खिंच गई। "उसे अपने मित्र पोप महोदय की

आज्ञा लेनी पड़ती अथवा निर्वासित वैद्य को बुलाने के लिए हम लोगों के अनन्य मित्र सेनेशल से पास लेना पड़ता।" फिर उसने ज़ोर से कहा, "धीरे-धीरे, बार्बनॉयर ! तुम शैटोडून में नहीं हो। यह घुड़दौड़ नहीं है। दिन समाप्त होते-होते तुम्हें काफ़ी दौड़ना पड़ेगा। लेकिन इस अँधेरे में इन सड़ी नावों पर बहुत सँभाल के पैर रखना, मेरे सुन्दर घोड़े।"

इस भाँति वह उजड्ड जुलाहा उस घोड़े से, जिसे सब जुलाहे, कातनेवाले, भरनेवाले, रंगरेज़ तथा जीनवालडो की चौक के सभी काम करनेवाले लायन्स में सर्वोत्तम समझते थे और जिस पर संयोगवश सवार होने का सुअवसर उसे प्राप्त हो गया था, धीरे-धीरे बातें करने लगा। सब लोगों का उस घोड़े को सर्वोत्तम समझना ठीक भी था। वह भला पशु पहिले पहल वहाँ तब दिखाई पड़ा था, जब जीनवालडो बहुत दिनों तक मारसेल्स में रह कर उस पर चढ़ा हुआ लायन्स को आया था। उसके कारख़ाने में किसी को इस बात का पता नहीं था कि इस घोड़े के लिए उसे क्या दाम देने पड़े थे अथवा कितना कर्ज़ छोड़ देना पड़ा था। लेकिन उस सौदागर की जीवनी के विषय में जो इसका अन्तिम मालिक था अथवा बारबरी डाकू की लड़ाइयों के विषय में जिसके पास यह पहिले था बहुत सी अफ़वाहें प्रचलित थीं। कुछ भी हो, प्रिनहैक को कुछ भी नहीं मालूम था। वह इतना अवश्य जानता था कि जिस साईस को बार्ब-नॉयर की जीन पर एक भी घंटे

तक बैठने की आज्ञा मिल जाती थी वह उस सम्मान के विषय में सप्ताह भर तक डींग मारता था। और रहा उसके लिए, एक दिन पहिले वह बरगंडी के राजमुकुट की अपेक्षा बार्ब-नाँथर पर दिन भर तक सवारी करने की आज्ञा को अधिक पसन्द करता।

जब घोड़े की टाप जम-जम कर पुल पर पड़ने लगी, तो जुलाहा अपने मन में सोचने लगा, "सब जुलाहों में से मुझी को मेरे स्वामी ने इस काम के लिये क्यों चुना। यह जोनवाल्डो का सौभाग्य ही था कि मुझी को चुना, नहीं तो पुल पर के उस फाटक को कौन खुलवा सकता। प्रिनहैक, प्रिनहैक, जितने लोगों के पास तुम सोचते हो कि यह यंत्र है, कदाचित् उतने से कहीं अधिक लोगों ने इसे अपनाया है।"

सत्य बात यह थी कि जब विशप 'जॉन-फ़ाइन-हाउस', अथवा 'जॉन-फ़ाइन-हैंड्स' ने यह निश्चय कर लिया कि 'पीटरवाल्डो' एवं 'लायन्स के दीनों' को लायन्स नगर से निकाल देना चाहिये, तो उसने अपने इस नये मोल लिये हुए अधिकार को बड़ी निर्दयता से उपयुक्त किया। जिस समय आर्कविशप और चैप्टर ने लायन्स के दीनों के सार्वजनिक स्थानों में अथवा कहीं भी एकत्रित होने और धर्म पुस्तक पढ़ने के अधिकार को छीन लिया, उस समय उनको अपनी चिरसंचित मनोभिलाषा को पूर्ण करते, अर्थात् नगर और

उसके आस-पास के प्रदेशों पर राज्य करते केवल छः वर्ष हुए थे। रोम के पोप को रोम पर यह अधिकार प्राप्त होने के पूर्व लायन्स के आर्क विशप लायन्स पर स्वतंत्र राजा की भाँति राज्य करते थे। ११७३ में फ़ॉरेज़ के काउंट तथा उनके पुत्र ने अपने सारे अधिकार 'चैप्टर' की कुछ भूमि तथा ग्यारह सौ रुपये लेकर बेच डाले। बरगंडी के राज्य-कर्त्ताओं ने इस मामले में कुछ हस्तक्षेप नहीं किया। अतएव आर्क विशप बिना किसी विघ्न-बाधा के राजा बन बैठे। लायन्स नगर भी उनके अधिकार में चला गया और वहाँ का सारा राज्य-कार्य उन्हीं के नाम से होने लगा।

उनका पहिला काम यह हुआ कि धर्म-पुस्तक, दान और अच्छे कार्यों को मूर्खतापूर्ण बतला कर उनकी मनाही करवा दी। धर्म-पुस्तक का अनुवाद एवं लोगों को इकट्ठा करके धर्मोपदेश देना भी बन्द करवा दिया। उन्होंने यह नियम बना दिया कि, 'चैप्टर द्वारा निमित्त घर के सिवा न कहीं रोटी बटेगी और न ईश्वर की प्रार्थना होगी।" पियेरवाल्डो और उसके साथियों को निर्वासन का दंड देकर और उस दंड को पोप से स्वीकृत करा के उन्होंने अपनी प्रथम विजय प्राप्त की। उनसे केवल छः वर्ष पहिले जब 'फ़ाइन-हाउस' राज्य मोल ले रहे थे, पोप अलेक्ज़ैण्डर ने उस नंगे पैरों वाले साधु को अपनी छाती से लगा लिया था और उसके स्वार्थ-त्याग के जीवन की बड़ी प्रशंसा की थी।

उस सौदागर उपदेशक को इन लोगों ने लायन्स से तो निकाल दिया, पर लोगों के हृदयों से निकालना इनके वश की बात नहीं थी। बहुत से लोग ऐसे थे कि जिन्हें उन्होंने भोजन दिया था, बहुतों को अपनी सहानुभूति द्वारा शान्ति प्रदान की थी, और बहुतों को उत्साहपूर्वक शिक्षा दी थी। ये लोग इतने बड़े तो न थे कि उनके साथ निर्वासित हो सकते, पर उन्हें भूल भी न सके थे। प्रिनहैक भी इन्हीं लोगों में से एक था और स्थित गुप्त चिह्न द्वारा जानता था कि चैप्टर के सैनिकों में से बहुतों के वैसे ही विचार थे जैसे उसके थे। उनकी सहायता में उसे पूर्ण विश्वास था और इसी विश्वास के कारण वह इतनी आसानी से पुल पार हो गया।

लेकिन जीनवाल्डो ने उसे इसलिए चुना था क्योंकि वह बिजली के समान तीव्र था और किसी काम में देर न लगाता था। जीनवाल्डो ने उस नवयुवक वीर को "यीशु के प्रेम की" दुहाई देकर जगाया, इसलिए नहीं कि उसमें धार्मिक विचार आ गये हों बल्कि इस लिए कि वह निराशा से व्याकुल हो रहा था और उसी व्याकुलता में वे धार्मिक शब्द उसके मुँह से निकल गये थे। भाग्यवशात् कहे हुए उन शब्दों का उत्तर इस जुलाहे ने इस भाँति दिया कि इन "दीन मनुष्यों" के गुप्त भेद को जाननेवाला यह समझ जाता है कि यह मनुष्य उन शिक्षकों और मित्रों का बड़ा आभारी है जिन्होंने लायन्स के लिए इतना किया था और अपनी मातृभूमि से निर्वासित कर

दिये गये थे। परन्तु जोनवाल्डो उन दीक्षित लोगों में से नहीं था। लेकिन उसे इस बात में संदेह नहीं था कि प्रिनहैक को इस दूतत्व के कार्य के लिए चुन कर उसने बहुत ठीक काम किया है।

प्रिनहैक और बार्ब-नॉयर उस पुल के पार हो गये। यद्यपि दोनों इतनी तीव्र-गति से नहीं जा रहे थे जितनी वे जाना चाहते थे, पर उस अंधेरे में बरफ़ से ढकी हुई सड़क पर जितनी तेज़ी से सवार जा सकता था, उतनी में कोई कमी नहीं की गई। जब सवेरा होने लगा, तब वे एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जिसके विषय में ग्यूलियो ने कोई बात नहीं बतलाई थी। सवार ने फिर एक बार नदी को पार किया। घाटी की सड़क जिस पर आजकल लोग सरलतापूर्वक आया-जाया करते हैं उस समय एक पगडंडी के समान टूटी-फूटी थी। वह पगडंडी बाँईं ओर घूम कर ढालू पहाड़ पर चली गई थी और बिलकुल पहाड़ के किनारे पर थी। यद्यपि वह बहुत सँकड़ी थी और नदी अथवा पर्वत की चोटी से आया हुआ एक बरफ़ का टुकड़ा उसे बन्द कर दे सकता था, तो भी वह इतनी समतल और पहाड़ी सड़क की अपेक्षा इतनी सीधी थी कि प्रिनहैक ने उसी का अनुसरण करना चाहा। परन्तु वह कहाँ जायगी, इस बात का निश्चय ज्ञान सवार को नहीं था। जिस मार्ग पर वह जा रहा था उससे सौ गज दूर पर्वत के ऊँचे ढाल पर मिट्टी की बनी एक झोपड़ी थी। यद्यपि वह एक क्षण भी खोना

नहीं चाहता था और बार्ब-नॉयर भी उस ढाल पर चढ़ना नहीं चाहता था, पर तौ भी उसने झोपड़ी के द्वार पर जाकर इसके मालिक 'ओजियर डेन' को जगाने के लिए ज़ोर से किवाड़ खटखटाया, पर कोई उत्तर न मिला।

प्रिनहैक ने बराबर खटखटाया। वह जानता था कि इसमें कोई मनुष्य अवश्य रहता है और वह चाहता था कि सवेरा होने के पश्चात् कोई न सोए।

जब उसने चौथी बार खटखटाया, तब एक बुढ़िया ने पतले और तेज़ स्वर से पूछा, "कौन है?"

सवार ने हँसते हुए कहा, "अभी चारपाई पर पड़े-पड़े करवटें बदल रही हो, न? मैं लायन्स का एक दूत हूँ और जानना चाहता हूँ कि मेक्सिमिथक्स को कौन रास्ता ठीक जायगा?"

"दोनों जायँगे और दोनों ठीक हैं। आप अपना रास्ता नापिये और भले आदमियों को आधीरात के समय जगाते न फिरिये।"

प्रिनहैक ने 'दूत' शब्द का प्रयोग दुहरे अर्थ में किया था। 'दूत' का अर्थ है 'समाचार ले जानेवाला'। और यह सत्य बात थी कि वह समाचार ले जा रहा था। पर उस समय लायन्स में लोग 'दूत' का मतलब 'राजकीय दूत' अथवा

'अफ़सर' समझते थे। इस शब्द का प्रयोग उसने इस आशा से किया था कि कदाचित् वह बुढ़िया डर कर ठीक रास्ता बता दे; पर इससे काम न बना। सत्य बात तो यह थी कि बुढ़िया इस शब्द ही को न समझ पाई थी, उसके दोनों अर्थ तो दूर रहे। उसने समझा कि यह कोई शराबी है; अतएव उसको टालने के लिए उसने वैसा उत्तर दिया था।

प्रिनहैक ने एक क्षण तक प्रतीक्षा की, पर कोई दूसरा उत्तर न मिला। उसने बार-बार किवाड़ खटखटाया, पर जवाब नदारद। तब उसने अर्द्धचेतावस्था में धीरे से कहा, "खीष्ट के प्रेम के निमित्त, क्या कोई मुझे रास्ता न बतायेगा?"

अब तो इतनी शीघ्रता से उत्तर आया जितनी शीघ्रता से उसने स्वयं जीनवालडों को दिया था। झोपड़ी की झिलमिली खुली और खिड़की से अपना आधा शरीर बाहर निकालकर एक आदमी बोला, "खीष्ट के प्रेम की कौन दुहाई देता है? यदि तुम्हारे पास सारा दिन हो तो घाटी में से जाओ, लेकिन लौटना तुम्हारे अधीन न रहेगा। यदि तुम्हारे काम में शीघ्रता की आवश्यकता हो, तो पहाड़वाले रास्ते से जाओ। मेरा विश्वास करो। मैं "उसके नाम पर" बोलता हूँ।

सवार ने सिर हिला कर आकाश में माला का क्रूश बनाया और ढाल के नीचे उतर कर अपनी कष्टमयी पहाड़ी-यात्रा प्रारंभ कर दी।

जब वह घाटी के कुहरे से निकला तो यह जानने के लिये कि उस दिन ऋतु कैसी रहेगी उसने घोड़े की पीठ पर से पीछे को मुड़ कर कई बार देखा। अब सवेरा हो चला था। उसे यह सोच कर बड़ी चिन्ता हो रही थी कि यदि तूफ़ान आ गया और बरफ़ से पहाड़ी-रास्ता बन्द हो गया तो वह पुरोहित-वैद्य जिसे बुलाने को वह जा रहा था फ़लीची को कदापि जीवित नहीं देख सकेगा। प्रिनहैंक के हृदय में आशा का संचार हो रहा था, पर प्रातःकाल ही उस दिन की दशा का ज्ञान प्राप्त कर लेना उसके लिये कठिन था। कम से कम उसे यह विश्वास न होता था कि ये बादल जो इस समय सूर्य की किरणों द्वारा रक्त एवं सुनहली आभा धारण कर रहे हैं, आज के दिन की शोभा ही बढ़ाने के लिये हैं, और उनके मन में कुछ भी हानिकारक कुविचार नहीं हैं। प्रिनहैंक ने अपने मन में कहा, "यह पर्वत मुझे बतलाएगा। यदि गढ़ का फाटक पार जाने पर मुझे श्वेत पर्वत दिखाई पड़ेगा, तो मैं शर्त बद सकता हूँ कि दिन अच्छा होगा। लेकिन यदि मुझे आगे भी वैसे ही बादल दिखाई पड़ेंगे जैसे पीछे हैं, तो समझ लूँगा कि बेचारी फ़लीची के लिये कोई आशा नहीं है।"

सो वह पर्वत पर चढ़ता गया। उसने तनिक भी सुस्ती नहीं की। न तो वह स्वयं दम लेता और न घोड़े को लेने देता। जहाँ चढ़ाई कड़ी पड़ती, वहाँ उतर जाता और उस

अच्छे घोड़े की बगल में उसके अयालों से खेलता हुआ पैदल चलता था। तत्पश्चात् बिना रकाब पर लात रखे ही वह घोड़े की पीठ पर उछल बैठता। जब वे गढ़ की समतल भूमि पर पहुँचे तब उसने बार्ब-नॉयर को सरपट दौड़ा दिया।

गढ़ का वर्गाकार घंटाघर रास्ते को पूर्णतया छेंके हुए मालूम पड़ता था। पर प्रिनहैक निर्भय होकर बढ़ता गया और दीवाल के समानान्तर चल कर घूम पड़ा। वह एक ऐसे स्थान पर पहुँच गया और वहाँ से उसे ऐसा दृश्य दिखलाई पड़ा जैसा उसने पहिले कभी नहीं देखा था।

उस पर्वत की चोटी से जिस पर वह चढ़ रहा था रोन की घाटी का बड़ा सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ता था। बहुत नीचे उन खेतों के बीच में जो इस समय बर्फ़ से ढके थे टेढ़ीमेढ़ी नदी बह रही थी। रोन की नीलाई और बर्फ़ की सफ़ेदी चरागाहों से उठते हुए कुहरे की ललाई से छन-छनकर दिखाई पड़ रही थी। प्रिनहैक को कुहरे से घिरे हुए गाँव समुद्र-वेष्टित द्वीप के समान दिखाई पड़ते थे। यहाँ एक घंटाघर दृष्टिगोचर होता था तो वहाँ एक वर्गाकार गढ़ दिखाई पड़ जाता था। वह लुइस और सेंटलारेंस तथा दूरस्थ अरैएडन के गुम्बजों को देख सकता था। पर वह वहाँ इस दृश्य की सुन्दरता देखने को न ठहरा। उसने अपने घोड़े को पूर्व की ओर

बढ़ाया जहाँ सूर्योदय की रक्त और सुनहली आभा प्रस्फुटित हो रही थी। सूर्यदेव स्वयं अभी तक न निकले थे। थोड़ा ही देर में उसे वहाँ सारे दृश्यों से सुन्दर दृश्य दिखाई पड़ा। उसने देखा कि प्रखर सूर्य की किरणें निकल रही हैं और उनका मार्ग रोकने के लिये वहाँ न तो कोई बादल है और न कुहरा।

जुलाहे ने इस चिह्न को हर्षपूर्वक ग्रहण कर कहा, "धन्य हो मॉण्ट ब्लैंक, आज तुमने फ़लीची की मित्रता अच्छी निबाही है।"

इस भले आदमी को क्या मालूम था कि अभी एक दिन पहले की संध्या को उसकी नन्हीं सी स्वामिनी फ़ोरवियर्स की पहाड़ियों पर से अपने 'प्यारे प्राचीन मित्र' के लिये चुम्बन भेज रही थी।

अब सवार और बार्ब-नॉयर दोनों ने तनिक शीघ्रतापूर्वक कार्य करना प्रारंभ किया। लायन्स से चले हुए उसे दो घंटे से अधिक हो गये थे, पर अंधेरे के कारण वे केवल रेंग-रेंगकर ही चलते रहे। अब दिन के प्रकाश में उस कमी को पूरा करना था। घोड़ा और सवार दोनों शीघ्र चलने में प्रसन्न थे। और अब समय आ गया था जब गुणों की परख भली-भाँति हो सकती थी। बहुत देर तक चढ़ाई से रास्ते पर नहीं चलना पड़ा। ज्यों ही प्रकाशमान सूर्य आल्प्स तथा आल्प्स की

समानान्तर श्रेणियों की आड़ से निकला, त्यों ही फिर घाटी की उतराई प्रारम्भ हो गई। सवार ने अन्तिम बार फ़लीचो के मित्र की ओर देखा और फिर इतनी तेज़ी से घोड़े को दौड़ाया जितनी तेज़ी से वह उस उतराई में दौड़ सकता था। एक बार फिर समतल भूमि आई और उस पर वे उड़ने से लगे। देहाती बालक-बालिकाएँ जो प्रातःकाल की प्रार्थना करने जा रहे थे भयमिश्रित आश्चर्य से उस काले घोड़े की ओर जिसके नथने फूल रहे थे और जिसकी आँखें लाल हो रही थीं देखा। वे देख सकते थे कि सवार कोई वीर योद्धा नहीं है। उन्होंने बरगंडी के बहुत से योद्धाओं को धार्मिक युद्ध में भाग लेते देखा था, परन्तु उनमें न तो कोई योद्धा ही ऐसा था और न कोई घोड़ा ही। इस भाँति प्रिनहैक एक गाँव के बाद दूसरा और चर्च जानेवालों के एक झुण्ड के बाद दूसरा पार करता गया। अब उसे कार्य की सफलता में अधिक आशा होने लगी, और उसे विश्वास होने लगा कि छिपे हुए वैद्य को वह दोपहर से पहिले ही प्राप्त कर लेगा। क्या ही अच्छा होता यदि इस पर्वतीय प्रान्त में भी कोई ऐसा घोड़ा होता जो वैद्य को इसी वीर घोड़े की भाँति ले जाता।

प्रिनहैक! प्रिनहैक! पवित्र पुस्तक क्या कहती है। उस में लिखा है, "न तो तेज़ दौड़नेवाला दौड़ जीतता है और न बली विजय प्राप्त करता है," जब वह 'डेगन्यू' नामक छोटे गाँव में से

होकर भयभीत बच्चों की ओर सिर हिलाता जा रहा था जो उसका रास्ता छोड़ने के लिये झाड़ी में दबक रहे थे तब बार्ब-नॉयर के अगले पैर पिछले दिन के बहकर आये हुए कीचड़ के नीचे छिपे बरफ़ पर पड़ गये। घोड़ा फिसल गया। उसने सँभलने का प्रयत्न किया, पर फिर फिसल गया। इतने में उसके पिछले पैर भी उसी धोखेबाज बर्फ़ पर आ पड़े; सवार अभी तक रकाब में से अपने पैर भी न निकाल पाया था कि वे दोनों बगल के पत्थरों पर धड़ाम से गिर पड़े।

प्रिनहैक ने चूँ भी न किया। पर वह घोड़े के शरीर के नीचे दब गया था और बेबस था। बेचारे बार्ब-नॉयर ने अपनी शक्ति भर बहुत कुछ किया। क्या घोड़े की टाँग टूट गई? यह विचार प्रिनहैक के मस्तिष्क में पहिले आया। अभी उसे अपनी टाँगों का कुछ पता नहीं है।

तब उसने पहिले एक भयभीत बालिका को अपनी सहायता करने के लिये बुलाया, फिर उसके भाइयों को, फिर उस दरिद्र गाँव के प्रत्येक पुरुष तथा स्त्री को चिल्ला-चिल्ला कर बुलाया। इस बीच में बार्ब-नॉयर किसी तरह अपने पैरों पर खड़ा हो गया। लेकिन अब वह सवारी के काम का न था। उसके अगले पतले पैर के सुम के ऊपर की हड्डी टूट गई थी। यद्यपि प्रिनहैक और अन्य लोगों ने समझा कि घोड़े के पैर में केवल मोच आ गई है, पर घोड़े के लिये एक क़दम

उठाना भी कष्टदायी हो रहा था। केवल टूटने की जगह पर ज़रा सा छू देने ही से पता चल जाता था कि चोट गहरी है और वह कभी अच्छी होने की नहीं।

बेचारे प्रिनहैक की भी वही दशा थी। परन्तु उसने कहा, "यदि घोड़ा चले, तो मुझे एक शब्द भी नहीं कहना है"। लेकिन चाहे वह कुछ कहे अथवा न कहे, तो भी यह प्रत्यक्ष था कि उसका बायाँ कंधा जिसके बल वह गिरा था बेकाम हो गया था। सच बात यह थी कि झटके के कारण उसका हाथ जोड़ से उखड़ गया था।

देहाती मूर्ख थे, पर थे दयावान्। सभों ने अपनी शक्ति भर उसकी सहायता की और पुरोहित के आने तक उसे अपनी झोपड़ी में ठहरने को स्थान दिया। उन्हीं लोगों ने उसे यह भी बतलाया कि 'बैलग' में एक अश्व-चिकित्सक रहता है और यदि वह चाहे तो 'ओड' को भूरी घोड़ी पर भेज कर उसे यहीं बुलवा लिया जाय। परन्तु ये बातें प्रिनहैक को अच्छी नहीं लगती थीं। उसने कहा, "मेरे वीर मित्रो, मैं यह कुछ नहीं चाहता। मैं केवल इस पत्र को उस डाक्टर के पास भेजना चाहता हूँ जो 'रैम्बर्ट जीज़' के पार पर्वतों में रहता है। तीन घंटे से अधिक न लगेंगे। कौन जायगा?"

वे सब मूर्ख के समान सुनते रहे, पर किसी ने कुछ उत्तर न दिया। वे एक दूसरे की ओर प्रश्न-सूचक ढँग से देखते

थे। यदि अवसर इतना गम्भीर न होता, तो उनका इस ढँग से एक दूसरे की ओर देखना मज़ाक समझा जाता। इससे यह प्रगट होता था कि मानो वे आपस में कह रहे हैं, "क्या यह मनुष्य मूर्ख है अथवा हम लोगों को बेवक़ूफ़ समझता है।"

प्रिनहैक ने प्रसन्नतापूर्वक कहा, "मैं उसे पचास चाँदी के सिक्के दूँगा जो यह चिट्ठी 'सीसेल' निवासी 'मार्क' नामक कोयला जलानेवाले के पास ले जायगा। कौन पुरुष, अथवा सुन्दर लड़की यह काम कर सकती है?" यह कहते हुए उसने एक गेहुएँ रंग की कुमारी की ओर देखा। "पचास सिक्के मनुष्य को और साठ लड़की को।"

पर वे ऐसे चुपचाप खड़े रहे मानो वह हिब्रू भाषा बोल रहा था। न तो किसी मनुष्य ने कुछ उत्तर दिया और न किसी लड़की ने।

अन्त में प्रिनहैक ने अपनी असफलता पर (न कि अपने कष्ट पर) हताश होते हुए कहा, "क्या यहाँ कोई भी ऐसा नहीं है, जो खीष्ट के प्रेम के निमित्त एक मरती हुई बालिका के प्राण बचाने की इच्छा रखता हो"?

यह सुन कर एक लम्बे, फ़ुर्तीले पुरुष ने शुद्ध रोमान्स में उत्तर दिया, "यह आपको पहिले ही कहना चाहिए था।" अब तक यह मनुष्य उदासीनभाव से खड़ा था। उसे यह भी

पता न था कि क्या बात हो रही है। प्रिनहैक के अन्तिम शब्दों को सुन कर जैसे वह सचेत हो गया। उसने कहा, "यह आपको पहिले ही कहना चाहिए था। ऐंटॉयन, मेरो, इन छोकरों को घर ले जाओ। पॉल, पियेर, जीन तुम सब इस बेचारे घोड़े को पुरोहित के घर ले जाओ और अच्छी तरह से इसकी सेवा-सुश्रूषा करो। फ़ेलिक्स, तुम इन महाशय को "आवरलेडी" के मन्दिर का रास्ता दिखा दो।" तब उसने प्रिनहैक की ओर घूम कर कहा, "मेरे मित्र, यह बड़ा ही अच्छा घोड़ा है जिसने आपको इतनी अच्छी तरह से यहाँ तक पहुँचा दिया है। लेकिन वह अरबी घोड़ा जिस पर मैं सवार होने जा रहा हूँ वह 'ऐबट' के अस्तबल के किसी घोड़े से दस पाँच-मिनट पीछे चल कर उसे दौड़ में हरा सकता है। मैं आपकी सेवा में "उसके नाम पर" "आवरलेडी" के मन्दिर में उपस्थित होऊँगा।"

जब प्रिनहैक फ़ेलिक्स के कन्धे का सहारा लेकर दृढ़ता और कड़ाई से चलता हुआ "आवरलेडी" के मन्दिर में पहुँचा, तब उसने देखा कि उसका नया मित्र एक सुन्दर अरबी घोड़े पर चढ़ा चला आ रहा है। उस समय दक्षिणी समुद्रतट से लाये हुए ऐसे घोड़ों को दक्षिणी फ्रांस में लोग बड़े शौक से पालते थे। उसे देख कर प्रिनहैक ने अपने जेब से वह अमूल्य पत्र निकाला और उसके कान में सब कुछ कह दिया

जो फ्लारेंस-निवासी ग्यूलियो ने उसे बतलाया था। उस देहाती के हाथ में एक छोटा सा बेंत था। उसी से उसने आकाश में माल्टा क्रूश का चिह्न बनाया। बेचारे थके जुलाहे ने भी अपनी अँगुली से वैसा ही चिह्न बनाया। फिर वे दोनों अलग हो गये। एक ने तो अपनी यात्रा का रास्ता लिया और दूसरा पियेर बरोन के झोपड़े में विश्राम करने को चल दिया।

पाँचवाँ परिच्छेद

खो गया पर फिर मिल गया

'मिल' का ग्वाल्टियर उस प्रदेश की एक-एक इञ्च भूमि से भली-भाँति परिचित था। उसे कहाँ और कैसे उसे अपना घोड़ा छोड़ देना चाहिये। वह उन सब छोटे रास्तों को जानता था जिन्हें कोयला जलानेवालों को छोड़ कर और लोग नहीं जानते। उसे यह भी मालूम था कि राह में कहाँ नदी पड़ती है और उसे कैसे पार कर सकते हैं। पहाड़ियों से कतरा कर जानेवाले मार्ग भी उसे ज्ञात थे। इतनी बातें वह बेचारे प्रिनहैक से अधिक जानता था जिसे अपने अदम्य उत्साह के कारण बहुत कष्ट झेलने पड रहे थे। मिल का ग्वाल्टियर उन दोनों की अपेक्षा उन गुप्त जादू भरे इशारों पर अधिक

विश्वास रखता था। जिस समय वह अपने मार्ग का अनुसरण कर रहा था, उसे विशप के गुप्तचरों तथा सिपाहियों का बहुत कम भय था। अतएव बिना किसी हिचकिचाहट के उस झंडे को प्रदर्शित कर देता था जिसकी सेवा में वह नियुक्त था। जिस भाँति ग्रिनहैक को पुलवाले सुरक्षित फाटक से होकर आना पड़ा था, उस भाँति इसे भी एक पुल पार करना पड़ा। पर ज्यों ही उसने आकाश में माल्टा क्रूश का चिह्न बनाया, फाटक के रक्षकों ने तुरन्त ही दौड़ कर फाटक खोल दिया। और जब वह फाटक पार हो गया, तो उसने नियमानुसार नम्रतापूर्वक कहा, "यह खीष्ट के प्रेम के निमित्त है।" उत्तर में, जैसा वह जानता था, "उसके नाम पर" मिला। यद्यपि रास्ता अधिकतर पर्वतीय प्रदेशों में होकर गया था, पर तौ भो उसने एक घंटे में तीन लीग समाप्त कर लिया और रविवार के गिरजे के समय तक वह 'मेक्समिया' की सुन्दर चोटी पर पहुँच गया।

ग्वाल्टियर ने अपने चारों ओर देखा, पर कोई दिखाई न पड़ा। वह गिरजे के फाटक पर पहुँचा और घोड़े से उतर कर उसे वहीं बिना बाँधे छोड़ दिया। गिरजे में घुस कर देखा कि लोग घुटने टेक कर प्रार्थना कर रहे हैं। वह भी घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगा। जब सब लोग प्रार्थना कर चुके तो उसने देखा कि एक व्यक्ति अभी तक अपने श्वेत सिर को हाथों में छिपाये झुका है। उसने उसके पास जाकर उसके कान में

कहा, "खीष्ट के प्रेम के हेतु" वह वृद्ध व्यक्ति बिना कुछ कहे खड़ा हो गया, और दोनों एक साथ गिरजे के बाहर निकल आये। एक क्षण तक दोनों में कुछ बातचीत हुई। तत्पश्चात् उसने ग्वालिटयर से कहा, "आप उस स्थान पर जहाँ गढ़ के अस्तबल वाले फाटक से सड़क मुड़ती है उसकी प्रतीक्षा कीजिये।" इतना कह कर वह चला गया। 'मिल' का ग्वालिटयर बतलाये हुए स्थान पर अपने घोड़े को लेकर प्रतीक्षा करने लगा। उसी क्षण वह श्वेत बाल धारी ग्रामीण बैरन के अस्तबल का सर्वोत्तम घोड़ा लेकर वहाँ आ पहुँचा। ग्वालिटयर ने उसी के पास अपना घोड़ा छोड़ दिया और पूर्ववत् सलाम कर के चलता बना। उसके नवीन मित्र ने सलाम के उत्तर में कहा, "उसके नाम पर।"

मेक्समियो से कोयला जलानेवाले की कुटी तक जहाँ उसे जाना था दो घंटे का रास्ता था। परन्तु जिन रास्तों से वह जा रहा था, वे यात्रियों के लिये उपयुक्त न थे। उन्हें तो लकड़ी काटनेवालों तथा कोयला जलानेवालों ने अपने सुभीते के अनुसार चट्टानों, झाड़ियों एवं पेड़ों के बीच में से बना लिया था, और काम निकल जाने पर उन रास्तों की कोई सुध भी न लेता था। मिल के ग्वालिटयर ने भरसक अपनी बुद्धि से काम लिया और उन्हीं रास्तों को चुना जो दक्षिण-पूर्व की ओर जा रहे थे, क्योंकि अपने लक्ष्य पर पहुँचने के लिये उसे उसी ओर जाना था। कभी-कभी उसे 'रालिलग' के गढ़ की झलक मिल

जाती थी। आदेशानुसार उसने 'वियो-मॉन्ट-फ़ेरैण्ड' के गढ़ को पार कर लिया। पर अन्त में वह छोटे-छोटे चीड़ों के झुरमुट में पहुँचा जहाँ चट्टानों के ढेर के ढेर गँजे थे जिन्हें देख कर ऐसा मालूम पड़ता था मानो मनुष्य-भक्षी राक्षसों ने उन्हें खेल में इधर-उधर बिछा रखा है। भेड़ों, खच्चरों और गदहों के पद-चिह्नों में उसे कोई भी रास्ता ठीक न जँचा। वहाँ की सारी पृथ्वी पर कोयलों के बोझ से गिरे हुए पलानों के पुआल फैले थे।

घबड़ा कर मिल का क्वालिटियर वहीं ठहर गया। उसने बड़े ज़ोर से सीटी बजाई, पर कोई उत्तर न मिला। उसने घोड़े की रास उसके कंधे पर गिरा दी और घोड़ा खड़ा हो गया। वह विश्वासपूर्वक उस रास्ते पर चलने लगा जो ठीक पूर्व की ओर जा रहा था। पचास गज़ चलने पर उसे पृथ्वी पर पड़े हुए कुछ लकड़ी के चूरे मिले। उन्हें देख कर वह समझ गया कि लकड़हारों ने वहाँ कुछ लकड़ी काटी है और वे अभी बहुत दूर नहीं गये हैं। वह फिर उस भयानक एकान्त स्थान को लौट आया। (वास्तव में वह स्थान उसे बड़ा भयानक मालूम पड़ रहा था) और यह न जानते हुए कि क्या करूँ वह वहीं बैठ गया। वह जानता था कि उसकी यह अनिश्चित दशा सर्वनाश कर देगी, पर क्या करे। इतने में एक छोटे बच्चे के ज़ोर से हँसने का शब्द सुनाई पड़ा। उसे वह शब्द स्वर्ग से आया हुआ मालूम पड़ा।

तुरन्त ही वह बच्चा चुप हो गया और फिर चारों ओर सन्नाटा छा गया। पर उतना ही शब्द मिल के ग्वालिटयर के लिये पर्याप्त था। उसने उसी ओर अपना घोड़ा बढ़ाया जिधर से वह शब्द आया था। रास्ता 'देवदारु' वृक्षों की घनी झाड़ियों में होकर गया था जिस पर जाना उसने पहिले ठीक नहीं समझा था। ढालू उतराई के पश्चात् वह एक सोते के किनारे पहुँचा जहाँ एक दर्जन बच्चे भयभीत खड़े थे। वे वहाँ खेलने गये थे, पर उसके घोड़े की टाप सुन कर वे डर के मारे चुप हो गये। उन दिनों की अराजकता में किसी भी घुड़सवार को देख कर, चाहे वह वीर योद्धा हो, चाहे फ़ौजी सिपाही हो अथवा कोई लुटेरा हो, ग्रामीण बालक-बालिकाओं के चित्त में वही भयप्रद विचार उठते थे जो एक दिन ग्रिनहैक के पुकारने पर प्रातः समय उस बुढ़िया के हृदय में उठे थे। अतएव बड़े भाई और बहिनें छोटों को तबतक चुप रखने का प्रयत्न कर रही थीं जबतक वह सवार निकल न जाय।

मिल का ग्वालिटयर उस सुन्दर मंडली के पास अपना घोड़ा ले गया और हँसते हुए पूछा, "तुम लोग कौन खेल खेल रहे हो?" यह सुन कर छोटे बच्चे बड़ों के पीछे दबक गये और बड़ों ने अपने सिर नीचे कर लिये। किसी ने कुछ उत्तर न दिया।

सवार ने फिर पूछा, "तुम लोगों में से 'सीसेल' के 'मार्क' के घर का रास्ता कौन बता सकता है जहाँ 'कुलोज़' वाली सड़क आकर मिली है।

पर बालकों की स्थिति में कुछ परिवर्तन न हुआ। छोटे बड़ों के पीछे छिपे रहे और बड़े पूर्ववत् अपने सिर लटकाये रहे।

तब उस अच्छे स्वभाववाले मिलर ने कहा, "मुझे तो पूर्ण आशा थी मेरी भेंट मार्क की छोटी बेटी से हो गई है और मैं आशा करता था वह मुझे रास्ता बतला देगी। मेरे घर में चार लड़कियाँ और पाँच लड़के हैं। वे भेड़ों और घोड़ों के सब रास्ते जानते हैं। और जब पिता अएटॉनी आते हैं और कहते हैं, "कौन मेरे खच्चर पर चढ़ कर मुझे रास्ता बतायेगा?" यह सुनते ही इधर से जोन दौड़ता है, उधर से गरट्रड दौड़ती है, और पेरट्वायन और मेरी, सभी दौड़ पड़ते हैं और सभी रास्ता दिखाने को तत्पर हो जाते हैं।

मिलर जानता था कि बच्चों का हृदय कैसे स्पर्श किया जाता है। परन्तु इन बच्चों को अजनबियों के सामने बिलकुल शान्त रहने की ख़ास शिक्षा मिली थी। उन बच्चों में जो बड़े थे वे जानते थे कि कई बार उन्हीं की बुद्धिमत्ता से लोगों के प्राण बच गये थे। उनके चेहरों पर इतना भोलापन था कि मानों वे कुछ जानते ही नहीं। यद्यपि मिल के ग्वालिटयर ने बहुत कुछ बहकाने का प्रयत्न किया, पर इसमें उसे धोखा ही हुआ।

अन्त में उसने समझा कि वे बच्चे उसकी भाषा ही नहीं समझ रहे हैं।

तब अपनी जेब से चाँदी की वह सीटी निकाल कर, (जिसे उसने अभी बजाया था) वह घोड़े से कूद पड़ा और उसे जहाँ उसकी इच्छा हुई जाने दिया। वह सब से छोटे बच्चे की बग़ल में ज़मीन पर बैठ गया और उसे प्रसन्न करने के लिये सीटी बजाने लगा। इसके बाद उसने उसे अपनी गोद में उठा लिया और एक खिलौना देना चाहा। वह बच्चा बड़े बच्चों की त्योरियों से डर रहा था, पर वह खिलौना उसे इतना ललचा रहा था कि अन्त में उसने उस खिलौने को ले ही लिया। और जब फूँकने पर उसमें से तेज़ आवाज़ निकली तो वह हँसने लगा और उसका भय भी कम हो गया। ऐसा प्रतीत होने लगा कि अब वह रास्ता बता देगा। तब उसने डाँफ़िन की पर्वतीय बोली में, जिसमें वह वैसो ही सरलता से बोल सकता था जैसी प्राँवेंकल भाषा में जिसमें उसने अब तक बात-चीत की थी, कहा "मैं कोयले के सौदागर सीसेल-निवासी मार्क से मिलना चाहता हूँ। मार्क के कई भली लड़कियाँ हैं। क्या तुम उनको नहीं जानते ? मैं उनके लिये चमकते हुए चाँदी के सिक्के लाया हूँ।"

ग्वालिटयर, तुम बड़े चतुर चिड़ीमार और चालाक मछली पकड़नेवाले हो। पर ये मछलियाँ तुम्हारे प्रत्येक चारे पर मुँह न मारेंगी। तुम्हारी गोद में मार्क ही का छोटा बच्चा बैठा है।

और वह लम्बी बालिका जिसके गुंथे बालों में लाल फ़ीता लगा है उसी की एक पुत्री है। परन्तु वे भली भाँति जानते हैं कि जबतक उन्हें यह न मालूम हो जाय कि पूछनेवाला उनका मित्र है, वे किसी को रास्ता न बताएँगे। और उनकी झँपी हुई आँखों से किसी को यह पता नहीं चल सकता कि वे रास्ता जानते हैं।

मिलर को यह आभासित हुआ कि ये बड़े बच्चे, जो बुद्धिमान् हैं, केवल रास्तों ही की रक्षा के लिये नियुक्त नहीं किये गये हैं, प्रत्युत कुछ गुप्त भेदों का भी भार उन्हीं पर है। अतएव उसने अब भी पर्वतीय भाषा में बोलते हुए कहा, "मेरी यात्रा में जीवन और मृत्यु का प्रश्न है। और यदि मैं सीसेल के मार्क का मकान आज दोपहर तक न पा सकूँगा, तो रात में एक प्यारी बच्ची मर जायगी। क्या खीष्ट के प्रेम के निमित्त कोई भी मार्क का घर मुझे न दिखा देगा?" ये वाक्य उसने किसी को संबोधित करके नहीं कहे थे, बल्कि यों ही हवा में कह डाले थे।

भूरे बालोंवाली लड़की, वह मूर्ख लड़का, और दूसरा लड़का जिसके हाथ में एक छिला हुआ डंडा और दूसरी लम्बी लड़की जो अपनी गोद में एक बच्चा लिए थी, सब के सब इस मंत्र को सुनते ही चौंक पड़े। उन चारों में से पहिली प्रॉवेंसल भाषा में बोली, "मैं प्रसन्नतापूर्वक आपको अपने पिता के घर

ले चलूँगो। अब मैं समझ गई कि आप "उसके नाम पर" आये हैं।

बस एक मिनट में वह अपने घोड़े पर जा बैठा। उसके आगे बालिका बैठ गई। झाड़ियों, झुरमुटों, और चट्टानों, और चट्टान आदिकों से होकर जब वे कुछ कम एक मील चल चुके, तब बालिका ने फिर प्रॉवेंलल भाषा में कहा, "वह मेरे पिता का गोदाम है।" जब बालिका ने जंगल की उस थोड़ी सी स्वच्छ भूमि की दूसरी ओर वह गोदाम दिखलाया, तब उसने लकड़ी के शहतीरों और खुरदरे पत्थरों से बनी एक झोपड़ी देखी। उसकी छत के एक बड़े छिद्र से, जिसको चिमनी कहना ठीक नहीं, खूब धुआँ निकल रहा था। यदि धुएँ का यह चिह्न भी दिखाई न पड़ता, तो भी घर में लोग इतने ज़ोर से बात-चीत कर रहे थे कि उनके शब्दों ही से यात्री जान लेता कि कोयला जलानेवाले की झोपड़ी उजाड़ खंड नहीं है।

छठा परिच्छेद

कोयला जलानेवाला

नीचे की घाटी में लोहकारी का विज्ञान इतना समुन्नत हो चुका था कि वहाँ के लोहारों ने पर्वतीय ग्रामीणों को बढ़िया लकड़ी का कोयला तैयार करना सिखा कर उन्हें चीड़ आदि लकड़ियों का कोयला जलाने में नियुक्त कर दिया जो बढ़िया फौलाद बनाने के काम आता है। बहुत से लोग जो शिकार करके तथा भेड़ें पाल के अपना जीवन व्यतीत करते थे अपने नमक, कीलें, तीरों के सिरे और पहाड़ में पके हुए बर्तनों की अपेक्षा अच्छे बर्तन प्राप्त करने के लिये उन्होंने सहर्ष यह काम स्वीकार कर लिया। जब उन असभ्य देहातियों को और कामों की अपेक्षा यह व्यापार लाभदायक मालूम हुआ

तब उन्होंने और सब काम छोड़ कर इसी को ग्रहण कर लिया और वह झोपड़ा जहाँ सीसेल का मार्क सभापतित्व कर रहा था कई पीढ़ियों से उन कोयला जलानेवालों का अड्डा बन गया। वे सब कोयला तैयार कर के खच्चरों पर लादने के लिये बोरों में भर-भर कर यहीं इकट्ठा करते थे।

झोपड़े के बीचों-बीच एक खुली जगह में दस-बारह लकड़ी के कुन्दे जल रहे थे जिनके चारों ओर वे प्रसन्नचित्त मनुष्य इकट्ठे हुए थे। उस वर्गाकार छिद्र से इसी का धुआँ निकल रहा था जिस पर यात्री की दृष्टि पहलेपहल पड़ी थी। उन आलसी मनुष्यों में से कोई बैठा था, कोई लेटा था और कोई किसी आसन में पड़ा था, और सब लोग उस जाड़े के दिन को हर्षपूर्वक काट रहे थे।

उसमें से एक कह रहा था, "यदि तुम लैम्बर्ट को नरक की इस ओर देखना तो मुझे झूठा कहना। जब मैंने उसे नई पेटी पहने हुए उस नई खाड़ी के पार जाते देखा, तो मैंने कहा, 'ईश्वर तुम्हारे साथ हो, लैम्बर्ट! अब हमसे तुमसे कदाचित् फिर भेंट न होगी।' मैंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि मैं जानता था।"

जिससे वह बातें कर रहा था, उसने हठपूर्वक पूछा, "लेकिन तुम क्यों जानते हो और कैसे जानते हो?" प्रश्न करनेवाला व्यक्ति एक धनुष बना रहा था और छिलके जलते

हुए कोयलों पर गिराता जाता था। उसने फिर कहा, "तुम कैसे जानते हो? मैंने क्लोन के सरायवाले से बात-चीत की और सब साईसों एवं स्वयं सिरैएड से इसके विषय में पूछा। उन सभों ने कहा कि तुर्क लोग हमारे मनुष्यों के सामने लड़ाई में नहीं ठहर सकते। उनका कहना है कि ईस्टर के पहिले यरूशलम में एक नया राजा होगा। और दूसरे क्रिसमस के बहुत पहिले विशप लायन्स में, राजा फिलिप पेरिस में, और राजा रिचर्ड इंग्लैंएड में लौट आएँगे। उसी भाँति काउएट अपने गढ़ में और लैम्बर्ट, रेमएड, फॉर्नी आदि नवयुक अपनी टोपियों में सीप लगाये पर्याप्त धन प्राप्त कर यहाँ वापस आ जायँगे।"

दूसरे व्यक्ति ने तनिक क्रोधित होकर कहा, "सिरैएड बड़ा जानकार हो गया है। क्या उसने तुर्कों से बातें की हैं? क्या उनके प्रसिद्ध राजा सलादीन ने उससे कहा है कि पहिली ही लड़ाई में हम लोग भाग जायँगे? क्या उसने कभी यरुशलम देखा भी है जो सोचता है कि एक ही दिन में वहाँ पहुँच जायँगे। रही क्लोन के सरायवाले की बात, वह तो मूर्ख है। जब मैं पिछली बार वहाँ गया था तो उसने इस बात को प्रमाणित करने का यत्न किया कि मुझे धनुष पहचानने की शक्ति नहीं है। मेरी इच्छा है कि उसी के खाने से उसका गला घुट जाता। और यदि उसके साईस फ्राँसीसी घोड़ों की अपेक्षा सलादीन के मनुष्यों के विषय में अधिक नहीं जानते, तो उनकी बात-चीत ध्यान देने योग्य नहीं है। मैं तुम से सच

कहता हूँ कि वे सब के सब मूर्खता का काम करने गये हैं और अब फिर तुम लैम्बर्ट का चेहरा न देख सकोगे।"

एक छोटा लँगड़ा आदमी जो आग की दूसरी ओर बैठा था और जिसे ये दोनों कठिनता से देख सकते थे बोल उठा, "क्या इन दागले कुत्तों से, इन अविश्वासी मनुष्यों और उनके पुत्रों से अपने प्रभु, उनकी माता स्वामिनी मेरी और अगणित पवित्र जनों की क़ब्रों की रक्षा करना मूर्खता का काम है? क्या उस दिन उस पिता के मुँह से नहीं सुना कि किस निर्दयता से उन्होंने बेचारी पिकार्डी की मेरी की जो तीर्थ-यात्रा कर रही थी जीतेजी खाल खिंचवा ली? क्या तुमने नहीं सुना कि किस तरह उन्होंने सेंट जोज़फ की क़ब्र में आग लगा कर उसके स्तम्भ उड़ा दिये और पत्थर पर धूल गाँज दी। वास्तव में उन लोगों के लिये जो घर पर बैठे-बैठे चैन से समय काट रहे हैं यह मूर्खता का कार्य है। अगर चलने के लिये ईश्वर ने मुझे दो पैर दिये होते, अथवा मैं खच्चर पर बैठ सकता, तो यहाँ बैठा-बैठा उन भले आदमियों की निन्दा न करता।"

दूसरे ने उत्तर दिया, "लँगड़े पियेर, मैंने पहिले भी तुम्हें ये बातें कहते हुए सुना है, अथवा ऐसी बातें जिनका मतलब यही होता है, और यदि तुम्हारी इच्छा हो, तो सात बार अथवा जैसा धर्म पुस्तक में लिखा है सतहत्तर बार और कह लेना, और मैं तुम ऐसे भले आदमी से उसके लिये झगड़ा न

करूँगा। लेकिन दो बातें ऐसी हैं जिन्हें तुम जानते हो और मैं भी जानता हूँ। पहिली बात यह है कि ऐम्ब्रोज़ को, स्वामिनी मेरी और सेंट जोज़फ़ की क़ब्र की उतनी ही परवाह थी जितनी पर्वत पर होते हुए तमाशे की और अपने आलस्य के कारण वह उनको नाश से बचाने के लिये एक पग भी न जा सकता था। लेकिन वह गया, क्योंकि दूसरे लोगों को जाते देखा। वहाँ जा कर बिना कुछ काम किये हुए अपना पेट भरना और दूसरों की स्त्रियों के बनाये हुए लिनेन के गद्दों पर सोना ही उसका ध्येय था। उसने सोचा था कि दूसरों के कमाये हुए पैसों से बिना परिश्रम किये धनी होकर लौटेगा और तुम और हम ऐसे विश्वासी मनुष्यों पर अपनी टोपी में सीप लगा कर रोब गँठेगा। रही उन मनुष्यों से लड़ाई करने की बात जो कुत्ते हैं और जिनके पुत्र कुत्ते हैं, जिनकी प्रार्थनाएँ झूठी हैं और जिनके चरित्र भ्रष्ट हैं, तो उसी लिये हम लायन्स के विशप और चैप्टर के साथ क्यों न युद्ध करें जिसलिये वे राजा सलादीन और उसके अमीरों से लड़ने गये हैं ?

विशप और चैप्टर के विषय में कही हुई इस वीरता की बात का स्वागत कुछ बैठे हुए आलसियों ने ज़ोर से हँस कर किया। परन्तु दूसरे लोग चौंक पड़े, क्रोध के मारे नहीं, बल्कि भय के मारे। एक ने कहा, "तनिक सँभाल के बातें किया करो, मैथ्यू, नहीं तो हम लोग बड़ी विपत्ति में फँस जायँगे। इस दल में इतने षड्यंत्र रचे जा रहे हैं और विप्लव की इतनी बातें

हो रही हैं कि उन्हीं के कारण सारा गाँव दूतों को दे दिया जा सकता है और हम लोग बिना जाने ही अपने बाल-बच्चों के साथ भीख माँगते दिखाई पड़ेंगे।"

इस बात का उत्तर स्वयं सीसेल के मार्क ने प्रथम बार बोलते हुए दिया, "जीन फ़िशर मैन, यदि तुम्हें ये बातें अच्छी नहीं लगतीं, तो तुम्हें यहाँ रहने की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि तुम्हें राजदूत अथवा वज़ीर से कोई गप्प लड़ानी हो तो तुम उनके पास जाकर लड़ा सकते हो। इससे तुम्हारा भय भी दूर हो जायगा। हम इस झोंपड़े के मालिक हैं और यह हमारा गढ़ है। जब हमें अपने किसी अभ्यागत से भय की आशंका होती है, तब हम उसे अपने घर से निकाल देते हैं। जबतक मुझे उनके विषय में आशंका नहीं होती, तबतक वे एक दूसरे की बात में बाधा नहीं डाल सकते। रहा मेरे लिये, मैं भी काली आँखोंवाले 'मैथ' के विचारों का हूँ और उसके स्वास्थ्य के लिये मद्यपान करता हूँ। जब बर्तन स्वयं श्वेत हो जाय, तब उसे केतली को काली होने के लिये डाँटना चाहिए। लेकिन जब यहाँ के पुरोहित और ऐबट, उन आदमियों को जो ग़रीबों को भोजन देते हैं, उनके घर से निर्वासित कर देते हैं और उनके घरों को छीन कर तथा उनके सामानों को चुरा कर आनन्दमय जीवन व्यतीत करते हैं, तब ऐसे लोग चाहे भले ही राजा और विशप के साथ उस 'पवित्र-भूमि' को चले जाँय, लेकिन हमें भय है आया वे यहाँ की अपेक्षा किसी अच्छे धर्म

का वहाँ प्रचार करेंगे। मैं तो यह चाहता हूँ कि यहाँ के मनुष्य पहिले अपने जीवन को साधुमय बना लें और तब तुर्कों को उनके बुरे जीवन के लिये कोड़े मारने जायँ।" इतना कह कर उस बलवान् कोयलेवाले ने पास के अरवे से एक शराब से भरा हुआ बर्तन उतारा जिसमें से वह पी रहा था और धनुष बनानेवाले मैथ्यू को बुला कर उसे दे दिया और कहा, "दूसरों को भी बारी-बारी दे देना।"

ज्यों ही उसने यह काम समाप्त किया त्यों ही उसके द्वार पर ग्वालियर के कोड़े की सटकार सुनाई पड़ी और तुरन्त ही कोयलेवाले ने नवागंतुक को भीतर आने को आज्ञा दे दी। उसे अपनी पुत्री को उस अजनबी के साथ देख कर कुछ आश्चर्य हुआ। पर बालिका के चेहरे से ज्ञात होता था कि उसने अपने कर्तव्य ही का पालन किया है। वह अपने पिता को सलाम कर के तुरन्त झाड़ियों में चली गई। कोयलेवाले ने ग्वालियर को आग के पास बैठाया। पर और सब लोग एकदम शान्त थे जिससे कोई भी यह न ताड़ सकता था कि अभी एक क्षण पूर्व वे बड़ी उत्सुकतापूर्वक बातें कर रहे थे।

दूत ने कहा, "क्या आप ही कोयले का व्यापार करनेवाले मार्क हैं? मुझ से कहा गया है कि आप मुझे ल्यूगियो निवासी पिता जीन के घर का मार्ग बतला देंगे।"

वह बलिष्ठ कोयलेवाला, जो अभी बड़ी तेज़ी के साथ दूसरों की वाक्-स्वतंत्रता के अधिकार के विषय में लम्बे-चौड़े व्याख्यान झाड़ रहा था, उत्तर में केवल एक शब्द 'एह' बोला।

मैं पिता जीन से मिलने के लिये अपनी शक्ति भर घोड़ा दौड़ाये आ रहा हूँ। मुझे बतलाया गया है कि वे इसी प्रदेश में कहीं रहते हैं। आज लायन्स में उनकी बहुत बड़ी आवश्यकता है। मैं उनके लिये एक समाचार लाया हूँ। यद्यपि इसके उत्तर में कोयलेवाले को कुछ कहना चाहिये था, परन्तु फिर उसने वही मूर्खतापूर्ण एक शब्द का उत्तर 'एह ?' दिया। ग्वाल्टियर को आश्चर्य हुआ। यद्यपि उसने इस आदमी को कभी देखा नहीं था, परन्तु उसे मूर्ख भी नहीं समझा था। वह समझता था कि जो मनुष्य घाटी में इतना बड़ा व्यापार कर रहा है, प्रोवेंसल भाषा का थोड़ा ज्ञान उसे अवश्य होगा। अस्तु, उसने उस पहाड़ी भाषा में बोल कर अपने आने का कारण और विस्तृत रूप से समझाया जिसमें उसने बच्चों से बात-चोत की थी।

पर उत्तर में उसे वही मूर्खतापूर्ण 'एह ?' मिला। तब उस मूर्ख ने दूसरों की ओर देखते हुए उसी भाषा में पूछा, "लड़को सुन रहे हो कि ये महाशय क्या कहते हैं ? क्या तुम में से कोई ल्यूगियो निवासी पिता जीन के विषय में जानता है जिनसे मिलने के लिये ये आये हैं ?"

वे एक दूसरे की ओर देखने लगे मानो सब उस भाषा को उसी भाँति नहीं समझ रहे थे जैसे उसने मिलर की प्रोवेंसल भाषा नहीं समझी थी।

ग्वाल्टियर ने चारों ओर देख कर यह जानना चाहा आया किसी के चेहरे पर तनिक भी बुद्धिमत्ता प्रदर्शित हो रही है अथवा नहीं। उसने चाँदी के छः सिक्के निकाल कर उन्हें हवा में उछाला और फिर पकड़ लिया। उसी भाषा में बोलते हुए उसने कहा, "ये सिक्के मैं उस भले आदमी को दे दूँगा जो पिता के पास मेरे लिये जायगा और इतने ही सिक्के मैं उसे दूँगा जो उन्हें यहाँ लिवा लायेगा।" लेकिन वे सब के सब पूर्ववत् मूर्खतापूर्ण शान्ति से चुप-चाप बैठे रहे। किसी के चेहरे पर उन सिक्कों को देख कर कोई भाव अथवा उत्सुकता न प्रदर्शित हुई। मिल के ग्वाल्टियर को ऐसा ज्ञात होने लगा मानो अन्तिम समय में उसका सारा परिश्रम असफल हो जायगा। उसने कहा, "वे कद के लम्बे हैं। उनकी खोपड़ी घुटी है और उसके चारों ओर बर्फ के समान श्वेत बाल हैं। चलते समय वे ज़रा झुक जाते हैं, क्योंकि उनका कद बहुत लम्बा है। चलने में वे अपना दाहिना पैर सँभाल कर रखते हैं।"

फिर सीसेल के मार्क ने वही 'एह?' उत्तर दिया। ग्वाल्टियर को अपने ऊपर इस बात पर क्रोध आया कि उसने

लड़की को क्यों न रोक लिया। वह लड़की कम से कम समझ तो लेती और बातें तो कर लेती। उसे ऐसा जान पड़ता था कि उन आलसी आदमियों के झुंड में से कोई भी ऐसा नहीं था जिसे उसकी बात तनिक भी भाती हो। बलिष्ठ गढ़पति भी उसकी बातों में तनिक आनन्द न लेता था। जब बात ही नहीं सुन या समझ रहे थे, तब सहायता करना तो दूर रहा।

इसी क्रोध में कि बालिका को क्यों जाने दिया वह उसे देखने के लिये दरवाज़े के पास गया। लेकिन उसका तो कहीं पता ही न था। जब वह फिर लौट कर आया तो उनको बुद्ध की तरह उसी भाँति बैठे पाया। तुरन्त ही उसे स्मरण हो आया कि वह जादू भरा इशारा जिसके कारण उसे अब तक सफलता प्राप्त हुई थी कदाचित् इन मूर्खों पर भी कारगर हो जाय। सचमुच उनके बुद्धूपन से वह धोखा खा गया था। उसकी सारी बुद्धि-तत्परता खो गई थी और कोयलेवाले के सफलता-पूर्वक मूर्खता के अभिनय से वह घबड़ा सा गया था। जब ग्वालिटयर द्वार बन्द कर चुका तब उसने एक कोयले का टुकड़ा लेकर मुख्य दरवाज़े पर इस निश्चिन्तता से कुछ रेखाएँ खींचने लगा मानो वह अपने मन को बहलाने के लिये ऐसा कर रहा हो। खींचते-खींचते उसने रोमन-क्रूश का चिह्न चित्रित कर दिया जिसकी खड़ी रेखा अर्गला से बड़ी न थी। फिर उसने उसको सुधारना प्रारंभ कर दिया और सुधारते-

सुधारते उसे माल्टा-क्रूश बना दिया। उसमें की तिरछी रेखाएँ और सिरों पर के भीतरी कोण भी चित्रित कर दिये।

उस क्रूश के नीचे उसने लैटिन के दो शब्द "अमोरे क्रिस्टी" (यीशु का प्रेम) लिख दिये।

चित्र समाप्त होने के पूर्व ही वह धनुष बनानेवाला अपने स्थान से उठ कर अपना कोट पहिनने लगा मानो वह अग्नि तापना छोड़ कर वहाँ से हट जाने को तत्पर हो रहा था। दो और आलसी मनुष्यों ने वहाँ से चल देने की तैयारी कर ली। सीसेल के मार्क ने स्वयं कहा, "अब दोपहर होने को आ गया। अब हम यहाँ न बैठेंगे। यदि फ्रैंनोइस आए, तो उस से कह देना कि बुढ़िया से पूछ ले कि मैं कहाँ हूँ।" इतना कह कर जब वह दरवाज़ा खोलने लगा तो ग्वालिटयर से कहा, "आइये, चलिये बाहर हवा में चलें।" मिलर उसके पीछे हो लिया। जब वे इतनी दूर निकल गये कि वहाँ का वार्तालाप कमरेवालों को सुनाई न पड़े तब मार्क ने कहा, "आपको पहिले ही कुछ इशारा करना था। उस कमरे में कुछ ऐसे व्यक्ति हैं

जो पिता को कैद करा देने में अथवा उन्हें बरगेट की झोल में फेंक कर प्रसन्न होंगे। लेकिन यदि आप 'उसके नाम पर' आये हैं तो आप मेरा विश्वास कर सकते हैं।"

तब ग्वालियर ने उस जाग्रत जंगली से बताया कि वह कौन था और क्यों आया था, और उससे कहा गया था कि यह बहुत आवश्यकीय बात है कि पिता से सब बातें कही जायँ, और खीष्ट के प्रेम के हेतु उससे यह पत्र लाने के लिये कहा गया था और वह "उसके नाम पर" यह कार्य करने को तत्पर हो गया था। फिर उसने लीसेल के मार्क से कहा, "आपके विश्वास के चिह्न रूप में मैं यह पत्र आपको दिये देता हूँ और आप ही गुरु के गुप्त स्थान पर इसे ले जाइये। और तत्पश्चात् आने न और न आने का निश्चय करना उन्हीं पर छोड़ दीजिये। हाँ, मैं जानता हूँ कि यदि दोपहर तक वे मेरे घोड़े पर सवारी करने के लिये पूर्णतया तैयार होकर यहाँ न आ जायँगे, तो उनके आने से कोई लाभ न होगा। क्योंकि आज्ञा दी गई है कि सूर्य डूबते-डूबते लायन्स का पुल उन्हें पार कर जाना चाहिये। मेरे मित्र, आप तो जानते ही हैं कि उन वीर पुरुष के लिये समय के भीतर इतनी दूर पहुँच जाना असम्भव नहीं है।"

इतना सुन कर कोयलेवाला झटपट चल दिया और सवार झोपड़े में लौट आ कर मछली पकड़नेवाले जीन की बगल में

भूमि पर लेट गया। जीन को यह जानने के लिये बड़ी उत्सुकता थी कि वह अजनबी कौन है। वह उसके कार्य के विषय में कुछ और जानना चाहता था। लेकिन ग्वालिटयर भी उसी की भाँति चालाक था। वह उसके प्रश्नों का कोई ठीक उत्तर न देता था, बल्कि उसीसे कुछ पूछ बैठता था। एक घंटे तक दोनों में पूछापाछी होती रही, पर कार्य के विषय में जितना संदेह प्रारम्भ में था उतना ही अब भी रहा। ग्वालिटयर ने बुद्धिमत्ता-पूर्वक अपने घोड़े की काठी के पीछे से एक बोतल शराब निकाली और उस दल के साथ मित्रता प्राप्त करने के उपलक्ष में उसे प्रदान की। दोनों ने पाला, नदी की बाढ़, कोयले का भाव, लोहे की नई खानें आदि अनेक विषयों पर बहुत सी बातें कीं और ज्यों ही वे उस धर्म-युद्ध के विषय में बात छेड़ने वाले थे कि इतने ही में सोसेल का मार्क उस धुएँदार झोपड़े में घुसा।

आग के पास जहाँ वह पहिले बैठा था बैठते हुए उसने मिलर से कहा, "मेरे पास जितना चारा था, मैंने सब आपके घोड़े को दे दिया और वह सब का सब खा गया। उसने यह बात बड़ी उजड्डता से कही। उसका मतलब यह था कि गुप्त-भेद न जाननेवाले उस अजनबी से मिलने का यही अर्थ समझे कि उससे केवल उसके घोड़े के विषय में कहना था। ग्वालिटयर ने अपने भले स्वभाव के अनुसार जिसे उसने बराबर उन लोगों को प्रदर्शित किया था उसे धन्यवाद दिया और चारे का

दाम चुकता कर उनसे विदा ली। उसने कहा, "मैं अपनी यात्रा पर अभी आगे जाऊँगा।" वह उस द्वार को पार कर उस स्थान को आया जहाँ उसका घोड़ा बँधा था। वहाँ 'ज्यूनियर-वृक्ष' के नीचे जिसमें उसका घोड़ा बँधा था उसने, जैसी आशा की थी, ल्यूगियो के जॉन को खड़े पाया।
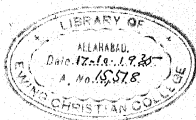
सातवाँ परिच्छेद

ल्यूगियो का जॉन

ल्यूगियो का जॉन उन मनुष्यों में से था जिन्होंने संसार की अमूल्य सेवाएँ की थीं और जिनको आज सारा संसार भूल गया है। जब कोई 'हीब्रूज़ की पत्री' में उन मनुष्यों के विषय में पढ़ता है जिनकी नाना प्रकार से दुर्गति की गई थी, जो व्यर्थ तंग किये गये थे, जिनके ऊपर कोड़े पड़े थे, जो बन्दीगृह में डाल दिये गये थे, जिनके पास कुछ नहीं था, जिनको नाना प्रकार के कष्ट दिये गये थे, जो रेगिस्तानों, पर्वतों, घने जंगलों एवं कन्दराओं में छिपते फिरे थे, जिनके योग्य संसार नहीं था, तो उसे ध्यान रखना चाहिए, उस पत्री को पढ़ने का सौभाग्य अथवा अधिकार उसे कदाचित् इन्हीं

चन्द लोगों की कृपा से प्राप्त हुआ है जिनमें एक ल्यूगियो का जॉन भी था।

जब लायन्स के धनी व्यापारी पीटरवाल्डो ने अपने आस-पास के मनुष्यों के लिये धर्मपुस्तक की आवश्यकता का अनुभव किया और उनकी अनभिज्ञता देखो, तब उसने अपने तई तथा अपनी सारी संपत्ति को भूखों को खिलाने और निराश्रयों को आश्रय देने के अतिरिक्त खाइष्ट के शब्दों का प्रचार करने में समर्पित कर दी। उसे एक के पश्चात् दूसरे पुराने और नये नियम की पुस्तकों के भाग रोमान्स भाषा में मिलते गये। उस भाषा का प्राचीनतम नमूना हमें पीटरवाल्डो की दो एक-पीढ़ो पहले के किये हुए बाइबिल इतिहास के अनुवाद में मिलता है। इसका नाम 'नोब्ल लेसन' (उच्च शिक्षा) है। भाट, जिन्हें हम प्रायः प्रेम एवं वीरता के गीत गानेवाले समझते हैं, कदाचित् उन दिनों पवित्र धार्मिक गीत गाया करते थे और गिरजाघरों की अपेक्षा बाइबिल की कथाओं का भिन्न-भिन्न स्थानों में अधिक प्रचार किया करते थे।

पीटरवाल्डो ने लोगों के इस प्रकार प्राप्त बाइबिल-ज्ञान को समुन्नत करने का भार अपने ऊपर लिया। उसके साहसिक कार्यों का यह एक आवश्यकीय भाग था। प्रचलित लैटिन बाइबिल पढ़ने भर को वह स्वयं पर्याप्त लैटिन जानता था। प्रॉवेंसल भाषा में इसका अनुवाद करने के लिये उसने लायन्स

के तीन बुद्धिमान पुरोहितों की सहायता ली। वे थड़ूस के बर्नर्ड, पमसा के स्टेफ़न, और ल्यूगियो के जॉन थे जिनका परिचय पाठकों को अब दिया जा रहा है। तीनों सोचते थे कि इस साहसिक कार्य के करने में कोई अपवाद नहीं हो सकता। वे और उनके मित्र साधारण जनता को ईश्वर का संदेश सुनाने पर उद्यत थे, इससे बढ़ कर और वे क्या कर सकते थे। इन तीनों में से स्टेफ़न ने बाइबिल के अनुवाद का काम लिया। जॉन दूसरे अनुवादों की परीक्षा कर उन्हें स्टेफ़न के अनुवाद से मिलाता था। वह उनकी समालोचनाएं पढ़ता और जो सर्वोत्तम बात होती उसे ग्रहण कर लेता। उस समय की सर्वोत्तम शिक्षा और अध्ययन द्वारा जितना हो सकता था उन्होंने जनता की इस नई बाइबिल को पूर्ण बनाया। बर्नर्ड ने उनके निश्चित किये हुए पाठ को पुनर्वार लिखने का भार ग्रहण किया। यद्यपि बर्नर्ड का काम सबसे नम्र एवं छोटा था, पर था वह सब से अधिक आवश्यकीय। यद्यपि उस शताब्दी तथा उसके बाद वाली शताब्दी के अत्याचारियों ने सारी पुस्तकें नष्ट कर डालीं, पर तौभी फ्रांस के संघ के प्राचीन पुस्तकालयों में धैर्यपूर्वक किया हुआ बर्नर्ड का अनुवाद मिल सकता है। जब वाटर ने पोप महाशय का इस कार्य पर आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये यात्रा की थी, तब इनमें से कदाचित् एक या तीनों उसके साथ गये थे। जैसा पहले ही कहा जा चुका है। पोपमहोदय को यह जान कर कि लायन्स

के कुछ लोगों के मन में धर्म की इस प्रकार से सहायता करने का विचार उठा है, बड़ी प्रसन्नता हुई। इनकी कार्य-प्रणाली लगभग उसी भाँति की थी जिस प्रकार कुछ वर्ष पश्चात् सेंटफ़ैसिस ने प्रस्ताव किया था। जहाँ कहीं यह उसकी प्रणाली से भिन्न थी, वहाँ उस समय के लोगों की आवश्यकता के अनुसार यह अधिक विस्तृत एवं उदार थी।

क्या ही अच्छा होता यदि लायन्स के बिशप और चैप्टर भी उस समय की आवश्यकता का अनुभव कर लेते। पर शोक उन्होंने ऐसा नहीं किया। उनके लिये नगर तथा देहातों पर नई क्रय की हुई राज-शक्ति का उपयोग करना ही उनका धर्म था। व्यापारियों का उनके कार्यों में हस्तक्षेप करना, ग़रीबों को भिक्षान्न देना अथवा लोगों को धर्मपुस्तक का पाठ सुनाना उनको असह्य था। उन्होंने फ़ोरेज़ के काउराट से अधिकार मोल लेकर अपने को उनकी आज्ञाओं से ही स्वतंत्र नहीं कर लिया था वरन् अब वे स्वयं घर में बैठे-बैठे कुछ जोशीले दुष्टों द्वारा अपनी आज्ञाओं का पालन करवाते थे। अतएव, जैसा पहले ही कहा जा चुका है, उन्होंने पीटरवाल्डो के उपायों को अस्वीकार कर दिया। उसे तथा उसके सम्बन्धियों को बहिष्कृत कर उनकी सारी सम्पत्ति छीन ली और उन्हें देश से निर्वासित कर दिया।

ऐसी ही विपत्तियों से मनुष्य के आत्मा की परीक्षा होती है और ऐसी ही अग्नि से खरे धातु की खराई जाँची जाती है।

उन चारों आदमियों में से जो नई बाइबिल के लिये एक साथ काम कर रहे थे दो ले लिये गये और दो छोड़ दिये गये। पीटरवाल्डो ने प्रत्येक हानि सहन कर सारे यूरप में चक्कर मारना आरम्भ कर दिया। जहाँ कहीं वह जाता, वहीं जनता की एक बाइबिल एवं एक ऐसे गिरजाघर के विषय में अपना मत प्रगट करता जिसमें साधारण जनता और पुरोहित दोनों को ईश्वर की सेवा करने का बराबर अधिकार हो। बर्नर्ड और स्टेफ़ेन परीक्षा में सफल न हो सके। उन्होंने लायन्स के गिरजे के पदाधिकारियों से संधि कर ली, फिर उसके बाद उनके जीवन का इतिहास किसी को नहीं मालूम। ल्यूगियो का जॉन, जिसके विषय में हमने पाठकों से यह कहा है कि 'वह उन मनुष्यों में से था जिनके योग्य उस समय का संसार नहीं था', अपने अभिप्रेत कार्य से कभी विमुख नहीं हुआ। उसने एक स्वतंत्र बाइबिल के हेतु अपना जीवन अर्पण कर दिया। मध्य यूरप का कोई ऐसा नगर नहीं था जिसने उसकी शिक्षाओं तथा अध्ययनों से लाभ न उठाया हो और जब 'जॉन हस' उसी विचार के कारण शूली पर चढ़ाया जाने लगा तब उसने तथा आस-पास के और लोगों ने ल्यूगियो के जॉन तथा पीटरवाल्डो का उपकार मुक्त कंठ से स्वीकृत किया।

पुरोहित मिलर की प्रतीक्षा में खड़ा था। उसके मन में यह जानने की उत्सुकता हो रही थी कि उस पत्र का लानेवाला जिसे वह हाथ में लिये खड़ा था किस भाँति का आदमी है।

वह स्वयं किसी पुरोहित की तरह कपड़े नहीं पहिने था और न किसी बड़े आदमी ही की भाँति। उस समय के सिपाहियों का पहिनावा भी वह नहीं पहिने था। उसे देख कर लोग यही समझ सकते थे कि यह किसी सौदागर का दूत है जो रेशम अथवा ऊन के लिये लायन्स से इस प्रदेश में भेज दिया गया है। उसके श्वेत बाल टोपी के नीचे छिपे थे। हाँ उसकी घुटी खोपड़ी दृष्टिगोचर नहीं होती थी। उसका कोट शीत से बचाने के लिये कसा था। उसके पहनावे के रंग-रूप में कोई ऐसी बात नहीं थी जिसे देख कर कोई यात्री कुछ कह सके।

उसके पहले प्रश्न के उत्तर में मिल के ग्वाल्टियर ने तुरन्त कहा, "मैं जीनवालडो का निजी दूत नहीं हूँ। जैसा आप देखते हैं। मैं 'लायन्स का एक दीन मनुष्य' हूँ। जिस दूत को जीनवालडो ने यह कार्य सौंपा था वह अपने अच्छे अश्व सहित मेरे घर के द्वार के सामने ही गिर पड़ा। उसने हमारे गुप्त चिह्न द्वारा मुझे पहिचान लिया। यह तो उसकी चाल ही से प्रगट हो गया था कि उसके आवश्यक कार्य के लिये शीघ्रता की बड़ी ही आवश्यकता थी। सूर्योदय के पूर्व ही वह धावन लायन्स के पुल का फाटक पार हो गया था, क्योंकि उसका रक्षक हमारे ही मनुष्यों में से था, परन्तु यह नहीं कहा जा सकता है कि इस सन्ध्याकाल को भी यही सौभाग्य की बात होगी। सम्भव है उस पुल का रक्षक आपका कोई जानी शत्रु हो। जिस मार्ग को हम लोगों ने सात घंटों में तै किया है

उसके लिये आपके पास पाँच घंटे हैं। यह बात सत्य है कि आपको उतराई की राह पर जाना है और हम लोगों को चढ़ाई पर आना था। आपको तैयार घोड़े मिल जायँगे और हमारे घोड़ों को तैयार होने में देर लगी थी। तो भी, पवित्र पिता, यदि आपका घोड़ा कहीं गिर पड़ेगा, तो काम न चलेगा, क्योंकि इस लाये हुए समाचार से मैं भली-भाँति समझ सकता हूँ कि हमारे भाइयों में से कोई भी आज की रात्रि में उस बालिका के पास आपका स्थान नहीं ग्रहण कर सकता।

पिता जॉन ने मुसकराया तक नहीं। उन्होंने कहा, "प्रभु पथ-प्रदर्शक हैं और वे ही सब वस्तुएँ ठीक कर देंगे। मेरी यात्रा में सहायता प्राप्त होगी अथवा बाधा पड़ेगी, इस बात को वे ही जानते हैं। पर यह उनका कार्य जान पड़ता है। खीष्ट के प्रेम के निमित्त मैं बुलाया गया हूँ और "उसी के नाम पर" मैं जाता हूँ।" जब ग्वालियर घोड़े की रकाब ठीक करने लगा तो उन्होंने कहा, "नवयुवक, जिस समय मैं लायन्स से निर्वासित कर दिया गया, उस समय उन लोगों ने उन सारी अमूल्य पुस्तकों को जला कर राख कर डाला जिन में मैंने इस तुच्छ जीवन के बीस वर्ष लगाये थे। जो कुछ मैं परमेश्वर और उसके गिरजे के लिये कर सका था, उन्होंने अहंकारवश उसे नष्ट कर देने का प्रयत्न किया। उन्होंने मुझे विवश किया कि मैं अपने दीन भाइयों से अलग हो जाऊँ, उन विधवाओं से अलग हो जाऊँ जिनके अश्रुजल पवित्र थे, उन अनाथों से

अलग हो जाऊँ जिनको मैंने पढ़ाया और लिखाया था, उन नम्र घरों से अपना नाता तोड़ लूँ जो मेरे लिये ईश्वर के पवित्र पुत्र के मन्दिर के समान थे। जिस समय उनका मुंह चिढ़ाने वाला 'वज़ीर' मुझे निर्वासित करने के लिये उस पुल तक आया था जिसे आज संध्या तक मैं पार करने को हूँ, उस समय मैंने कहा था, आज के पश्चात् मैं आपको उस दिन तक न देखूँगा जिस दिन तक आप यह न कहेंगे कि "धन्य वह है जो प्रभु के नाम पर आता है"। युवक, इस ज़ानवाल्डो ने जिसके घर आज मैं बुलाया जा रहा हूँ उस दिन मुझे, अथवा मेरे प्रिय मित्र, अथवा 'लायन्स के दोनों' में से किसी को अथवा उसकी बपुरी स्त्रियों अथवा बच्चों को बचाने का प्रयत्न नहीं किया। पर समय अपना प्रतिकार अवश्य करता है। आज वही ज़ीनवाल्डो ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है कि मैं समय के भीतर आ जाऊँ। हे सर्व शक्तिमान् पिता, उसकी प्रार्थना सुनिये और उसका उत्तर दीजिये; और अपने दास को बुद्धि तथा शक्ति प्रदान कीजिये कि आज वह आपके प्रिय बच्चों की कुछ सेवा कर सके।"

मिलर ने भक्तिपूर्वक कहा, "तथास्तु"। पुरोहित ने क्रूश चिह्न बनाया और विदा होते समय उसे आशीर्वाद देकर चल दिया।

यह एक चित्रित अनुभव है कि पचपन बरस का बूढ़ा किसी ऐसे कार्य को करने का साहस करे जिसे छोड़े उसे

तीस बरस हो गये थे। यदि उसका जीवन शुद्ध है तो वह अपने को सदा युवक ही समझता है। मनुष्य की आत्मा कभी बूढ़ी नहीं होती बल्कि; शुद्ध आत्माएँ तो प्रति दिन युवक होती जाती हैं। जॉन ल्यूगियो जानता था कि जब वह पचीस वर्ष का था तब घोड़े पर चढ़ने के लिये उसे रकाब में पैर रखने की आवश्यकता न पड़ती थी और न शीत से बचने के लिये लबादे की ज़रूरत होती थी। उसने घोड़े से कहा, "यह अच्छा है कि तुम उस भूरे घोड़े से चालीस बरस अधिक बूढ़े नहीं हो जिस पर चढ़ कर मैं अन्तिम बार बर्नर्ड से मिलने के लिये गया था"। उसे अपनी युवावस्था के उस दिन की सुध आ गई। उस समय और इस समय के बीच के अन्तर के विषय में सोचता हुआ वह एक मील चला गया। जिस तरह वह अपने घोड़े का संचालन कर रहा था और रास्ते की प्रत्येक लाभदायक वस्तु से लाभ उठा रहा था, उसे देख कर मनुष्यों का कोई भी नेता इस प्रकार के कार्य के लिये एक युवक की अपेक्षा उस श्वेत-बाल-धारी पुरोहित को चुनता। ज्यों-ज्यों एक संयमी एवं आत्म-विश्वासी व्यक्ति की शारीरिक शक्ति पैंतालीस वर्ष की अवस्था के पश्चात् क्षीण होने लगती है, त्यों-त्यों उसका अनुभव, कार्य-पटुता, तथा हस्त-नेत्र-प्रयोग आदि बढ़ने लगते हैं। जॉनल्यूगियो अभी तक उस अवस्था को नहीं प्राप्त हुआ था जहाँ शारीरिक शक्ति क्षीणता की रेखा का अनुभव एवं पटुता की वृद्धि की रेखा को पार कर जाती है।

धार्मिक युद्ध में भाग लेनेवालों में से, जो उस समय अपनी शरद्-ऋतु पलस्तीन में व्यतीत कर रहे थे, कोई ऐसा नहीं था जो उसके समान कठिन परिश्रम के योग्य हो। एक घंटे में वह सेंट रैम्बर्ट में पहुँच गया जहाँ 'ब्रावन' नामक सोता 'अलबराइन' की धारा से मिलता था। यह एक विचित्र पुराना क़सबा था और अब भी वह वैसा ही है। इनका नाम ड्यू क रैडबर्ट के पुत्र सेंट रेनबर्ट के नाम पर पड़ा था जो ल्यूगियो क जॉन से पाँच शताब्दी पहले शहीद हो गये थे। 'रेनबर्ट' से बिगड़ते-बिगड़ते 'रैम्बर्ट' हो गया था। रैम्बर्ट से भी पहिले उस पहाड़ी पर 'जुपिटर' की पूजा होती थी और इसी कारण उनका नाम भी 'जो' के रूप में कसबे के नाम में लगा दिया गया था। कसबे का पूरा नाम 'सेंट रैम्बर्ट डी जो' था। वह सोता उछलता-कूदता कई जल प्रपातों के रूप में घाटी में बहता था, उसी के किनारे से होकर सवार नीचे चला। उस मार्ग द्वारा जिससे वह पूर्णतया परिचित जान पड़ता था वह 'बेनिडिकाइन' (बेनिडिक्टाइन मठ) की दीवालों के नीचे पहुँच गया। जब वह फाटक से जा रहा था तब उसे साधुओं का पहिनावा पहिने हुए दो साधु मिले जो दोपहर का भोजन करके आ रहे थे। उस सकड़े मार्ग पर उन्होंने सवार के चेहरे की ओर देखा और सवार ने उनको। उन्होंने तुरन्त उसे पहिचान लिया और कहा—

"कहाँ इतनी तेज़ी से जा रहे हो, भाई जॉन?" यही उनका सलाम था।

यह सुन कर लगाम न खींचना सवार के लिये असम्भव था। उन दो में से पहले का स्वागत, कदाचित् यकायक मिल जाने से, इतना प्रेमपूर्ण था कि दया और प्रेम से उसका उत्तर न देना ल्यूगियो के जॉन के लिये पागलपन होता। उसने घोड़ा रोकते हुए कहा, "क्या ये भाई स्टीफ़न और भाई ह्यू हैं? मैं भाइयों के विषय में सोच रहा था, पर यह न जानता था कि आप लोग इतने निकट हैं। पिता ऐम्ब्रोज़ अब मुझ से नवागंतुकों के नाम नहीं बतलाते।"

"पिता ऐम्ब्रोज़ अब आपके पास नवागंतुकों के नाम कभी न भेजेंगे। वे गिरजे के पीछे वहाँ पड़े हैं और कल हम लोग उनका शव दफ़नाएँगे।" इस उत्तर के पश्चात् सब लोग एक क्षण तक चुप रहे और उस स्थान के बेढँगेपन का अनुभव करने लगे।

ल्यूगियो का जॉन बहिष्कृत कर दिया गया था। अब प्रश्न यह था कि आया लोग मित्र भाव से उससे वार्तालाप कर सकते थे अथवा नहीं। उनको चाहिये था कि उसको तिरस्कृत करते और अपने बड़ों से उसकी एक ऐसे कसबे में उपस्थिति के विषय में जहाँ से वह निर्वासित कर दिया गया था बतला देते। इस कर्तव्य के विषय में कोई प्रश्न न हो सकता था। परन्तु ये दोनों साधु साधु बनने के पूर्व मनुष्य और सच्चे ईसाई थे और दोनों जीन के साथ एक प्राचीन सम्बन्ध की ग्रंथि में

गुंथे थे। स्टेफ़न ने वीरता से कहा, "क्या आप अपने घोड़े को विश्राम देना चाहते हैं? क्या आप स्वयं कुछ देर तक विश्राम करेंगे? मैं स्वयं उसे अस्तबल में ले जाऊँगा और हू आप के लिये प्रसन्नतापूर्वक भोजनालय से ठंडी पेया ला दूंगा। आपका घोड़ा बहुत दूर तक चल चुका है और उसका विश्राम की आवश्यकता है।"

जॉन ने कहा, "विश्राम करने के पूर्व अभी हम दोनों पर्याप्त मार्ग समाप्त करेंगे। लेकिन स्टेफ़न, तुम्हारे शब्दों से मेरे हृदय पर का बोझ बहुत हलका हो गया है और इन दयामय शब्दों के कहने से तुम्हें भी रात्रि में अब अच्छी नींद आएगी। तुम भी अपना काम करो, मैं अपना करूँगा और हम लोग अपने बीच में कोई भी ऐसी बात न होने देंगे जो हम लोगों को अलग कर दे। नहीं, मैं ठहर नहीं सकता। आप लोगों की सेवा स्वाकृत कर के मैं आप लोगों को जोखिम में नहीं डालना चाहता। लेकिन मुझे आज एक ऐसा कार्य करना है जिसे इन खतरे के दिनों में बहुत कम लोग करते हैं। आज सन्ध्या होने से पूर्व मुझे लायन्स का लम्बा पुल पार करना है। 'लायन्स के एक दीन' मनुष्य का, एक बहिष्कृत अधर्मी का आशीर्वाद ग्रहण कीजिये। ईश्वर आप लोगों का भला करे, मेरे भाइयो।"

उन दोनों ने भी कहा, "ईश्वर आपको आशीर्वाद दे" और उसके घोड़े के लिये रास्ता छोड़ दिया।

जॉन ने नम्रतापूर्व कहा, "ख्रीष्ट के प्रेम के निमित्त मैं शीघ्रता कर रहा हूँ। आप भी अपनी प्रार्थनाओं में मेरे लिये ईश्वर से 'उसके नाम पर' आशीर्वाद माँगियेगा।"

इतना कह-सुन कर वे अपने-अपने मार्ग पर अलग हो गये। यदि इस घटना से उन साधुओं को आश्चर्य हुआ, तो उनसे कम आश्चर्य जॉन को नहीं हुआ। वह उनसे भयभीत नहीं था। उसने प्रत्यक्ष देख लिया था कि संघ के नियमों तथा नकारात्मक आज्ञाओं की अपेक्षा पवित्र आत्मा उनसे अधिक शक्ति से बोली थी। वह जानता था कि दोनों उसकी उपस्थिति छिपाने का अपराध स्वीकार कर लेंगे और इसके लिये निश्चित की हुई तपस्या प्रसन्नतापूर्वक करेंगे। वह यह भी जानता था कि उन दोनों में से कोई भी यह गुप्त भेद प्रगट न करेगा जिससे वह ख़तरे में पड़ जाय, और जानता था कि दोनों में से कोई भी उसकी उस मूक सेवा के कारण कभी भी पश्चात्ताप न करेगा।

इस साहसिक घटना से वह उनके प्रति सहानुभूति की अपेक्षा कुछ और सोचने लगा। यदि वह अपनी युवावस्था को अभिलाषाएं एवं कामनाएं पूर्ण करता तो आज उसका भी घर इन्हीं दीवालों के भीतर होता। उस संघ में एक स्टेफ़ेन को छोड़ कर वह औरों से ऊँचे पद पर होता। वह उन सब को जानता था और यह भी भली-भाँति जानता था कि उनमें से

कोई भी अध्ययन और विद्या में उसकी बराबरी का न था। यदि आज से तीस वर्ष पूर्व केवल अपने हृदय की इच्छा मान कर वह इस साधु-जीवन में प्रवेश कर जाता तो ऐबट ऐम्ब्रोज़ की मृत्यु के पश्चात् उसका उत्तराधिकारी, इस सुन्दर रियासत का स्वामी, इन भले संघों का संचालक, इन साधु विद्यार्थियों में से सब से प्रसन्नचित्त वही ल्यूगियो का जॉन होता।

परन्तु उसके स्थान पर ल्यूगियो के जॉन ने 'लायन्स के दीनों' की तात्कालिक सहायता के हेतु अपने को अर्पण कर दिया। उसने अध्ययन के सब्ज़ बाग़ को जुलाहों, रंगरेज़ों और मल्लाहों के जीवन-सुधार के लिये त्याग दिया। उसने उनके घरों में जीवन एवं शान्ति लाने का तथा उनके बच्चों के लिये स्वर्ग-मार्ग सीधा करने का प्रयत्न करना आरम्भ कर दिया। वह यह सब कार्य अपनी आँखें खोल कर करने लगा। वह कॉर्निलन के मठ को त्याग कर लायन्स के झोपड़ों में ईश्वर का संदेश सुनाने लगा। और ऐसा करने का पारितोषिक यह था कि आज एक सेवा करने के लिये लायन्स जाने में वह अपना जीवन जोखिम में डाल रहा था, जब कि उसके लिये यह सम्भव था कि उस मठ में रहकर एक उच्च पदाधिकारी के स्थान पर आज वह पिता ऐम्ब्रोज़ की अन्तिम क्रिया के समय एक योग्य सेवा कर सकता था।

यदि—और इस एक यदि शब्द पर उसके आधे जीवन का चित्र उसके नेत्रों के सामने आ गया। परन्तु ल्यूगियो के जॉन को उस अर्द्ध जीवन के चित्र से दुःख न हुआ। उसने उसी मार्ग का अवलम्बन किया था जिसे उसके ईश्वर ने उसे प्रदर्शित किया। जो कुछ उसने चित्त की द्विविधा के समय अनुभव किया था और जो कुछ वह इस समय अनुभव कर रहा था, उन सब बातों को उसने शान्ति-मय क्षणों में पहले ही देख लिया था। यह वीरतापूर्वक किये गये कर्तव्य का एक चित्र था। अस्तु, पिता जॉन उन दीवालों के नीचे से बिना आह किये अथवा आँसू बहाये चले गये।

रास्ता अब भी सोते के किनारे-किनारे टेढ़ी-मेढ़ी घाटी में चला जा रहा है। इसके घुमाव बड़े सुन्दर हैं, पर एक यात्री को सीधे नहीं ले जाते। वह माउण्ट चारवेट पार कर गया और सेरियर्स गाँव को बाईं ओर छोड़ते हुए मॉण्ट फ़ेरैण्ड के गढ़ के पास पहुँच गया। उसको यह आशा नहीं थी कि इतनी जल्दी वह वहाँ पहुँच जायगा। यकायक निश्चय कर वह अचानक गढ़ के फाटक के पास पहुँच गया। वहाँ किसी रक्षक को न देख कर उसने भीतर के एक लड़के को चिल्लाकर बुलाया और उससे बेरन के किसी ड्योढ़ीदार अथवा पदाधिकारी को बुलाने के लिये कहा।

बात यह थी कि बेरन मेक्सिमियक्स का भला भूरा घोड़ा अपना काम कर चुका था और सेंट रैम्बर्ट से जो उतराई पड़ता

थी, वह उसके लिये दूभर हो रही थी। कदाचित् मिलर ने उसे बहुत दौड़ाया था और उसकी कुछ विशेष परवाह भी न की थी। जो कुछ भी हो, सीसेल के मार्क के मकान पर केवल एक घंटे विश्राम करके वह दस लीग चल चुका था। यदि पुरोहित को अपने कार्य में सफलता प्राप्त करनी है, तो जितना वह पिछले घंटे में चला था, उससे कहीं अधिक चाल से उसे जाना चाहिये। इसीलिये उसने वीरतापूर्वक गढ़ के फाटक पर जाने का निश्चय किया था।

इस प्रकार बुलाये जाने पर वहाँ के सभी रहनेवाले उठ खड़े हुए और द्वार अथवा बारजों पर उत्सुकतापूर्वक आ डटे। किसी एकान्त स्थान में बने हुए घर में रहनेवाले, ऐसे अवसर पर नवागंतुक का चेहरा देखने को, अपने घर से उत्सुकतापूर्वक सदा निकल आते हैं, चाहे वह नवागंतुक कोई भी क्यों न हो। मॉण्ट फ़ेरैण्ड के काउण्ट स्वयं आ गये। वे राजा फ़िलिप अथवा महाराजाधिराज के दरबार में पहन कर जानेवाले कपड़े नहीं पहिने थे। उन्होंने अपना प्रातःकाल प्रभुत्व में नहीं, बल्कि घर के काम-काज में बिताया था। वे कल संध्या को शिकार करके लाये हुए सूअर का चमड़ा उधेड़ना और उसकी बोटी करना अपने नौकरों को बतला रहे थे। इस कार्य के पश्चात् जिसमें उन्होंने स्वयं सहायता की थी वे भोजन करने को बुला लिये गये थे। बिना कपड़ा बदले ही वे भोजन करने बैठ गये थे और खाते-खाते आराम कुर्सी में सो गये थे। नौकरों ने जब

सुना कि फाटक पर एक अजनबी खड़ा है, तब वे इधर-उधर दौड़ने लगे। इससे काउएट की नींद खुल गई। दिसम्बर के महीने में अजनबी का आना एक आश्चर्य-जनक बात थी, क्योंकि उन दिनों में अजनबी वहाँ बहुधा नहीं आते थे।

ल्यूगियो का जॉन पहले ही ड्योढ़ीदार और भंडारी से बातें करने लगा था। बेरन को आते देख कर वह अप्रसन्न नहीं हुआ। वह बूढ़ा खुले सिर, वही कपड़े पहने चला आ रहा था। शीत से बचने के लिये उसने कोई कोट भी नहीं पहना था। यात्री ने तुरन्त उसे पहचान लिया। वह बहुधा उस घाटी में आते-जाते उससे मिला था और संघ में तो तीस वर्ष पूर्व उससे मित्रता हो चुकी थी। लेकिन बेरन को तनिक भी ध्यान नहीं था कि इस सवार की, जिसे देखने को वह जा रहा है, खोपड़ी घुटी है अथवा इसी ने कई बार प्रार्थना में पवित्र प्याला उसके सामने उठाया है क्योंकि वह पुरोहितों की विशेष परवाह ही नहीं करता था और न उनसे अपना कोई काम रखता था। उसने अजनबी को अचानक, पर सभ्यतापूर्वक, सलाम किया और उससे घोड़े से उतर कर आराम करने को कहा।

उत्तर में अजनबी ने कहा, "मैं आपको इस दया के लिये धन्यवाद देता हूँ, मेरे मालिक। लेकिन मेरा काम जल्दी का है। मुझे आज ही शाम तक लायन्स पहुँच जाना है। इसमें

तनिक भी देर नहीं करना है। मैंने आशा की थी कि मेक्सिमियक्स के अस्तबल का यह घोड़ा मुझे वहाँ तक पहुँचा देगा और वहाँ मैं इसे छोड़ कर एक दूसरा ताज़ा घोड़ा ले लेता, पर यह अपनी शक्ति भर काम कर चुका है। अब इसको आगे ले जाने से, चाल की कमी के कारण देर हो जायगी और मैं समय के भीतर अपनी लम्बी यात्रा समाप्त न कर सकूँगा। इसीलिये मैं यहाँ रुका हूँ। इस समय मैं आपका आतिथ्य स्वीकार नहीं कर सकता, मैं आपकी सहायता चाहता हूँ। यदि मैं यह घोड़ा यहीं छोड़ दूँ और आप मुझे एक दूसरा घोड़ा दे दें जो उस घाटी तक पहुँचा दे, तो मैं आपको हार्दिक धन्यवाद दूँगा और वह घर आपको आशीर्वाद देगा जहाँ इस समय मेरी बड़ी आवश्यकता है।"

"आप अपनी कहानी बहुत साफ़ सुनाते हैं" बेरन ने एक कड़ा शपथ खा के कहा, "लेकिन यदि मैं मेक्सिमियक्स की सेना के प्रत्येक शोहदे को इस भांति अपना घोड़ा देने लगूँ, तो मेरे अस्तबल में घोड़े ही न रह जायँ।" इतना कह कर बिना क्षमा माँगे अथवा सलाम किये वह अपने भोजनालय में जाने के लिये घूम पड़ा।

पिता जॉन ने बिना क्रोध अथवा जल्दी के हठपूर्वक कहा, "क्षमा कीजिये, मैं मेक्सिमियक्स के बेरन का आदमी नहीं हूँ। मैं किसी मनुष्य का आदमी नहीं हूँ। मैं एक दया के कार्य के

लिये बुलाया गया हूँ क्योंकि एक जीनवाल्डो है जो सोचता है कि मैं उसकी बच्ची की जान बचा सकता हूँ। यदि मैं उसकी कुछ भी सेवा कर सकता हूँ, तो आज ही रात को मुझे वहाँ पहुँच जाना चाहिये। यदि मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा तो सेवा का पुण्य आप ही को होगा, मुझे नहीं।"

बेरन ने कहा, "यदि इस प्रकार मैं प्रत्येक भिखमँगे को अपना घोड़ा देने लगूँ, तो मेरे पास घोड़े रही ।न जायँगे।" उन आदमियों की भाँति जो कोई नई वस्तु नहीं निकाल सकते, बेरन महाशय अपनी पहली डाँट से इतने प्रसन्न हुए थे कि उन्होंने दुबारा भी उसी की शक्ति की परीक्षा करने को कहा। पर इस अनादर के दुहराने से पिता को और भी साहस हुआ। एक निश्चयात्मक व्यक्ति वही बात दुबारा नहीं कहता। अधिकतर वह दुबारा बोलता ही नहीं।

"मैं लायन्स का भिक्षुक नहीं हूँ और न किसी व्यापारी का सेवक हूँ। लायन्स मुझसे प्रेम नहीं करता, और न कोई दूसरा कारण है जिसके लिये मैं लायन्स में प्रवेश करूँ। कारण केवल वही है जो मैंने आपसे बतला दिया है। लेकिन बेरन महाशय, यदि आपकी पुत्री मर रही हो और जीनवाल्डो एक वैद्य भेज दे, तो, प्रसन्नतापूर्वक आप उसका स्वागत करेंगे, चाहे आपने कभी जीनवाल्डो की मुखाकृति देखी हो चाहे न देखी हो, चाहे आप उसके व्यापार अथवा नगर से प्रेम रखते

हों अथवा न रखते हों। क्या आप वही कार्य नहीं कर सकते जिसे आप दूसरों से कराना चाहते हैं?"

इतना कहने से कार्य लगभग सिद्ध हो गया था। परन्तु बेरन के मस्तिष्क में यह बात घुसी थी कि अपने ही नौकरों के सामने इस अजनबी की बात मान लेने से मेरी तौहीनी होगी। अस्तु वे कुछ देर बोले ही नहीं। उनके इस मूक व्यवहार से यदि पिता जॉन से कोई कम संयमी अथवा कम अनुभवी व्यक्ति होता तो अवश्य क्रोधित हो जाता।

अन्त में माँएट फ़ेरैण्ड ने हिचकिचाते हुए कहा, "मैं कैसे जानूँ कि आप वैद्य हैं? आपके पास क्या प्रमाण है? यदि मैं इस प्रकार प्रत्येक ऐम्बरीयो और संटपेम्बर्ट के बीच में आने-जाने वाले वैद्य को अपना घोड़ा दे दिया करूँ, तो मेरे पास कोई घोड़ा ही न रह जाय।"

'स्वामिन्, मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है। जिस मनुष्य ने चालीस वर्ष तक इस घाटी में आते-जाते सत्य कहा है उसको अपनी सत्यता के लिये किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।" इतना कह कर जॉन ने अपनी टोपी उतार कर अपनी मुड़ी हुई खोपड़ी दिखाई और फिर कहा, "इसी व्यक्ति द्वारा आपने खीष्ट का शरीर पाया है, स्वामिन्! आप भली-भाँति जानते हैं कि ये ओष्ठ आपसे झूठ कदापि नहीं बोल सकते।" तब त्राण-कर्त्ता का नाम लेने पर बेरन की मुखाकृति परिवर्तित

होते देख कर उन्होंने धीरे से दृढ़तापूर्वक कहा, "यीशु के प्रेम के निमित्त मैं आपके अस्तबल का सर्वोत्तम घोड़ा माँगता हूँ।"

"किलपेरिक को तैयार करो, किलपेरिक की पीठ पर जीन रखो। अरे मूर्खो, तुम लोग मुँह क्यों फैला रहे हो, छींक क्यों रहे हो? जल्दी से किलपेरिक को तैयार करो। मैं तुम लोगों से कहता हूँ कि जल्दी तैयार करो और इन महाशय के इस अच्छे घोड़े की भली प्रकार सेवा करो। हाथ मिलाइये, पिताजी, मुझसे हाथ मिलाइये। आप तो बहुत थक गये हैं। भीतर आइये और मेरी पत्नी से बात-चीत कीजिये। किलपेरिक एक ही मिनट में तैयार न हो जायगा। तबतक आप एक गिलास पेया पी लीजिये। नहीं तो मैं समझूँगा कि आप मुझसे रुष्ट हैं। हम लोग उजड्ड हैं, पहाड़ी हैं और बिना कुछ समझे-बूझे बक जाते हैं। परन्तु यदि आप "उसके नाम पर" आज्ञा देते, तो मैं ऐसी धृष्टता कदापि न करता।" जिस समय वे द्वार से होकर जाने लगे, उन्होंने अपने ऊपर क्रूश का चिह्न बनाया।

उस परिस्थिति में जिन लोगों के साथ वे थे उनके सामने बेरन ने न तो पुरोहित से कुछ और पूछने का साहस किया और न उसको यही बतलाना चाहा कि किस भाँति वह उस गुप्त संघ में सम्मिलित हुआ। और न उसने इसी बात को बताने की चिन्ता की कि पहले उसने क्यों निर्दयतापूर्वक इनकार कर दिया था और अब क्यों नम्रतापूर्वक घोड़ा देने को तैयार हो

गया है। कदाचित् यही हम लोगों के लिये अच्छा भी है कि हम से कही हुई अथवा की हुई प्रतिकूलताएँ बहुधा अनुकूल नहीं करनी पड़तीं। उसने फिर पुरोहित से पेया पीने का आग्रह किया और जब वह घर में प्रवेश कर रहा था तब उसने अपनी स्त्री को बुलाया और स्वागत में सम्मिलित होने को कहा। वह छोटी स्त्री बड़प्पन की सारी ताज़गी, फुर्ती, नम्रता और शान के साथ आई। अवस्था से अधिक दमा के कारण वह कुछ झुकी हुई थी। चाहे साईस तथा अन्य सेवक, और चौक में एकत्रित आलसी मनुष्यों ने बेरन के एकाएक परिवर्तन को समझ पाया हो अथवा न समझ पाया हो, परन्तु वह स्त्री जो अपनी खुली खिड़की से सब देख रही थी तुरन्त समझ गई। जिस समय पिता जॉन घर में प्रवेश करने लगे, उसने उन्हें तुरन्त पहिचान लिया। लेकिन वह जानती थी कि उनकी स्वतंत्रता, कदाचित् उनका जीवन, इसी बात पर निर्भर है कि उसके नौकर उनके विषय में कुछ भी न जानने पाएँ। अतएव उसने उनके साथ वही बर्ताव किया जो वह किसी लायन्स निवासी जुलाहे के मित्र के साथ करती जो शीघ्रता-पूर्वक उसकी पुत्री के पास बुलाया गया था। उसने उनका आदर किया, बढ़ कर उनकी टोपी ले ली और मेज़ के सिरे पर अपने पति के बगल में बैठने को स्थान दिया और अपने हाथों उस कामदार प्याले में चाय उँडेली जो बेरन अपने अतिथि के लिये निकाल लाया था। तत्पश्चात् उसने कहा, मैंने किसी

रोगिणी स्त्री—अथवा बालिका के विषय में आप लोगों को बात करते हुए सुना है। क्या हम अपने यहाँ से उसके लिये कुछ नहीं भेज सकते? यदि आप ले जायँ तो मैं एक क्षण में मेडेनवर्ट, रोज़ मरी अथवा सेंट मेरी की जड़ी ला दूँगी।"

परन्तु पिता ने धन्यवाद देते हुए अस्वीकार कर दिया। उसने कहा, "यदि किसी जड़ी-बूटी से काम चल सकेगा, तो वह मेरे मित्रों के पास लायन्स में अवश्य होगी।"

बेरन की स्त्री ने कहा, "क्या ही अच्छा होगा यदि आप इस कार्य में उसी भाँति सफल हो जायँगे जिस प्रकार एक बार आपने मुझे अपने आशीर्वाद से अनुग्रहीत किया था।"

पुरोहित ने आश्चर्यपूर्वक उन तीक्ष्ण, छोटी एवं काली आँखों की ओर, जो बर्फ़ के समान श्वेत, सुन्दर पलकों के नीचे जगमगा रही थीं, देखते हुए कहा, "आपको!"

उसने कहा, "जी हाँ, मुझी को।" और जब पुरोहित ने उसके अर्थ को न समझते हुए अत्यन्त भोलेपन से इसकी ओर देखा, तो अपनी छोटी आँखों के आँसुओं को पोंछ कर वह मुसकरा पड़ी, और कहा, "पिताजी, आप मुझे नहीं पहचानते? उस वीर के लिये यह लज्जा की बात है कि वह उस स्त्री को नहीं पहिचान सकता जिसने उसकी पताका ग्रहण की है। क्या एक पुरोहित उसको कभी भूल सकता है

जिसकी घोर विपत्ति के समय उसने सहायता की है।" उनको आश्चर्य-चकित देख कर वह हँसने लगी।

उन्होंने कहा, "शोक, श्रीमतीजी, क्षमा कीजिये, समय और निर्वासन के कारण मैं आपको भूल गया हूँ। आप जो कोई भी हों, पर मैं देख सकता हूँ कि आप सदैव युवती बनी रहने का गुप्त मंत्र जानती हैं और मैं उस युवावस्था को बहुत पहले खो चुका हूँ। मुझे माँट फ़ेरैण्ड के गढ़ में आये बहुत दिन बीत गये। उस समय आप यहाँ आई भी नहीं थीं।"

उसने कहा, "आपके पहिचानने से पहले किलपेट्रिक तैयार हो जायगा। अतएव यदि आप इस बात की प्रतिज्ञा करें कि अपना काम समाप्त कर लेने पर आप इस गढ़ में उतने सप्ताह ठहरेंगे जितने क्षण इस समय ठहर रहे हैं, तो मैं आपको बता दूँ कि मैं कौन हूँ। आपको वह दिन याद होगा जब एक लड़की लाल ओढ़नी (केप) पहिन कर और दूसरी नीली ओढ़नी ओढ़ कर और तीसरी बिना ओढ़नी के दो वीर पुरुषों और एक मूर्ख नौकर के साथ नाव में बैठ कर 'ब्रेन' के बेरन के घर से चली थीं। क्या आप भूल गये हैं?"—

"अलिक्स, अलिक्स डीब्रेन! यह असम्भव है कि मैं तुम्हें भूल जाऊँ। लेकिन तुम्हारा यहाँ रहना मेरे ही आने की भाँति आश्चर्य-पूर्ण है। तुम जानती हो कि वे चारों कहाँ हैं?"

इतने में साईस ने द्वार पर से कहा, "किलपेरिक तैयार हो गया है, स्वामिन्।"

"किलपेरिक तैयार हो गया है और जीवन तथा मृत्यु मुझे जाने के लिये विवश कर रहे हैं। प्यारी लेडी अलिकन, तुम मुझे अपना अतिथि बनाना चाहती हो। कदाचित् तुम नहीं जानती हो कि यदि लोगों को मालूम हो जाय कि मैंने इस प्याले से पेया पी है तो तुम बहिष्कृत कर दी जाओगी। और यदि मैं इस छत के नीचे सोऊँ तो तुम अपनी पालकी में चढ़ कर गिरजे न जाने पाओगी और उसमें प्रवेश नहीं कर सकोगी।"

उस छोटी वीरांगना ने धीरे से कहा, "क्या मैं नहीं जानती थी कि आप यीशु के प्रेम के निमित्त यात्रा कर रहे हैं और क्या मेरे पति तथा मैंने आपका आतिथ्य नहीं स्वीकृत किया है? हमारी प्रार्थना यही है कि आप वहाँ से आकर हमारा आतिथ्य स्वीकार करें और हम दोनों आपका 'उसके नाम पर' स्वागत करेंगे।" इसके पश्चात् वे अलग हो गये।

बेरन घर से पहले ही निकल गये थे। जब पुरोहित चौक में आकर घोड़े पर सवार होने लगे तो आश्चर्य चकित नेत्रों से देखा कि पहले ही से वे एक दूसरे घोड़े पर उसके साथ यात्रा करने को तैयार बैठे हैं। वे ऊपर से एक लोमड़ी के चमड़े का कोट पहने थे जो उन कपड़ों से किसी भाँति हलका नहीं

था जिन्हें वे पहिले पहने हुए थे और अपनी अनुपस्थिति में उन्होंने सवारा करने का बूट भी पहिन लिया था।

पुरोहित ने उसकी दया स्वीकृत की, परन्तु अपने गृहस्थ (मेज़बान) को यह कष्ट देने की अनिच्छा प्रकट की। उसने कहा, "मैं आपके साथ से बहुत प्रसन्न हूँगा, पर मुझे किसी रक्षक की आवश्यकता नहीं है।"

बेरन महाशय को शपथ खाने की बान पड़ गई थी और उनकी बातों में शपथ के तार उसी भाँति गुंथे रहते थे जिस भाँति मकड़ी के जाले। अस्तु, उन्होंने शपथ खाते हुए कहा, "मैं जानता हूँ कि माउण्ड फ़ेरैएड की भूमि पर अथवा उसके आस-पास आपको रक्षक की आवश्यकता नहीं है। परन्तु मैं इस बात को सहन नहीं कर सकता कि कोई शिकारी अथवा देहाती मेरे घोड़े पर चढ़नेवाले सवार से कोई उजड्ड शब्द कह दे। नहीं, मेरे पूज्य पिता, मैं आपकी रक्षा के हेतु आपके साथ नहीं चलता हूँ, पर आपसे कुछ बातें करने की इच्छा से। हम पर्वतीय बेरन उज्डु हैं परन्तु मूर्ख नहीं हैं; जैसा चैण्टर के बड़े लोग हमारे विषय में सोचते हैं। मेकिलमियक्स ने मुझे मेरी मछलियों के विषय में धोखा देने का प्रयत्न किया है और मेरे सारसों पर उसने अपने बाज़ कई बार छोड़े हैं, पर मैं उससे पन्द्रह वर्ष तक कुछ नहीं बोला हूँ। जबतक वह पवित्र-नगर की मूर्खता भरी यात्रा पर नहीं गया था, मैं उससे कुछ नहीं बोलता था। 'मूर्खता भरी यात्रा' कहने के लिये आप मुझे

क्षमा कीजिये। लेकिन मैं मेक्सिमिथक्स के लिये कहूँगा कि न तो वह मूर्ख है और न मूर्ख मज़ाकिया। और यदि मुझे सलादीन अथवा उसके अमीरों से लड़ना होता तो मैं उन मूर्ख गुंडों की अपेक्षा जिन्हें पुल गिरने के दिन मैंने देखा था उसे अपने साथ रखना अधिक पसन्द करता। मैं कहता हूँ कि हम लोग उजड्ड हैं, लेकिन जब आपकी नाई कोई साहसिक व्यक्ति हमारे पास आता है, और ऐसे व्यक्ति हमारे यहाँ बहुत कम आते हैं, तो हम लोग प्रसन्नतापूर्वक उससे कुछ शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं और यदि वह कोई प्रश्न पूछे तो उसका उत्तर देना चाहते हैं।

"लेकिन जैसा मैंने श्रीमती एलिक्स से कहा है आपसे भी कह देना चाहता हूँ कि मेरी सहायता करके आप अपने को जोखिम में डाल रहे हैं। कॉर्निलम के मठ में रहनेवाले मेरे दो मित्र साधुओं ने मुझे पहिचान लिया है। कदाचित् वे मुझे पकड़ाने का यत्न न करेंगे, पर वे मछुवे अथवा गड़रिये जिन से हमारी भेंट होगी ऐसा कर सकते हैं। मैं इस घाटी में इतनी बार आया-गया हूँ कि अब मैं यहाँ के निवासियों के लिये अजनबी नहीं हूँ। मुझे यह उचित नहीं जान पड़ता कि आपकी दयाओं के बदले मैं आपकी जान जोखिम में डाल दूँ।"

फिर शपथ खाते हुए बेरन ने कहा, "जानजोखिम में—एक पर्वतीय बेरन के लिये यह कह देना कि तुम गिरजे में प्रवेश नहीं कर सकते कोई दंड अथवा जोखिम नहीं है। मैंने अभी,

थोड़ी देर पहले उन्हें कष्ट दिया है। और यह सम्भव है कि वृद्ध शरीर इस पर्वत पर जहीं गिरे वहीं सड़ जाय। देखिये न, बहुत से वीरों के शरीर, जो इस मूर्खतापूर्ण युद्ध में भाग लेने गये हैं, क्षमा कीजिये, मेरा अर्थ उनसे है जो सेरासीन्स से युद्ध करने गये हैं, इस शरद्-ऋतु में सड़ रहे हैं। मैं आपसे सत्य कहता हूँ कि मुझे इसी काम के विषय में जिसे आप जोखिम अथवा दंड कहते हैं जानने की बड़ी इच्छा है। और मैं यह भी जानना चाहता हूँ कि हम लोगों को क्या करना चाहिये। हमारा यह विचार है आप और आपके मित्रों ने ठीक काम किया है, और इन शोर्वा तथा मद्य पीनेवाले, पुस्तकों को जलानेवाले, शैतान की सहायता करनेवाले, लबादा पहिननेवाले नागरिकों ने भूल की है।" अपने शपथों की सहायता से कठिनतापूर्वक उसने इस लम्बे वाक्य को समाप्त किया। परन्तु इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि यह वाक्य उसके हृदय से निकला था। समतल सड़क पर दो-तीन दिन से बँधे हुए घोड़े बड़ी शीघ्रता से झपटे जा रहे थे। ऐसा ज्ञात होता था मानो घोड़ों की द्रुत-गति उसकी बात-चीत में सहायता कर रही हो।

यद्यपि घोड़े बड़ी तीव्र-गति से दौड़ रहे थे; पर पुरोहित उसी निर्भीकता से अपने घोड़े पर बैठा था जिस भाँति बेरन। ऐसा ज्ञात होता था मानो वह घोड़े की पीठ ही पर पैदा हुआ हो। पुरोहित ने कहा, "मैं नहीं जानता कि मैं आपसे क्या

कहूँ। मैं नहीं कह सकता कि क्या करना चाहिये, क्योंकि मैं नहीं जानता कि मुझे स्वयं क्या करना चाहिये। हाँ, इतना जानता हूँ कि सब्र की डाल में मेवा फलते हैं। मैं उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जब प्रभु अच्छे दिन लाएंगे, क्योंकि मुझे पूर्ण विश्वास है कि वे अवश्य अपना दिन प्रकाशित करेंगे। इस बीच में जो कुछ मेरे सामने 'यीशु के प्रेम के निमित्त' अथवा 'उसके नाम पर' आ जाता है, उसे मैं प्रतिदिन करता जाता हूँ।

दूसरे ने तनिक अपने शब्दों को संयमित करके कहा, "आप बहुत अच्छा करते हैं, पिता, यह आप बहुत अच्छा करते हैं 'खाष्ट के प्रेम के निमित्त' कुछ न कुछ करते रहते हैं। आप इधर उधर आते-जाते रहते हैं और मेरी स्त्री अलिकल की भाँति प्रत्येक मनुष्य आपका आभारी है। परन्तु मेरे लिये यह कुछ नहीं है। मुझे प्रतिदिन यह अवसर प्राप्त नहीं होता कि उन मनुष्यों में से एक को जिनको ये दुष्ट नारकीय गुंडे ढूँढ़ रहे हैं अपने अस्तबल का एक अश्व देकर उन्हीं के नारकीय-गृहों में उनका अनादर करूँ।" तत्पश्चात् बेरन को इतना क्रोध चढ़ आया कि उसकी बातों को सुनना अथवा समझना कठिन हो गया और घोड़े बराबर आगे बढ़ते गये।

कुछ देर पश्चात् पुरोहित ने फिर उसकी बातों का अभिप्राय समझा। वह कह रहा था, "यदि यह सब दायो खाने

को गप्प, कबाड़ खाने का कूड़ा, दुष्टता भरी मूर्खता एवं पुरोहित की बकझक न होता, तो मुझे क्षमा कीजिये महाशय, तो मैं इन सभों को छोड़ देता। पुरोहितजी, मेरे पास तीस सुसज्जित घुड़सवार हैं, जो आपकी भाँति तो सवारी नहीं कर सकते, परन्तु उस सुअर मेक्सिमियक्स के किसी भी घुड़सवार से वे अच्छे हैं जिन्हें लेकर वह आर्क विशप की सहायता करने पवित्र-नगर को गया है। उनसे क्या, मेरे घुड़सवार तो स्वयं आर्क विशप से अच्छे हैं जो डगमगाता हुआ चलता है और तेलहे बोरे की नाईं कसा हुआ है। मैं आपसे सत्य कहता हूँ कि यदि मैं यह समझता कि सेना में आर्क विशप जैसे मनुष्य अधिक संख्या में हैं और वीर मनुष्य कम हैं तो मैं स्वयं उस युद्ध में सम्मिलित होता। परन्तु मैंने अलिक्स से कहा, 'वहाँ जानेवालों में से जो मूर्ख नहीं हैं, वे दुष्ट गुंडे हैं और जो गुंडे नहीं हैं वे मूर्ख हैं, और यदि राजा सलादीन उन सभों को खा जायगा, तो इससे संसार को कोई विशेष क्षति न पहुँचेगी, बल्कि लाभ ही होगा। संसार को लाभ पहुँचाना तो उनका काम ही नहीं है। अब आर्क विशप चला गया है। क्या हममें से कोई भी दो सौ घुड़सवार और उतने ही बल्लम धारी लेकर अपना क्रूश नहीं उठा सकता? आइये, हम लोग अपना यह क्रूश उठाएं और एक चाँदनी रात में लायन्स में पहुँच कर कोलाहल मचाएँ कि हम लोग 'खीष्ट के प्रेम के निमित्त' आये हैं। क्या आप नहीं सोचते कि वहाँ के वीर जुलाहे, मल्लाह एवं अन्य

भले मनुष्य 'उसके नाम पर' हमारा साथ देंगे" ? यह देख कर कि पुरोहित कुछ उत्तर नहीं दे रहा है उसने कहा, "मैं आपसे कहता हूँ, पिताजी, कि क्षण भर में हम उनके खानसामों, वज़ीरों, सरदारों एवं रँगीले सैनिकों को तितर-बितर कर देंगे, और उनके मोटे-मोटे आदमियों को भोजनालय से निकाल कर 'लायन्स के दीनों' को उनके परित्यक्त गृहों में, ईश्वर के मन्दिर के घर में ला बसाएँगे।" ये बातें उसने नाना प्रकार के शपथ खा-खा कर जिनका कोई सम्बन्ध इन बातों से न था कहीं।

यदि ल्यूगियो का जॉन केवल पादरी ही होता, तो कह देता, "नहीं, मेरे मित्र जो तलवार धारण करते हैं वे तलवार ही से नष्ट हो जाते हैं।" और तब बेचारा बेरन, जिसने इतनी बातें कदाचित् अपने जीवन में कभी न की होंगी, अपने घर को लौट आता और अपने को तथा अपने साथी को मूर्ख समझ कर श्राप देता एवं कोसता। उसकी समझ में यह बात कभी न आती कि उसकी बातें क्यों न मानी गईं। वह ईश्वर-भक्त था, परन्तु वह यह भी जानता था कि ऐसे अवसरों पर ईश्वर का सन्देश सब प्रकार के मनुष्यों को कैसे सुनाना चाहिए।

पुरोहित ने कहा, "मेरे स्वामिन्, कदाचित् आपका यह विचार कि ये राजा, बेरन, आर्क बिशप, बिशप तथा अन्य तीर्थ-यात्री जो पवित्र-नगर को गये हैं वहाँ तक कभी न पहुँच

पायेंगे, ठीक है। कदाचित् आपका यह सोचना कि पचास हज़ार सराचीन लोगों पर विजय प्राप्त करके भी ये लोग उन्हें ईश्वर तथा उसके पुत्र के प्रेम के विषय में कोई अच्छी शिक्षा न देंगे, ठीक है। मेरा विश्वास है कि आपका विचार ठीक है, नहीं तो मैं भी अपने प्राचीन मित्र विशप के साथ गया होता। परन्तु मान लीजिये कि उन्हीं की भाँति हम भी लायन्स में पहुँच गये और जिस प्रकार चैप्टर ने हम लोगों को नगर से निकाल भगाया था, उसी भाँति हमने भी उसे भगा दिया, तो सारा संसार 'लायन्स के दीनों' को बुरा बतलाने लगेगा। नहीं, नहीं, स्वामिन् इस काम को समय और स्वर्गीय ईश्वर के ऊपर छोड़ दीजिये। इस बात का भय न कीजिये कि आर्क विशप तथा चैप्टर बहुत दिनों तक आनन्दपूर्वक कालयापन करेंगे। परन्तु मुझे तो आप ऐसे भले मित्र से बढ़कर और कुछ न चाहिये। और आपको भी माँएट फ़ेरैएड ऐसे सुन्दर गृह और लेडी अलिक्स ऐसी धर्मपत्नी के सिवा और क्या चाहिये?"

परन्तु बेरन को ऐसा बढ़िया उपाय हँस कर टाल देना ठीक न जँचा। उसने फिर उसके विषय में कहना प्रारम्भ किया और अपने मित्र को बतलाया कि "मैंने इसे विस्तारपूर्वक सोचा है। मैं जानता हूँ कितने रक्षक यहाँ हैं और कितने वहाँ। सब अच्छे सैनिक आर्क विशप के साथ सीरिया में हैं और केवल कूड़ा करकट यहाँ रह गये हैं। पहले फ़ोरेज़ का काँउएट हम लोगों के

प्रतिकूल जाता, पर अब कदाचित् वह हमीं लोगों का साथ देगा। मरसेल्स से इस ओर कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो इन काली आँखवाले भौंरों को उनके छत्ते से भगा कर इतना प्रसन्न होता जितना फ़ोरेज़ का काउण्ट।"

पिता पहले ही की भाँति दया एवं दृढ़तापूर्वक सुनता रहा। उसने सोचा अब थोड़े से अधिकार का प्रयोग करना ठीक होगा, अस्तु उसने कहा, "मेरे स्वामिन, मैं आपको सचेत किये देता हूँ कि आप ऐसी बातें सोच रहे हैं जिन्हें आपको न सोचना चाहिये। यदि आपका विचार ठीक होता तो, इस समय के बहुत पूर्व अधिकारियों ने आपको सचेत कर दिया होता। जहाँ तक मेरा और आपका वश चले, हमें साधु, पुरोहित तथा बिशप आदि से कुछ छेड़-छाड़ न करना चाहिये।"

अब माँट फ़ेरैण्ड ने समझा, और कदाचित् ठीक समझा, कि "लायन्स के दीनों" की कोई सभा है और उसका संचालक मुझसे कहीं बुद्धिमान् है। उचित समय आने पर वह मुझे संकेत करेगा और तब मैं किलब्रिक पर सवार होकर अपने घुड़सवारों के साथ लायन्स पर चढ़ाई करूँगा। बेरन को अभी तक ईश्वर पर भरोसा करने की पर्याप्त शिक्षा नहीं प्राप्त हुई थी, अतएव वह नहीं समझ सका कि ल्यूगियो के जॉन का बताया हुआ अधिकारी चैप्टर, आर्क बिशप, राजा अथवा बिशप सबसे बड़ा है।

अब उसने तनिक बेचैनी से बात-चीत का ढँग बदला और धर्म-युद्ध के विषय में प्रश्न करने लगा। "क्या आप समझते हैं कि युद्ध में गये हुए सैनिक जल्द घर लौट आयँगे? क्या सलादीन की तलवार इतनी अशक्त होगी जितनी वे सोच कर गये हैं?" इसी प्रकार की उसने बहुत सी गप्पें कीं। सड़क समतल होने के कारण दोनों घोड़े उसी भाँति उड़ रहे थे जिस प्रकार बार्ब-नॉयर उसी दिन प्रातःकाल वहाँ आया था। हाँ, बेचारा बार्ब-नॉयर गिर पड़ा था और इन दोनों घोड़ों को कोई ऐसी दुर्घटना नहीं हुई। मेक्सिमियो के गढ़ तक पहुँचने में उन्हें बहुत देर न लगी। वहाँ ग्वालियर का घोड़ा पूर्णतया सुसज्जित हो सवार की प्रतीक्षा कर रहा था।

मॉण्ट फ़ेरैण्ड ने घोड़े से उतर कर अपने मस्तक का पसीना पोंछते हुए कहा, "सोलह वर्ष पूर्व मैंने इस चौक को देखा था। वह सामनेवाला लम्बा वृक्ष उस समय लगाया गया था। जहाँ तक मुझे सुधि आती है, इस चौक में कोई हरियाली उस समय नहीं थी।"

नौकर ने झुक कर कहा, "जब मैं आया, तो ये सारे वृक्ष वहाँ लगे थे, लेकिन जैसा आप देखते हैं वे बहुत दिन के नहीं हैं।"

उस कठोर बूढ़े बेरन ने कहा, "सोलह वर्ष! आज से पन्द्रह वर्ष पूर्व माइकेलमस में मैंने मेक्सिमियो से अपनी मछलियों

का चुकता कर देने को कहा था; परन्तु उसने शपथपूर्वक कहा कि 'मैं न करूँगा।' उस दिन से मैंने उससे बोलना छोड़ दिया। इस समय वह किसी अंजीर के वृक्ष के नीचे पड़ा है और मैं उसके चौक में खड़ा हूँ। आज सवेरे यदि कोई मुझसे यहाँ आने को कहता, तो मैं उत्तर देता कि नरक के सारे शैतान मुझे मेक्सिमियो की दीवाल की छाँह में नहीं ला सकते। देखिये, आपने क्या कर डाला है।"

पुरोहित ने घोड़े पर सवार होते हुए कहा, "मेरे स्वामिन्, स्वर्ग का एक नन्हा सा नम्र दूत वह कार्य कर सकता है जो नरक के सारे शैतान नहीं कर सकते। अच्छा, अब ईश्वर आपके साथ हो। लेडी अलिक्स से मुझ दीन पुरोहित का नमस्कार कह दीजियेगा और जब मेक्सिमियक्स घर आये तो उसकी विजय से भी बड़ी विजय आप उस पर प्राप्त कीजिये। उससे 'यीशु के प्रेम के निमित्त' अपनी मछलियों का चुकता कर देने को कहिये। देखिये वह एक तीर्थ-यात्री की भाँति 'उसके नाम पर' कर देता है कि नहीं।"

बेरन से हाथ मिला कर वह चल दिया। बूढ़े बेरन ने कहा, "ऐसा घुड़सवार तो मैंने राजा फ़िलिप ही के यहाँ देखा था। मुझे आश्चर्य होता है कि कितने लोग इसी की भाँति सेवा का कार्य कर रहे हैं।"

मिल के ग्वालिटयर ने उस घोड़े के विषय में जिस पर पुरोहित सवार हुआ, विशेष अत्युक्ति नहीं की थी और उस घोड़े पर भी आज तक कोई ऐसा सवार नहीं बैठा था। मेक्लिमियक्स और लायन्स के बीच में सात लीग से कुछ अधिक का अन्तर था, और अब भी है, परन्तु सवार जानता था कि इधर का मार्ग बहुत सहज था, और बेरन के किलप्रिक के कारण अभी पुरोहित के पास आधा समय बचा था। उसे निश्चित आशा थी कि 'मुझे मिलर ही के घोड़े पर निर्भर न होना होगा। जीनवाल्डो ने मेरे लिये कोई दूसरा घोड़ा अवश्य भेजा होगा जिसे मैं 'मिरिबेल' अथवा किसी दूसरे गाँव में सड़क पर खड़े हुए पा जाऊँगा।

यदि उसे एक ही घोड़े पर सारा मार्ग समाप्त करना होता तो वह इतनी द्रुतता से न जाता जितनी से वह दूसरा घोड़ा पाने की आशा में जा रहा था। द्रुतवेग से किसी साथी अथवा घटना न होने के कारण वह उस गाँव में पहुँच गया जहाँ से उस प्रातःकाल को वह मिलर चला था और जहाँ बेचारे प्रिनहैक की वीरतापूर्ण कार्य की असामयिक समाप्ति हो गई थी। जब वह उस दरिद्र गाँव में प्रवेश करने लगा तो घोड़े ने अपने कुछ साथियों को पहचान कर हिनहिनाया। पुरोहित ने स्वयं प्रिनहैक को मिलर के बाग की एक दीवाल की छाया में प्रतीक्षा करते हुए देखा।

जब जुलाहे ने उसे समीप आते देखा, तो वह मार्ग पर खड़ा हो गया और अपने छोटे बेंत से आकाश में वह गुप्त चिह्न बना दिया। पुरोहित ने लगाम खींच ली और घोड़ा समझ गया कि अब मैं घर पर पहुँच गया हूँ। प्रिनहैक और पुरोहित एक दूसरे से पहले कभी नहीं मिले थे। जुलाहे ने उत्सुकतापूर्वक पूछा, "क्या आप वही इच्छित वैद्य हैं?" और यह जान कर कि यह वही हैं, उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया, क्योंकि अभी तक उसका परिश्रम व्यर्थ नहीं गया था। जुलाहे ने कहा, "यदि मैं अपनी छोटी स्वामिनी को इतनी सरलता से बचा लूँगा, तो मैं अपने गले की हड्डी को प्रसन्नतापूर्व दर्जनों बार तोड़ने के लिये तत्पर हूँ; और दूकान अथवा कारखाने भर में कोई ऐसा लड़का नहीं है जो यही बात न कहे।" फिर उसने शीघ्रतापूर्वक पुरोहित से कहा, "मैं उस बालिका के प्राणघातक रोग के विषय में कुछ नहीं जानता। मैं इस मार्ग से यहाँ तक पहुँच पाया था कि वह दुखदायी घटना हो गई और मुझे यहीं रुक जाना पड़ा। और घोड़ों के विषय में तो मुझसे कुछ नहीं कहा गया है, परन्तु मैं दिन भर से उनकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। आपको मिरिबेल के पास अथवा प्रथम बार नदी पार करने पर कोई घोड़ा मिल जाना चाहिये।

पुरोहित ने पूछा, "आप बालिका के रोग के विषय में कुछ बता सकते हैं?"

"कुछ नहीं बता सकता। मैं इतना जानता हूँ कि पिछली संध्या समय वह बिलकुल भली-चंगी थी। मैंने उसे गाते हुए, पर्वत के नीचे उतरते देखा और उससे बातें कीं। इसके पश्चात् यकायक रात्रि के अँधेरे में मेरे स्वामी ने मुझे जगा कर 'यीशु के प्रेम के निमित्त' यह सन्देश आपके पास लाने को कहा। मुझे क्षमा कीजिये, यदि मेरे मालिक मुझसे श्रीकुमारी फ़्लीची के प्रेम के निमित्त भी यह कार्य करने को कहते, तो मैं उतनी ही तत्परता से इसे करता।"

"यदि तुमने इनमें से तुच्छातितुच्छ के साथ भलाई की है, तो मेरे साथ की है।" यही पुरोहित का अर्द्ध उत्तर था जिसे कदाचित् चोट खाया हुआ जुलाहा समझ गया। फिर पुरोहित ने कहा, "यदि मैं किसी काम का होना चाहता हूँ तो मुझे यहाँ ठहर कर विलम्ब न करना चाहिये। मैं बच्चों से कह दूँगा कि तुम कैसे विश्वासपात्र दूत हो। ईश्वर तुम्हारा भला करे, नमस्कार।"

जुलाहे का यह विचार कि मिरिबेल में कोई घोड़ा वैद्य की प्रतीक्षा करता होगा ठीक निकला। पुरोहित ने जीनवालडो के एक मनुष्य को एक घोड़ा लिये हुए अपनी बाट देखते पाया। वह मनुष्य न तो वैद्य को पहिचानता था और न उस घोड़े ही को जिस पर वह सवार था। परन्तु पुरोहित को जो इसकी ताक में था यह जानने में कठिनता न हुई कि 'कर ब्लैंक' नाम का घोड़ा उसी के लिये भेजा गया था। वह मनुष्य लायन्स

से दोपहर के दो घंटे पूर्व चला था। उसने भी रोगिणी के विषय में कोई अच्छी सूचना नहीं दी। उसे इतना निश्चय था कि उसकी दशा सुधर नहीं रही थी। उसको मिरिबेल में पुरोहित की प्रतीक्षा करने की और उसे 'कर ब्लैंक' पर चढ़ा कर भेज देने की तथा 'बार्ब-नॉयर' को लेकर शीघ्र लौट आने की आज्ञा मिली थी। अतएव पुरोहित को अकेले ही यात्रा करनी पड़ी। बालिका अभी जीवित है, इतना अच्छा है। शेष के लिये तो वह अपने बैठते हुए हृदय को लेकर दिन भर चला ही था। उसके हृदय की दशा वही ज्ञात कर सकता है जो मृत्यु से युद्ध करके उस कार्य को करने के हेतु बुलाया जाता है जिसमें अन्य लोगों को अभी तक सफलता नहीं प्राप्त हुई है।

—

आठवाँ परिच्छेद

बटरागी

ताजे घोड़े पर भली भाँति सवार होकर उस थके हुए पुरोहित ने साईस को नमस्कार किया और अपनी अन्तिम घंटे की यात्रा उस प्रसन्नता से समाप्त करने लगा जो बहुधा थके हुए यात्रियों को अन्तिम घंटे में प्राप्त होती है। शोक, यह वही प्रिनहैक की प्राचीन कथा थी। इस अन्तिम घंटे में उसे वे वे भय उपस्थित हुए जो दिन भर की यात्रा में कहीं नहीं हुए थे।

जब वह घाटी की एक चरागाह पर से होकर, वेग से चला जा रहा था, तब उसे नगर से निकलता हुआ एक सवार मिला जो एक रद्दी घोड़े पर चढ़ा हुआ था। वह सैलानी कपड़े

पहने था जिससे प्रकट हो जाता था कि वह एक बटरागी है। उसने जान-पहिचानी की भाँति सिर हिलाया। ल्यूगियो के जॉन ने भी उसका नमस्कार स्वीकृत किया। उसके हृदय में उस समय प्राचीन स्मृतियाँ जागृत हो रही थीं, अतएव उसने उस सवार की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। वह कवि आगे निकल गया; परन्तु एकाएक उसने अपने घोड़े को रोक लिया और घूम कर पुरोहित की ओर भली-भाँति देखा। तत्पश्चात् अपने दोनों हाथों को मुँह से लगा कर उसने ज़ोर से पुकारा और कहा, "तनिक ठहर जाइये।"

उस तीसरे पहर को ठहरना ल्यूगियो-निवासी जॉन के समय-विभाग में न था। उसने उसके शब्द साफ़-साफ़ सुने, परन्तु एक गायक के कहने पर उसे रुकना ठीक न जँचा। साथ ही साथ उससे कतरा कर भागना भी ठीक उचित न था। अतएव न तो उसने घूम कर पीछे देखा और न अपने घोड़े को एँड़ ही लगायी, बल्कि जिस वेग से वह जा रहा था, उसी वेग से उसे चलने दिया।

गायक ने उसकी शीघ्रता देख और भी उत्सुक होते हुए चिल्ला कर कहा, "ठहरिये, ठहरिये, तनिक ठहर जाइये।"

पर घुड़सवार आगे ही बढ़ता गया। वह अजनबी एक बार और चिल्लाया, पर उसने देखा कि सवार ने एक क्षण के लिये भी अपनी चाल कम न की, इस समय तक वह इतनी दूर

आगे निकल गया कि वहाँ से उसका चिल्लाना सुनाई न पड़ सकता था।

उसकी धृष्टता देख कर वह क्रोध के मारे कराहने लगा। उसने उत्सुकता-पूर्ण दृष्टि से ढलते हुए सूर्य की ओर देखा और उस भागनेवाले का पीछा करना निश्चित कर लिया। यद्यपि जीनवालडो के शक्तिमान अरबी घोड़े के सामने जिस पर पुरोहित सवार था उसका घोड़ा कुछ नहीं था, तौ भी उसने उसका पीछा करने का दृढ़ व्रत कर लिया।

पर पुरोहित ने एक बार भी घूम कर उसकी ओर न देखा। उसे तो अपनी उत्सुकता दिखलानी न थी। उसे तो इसका भी पता न था कि कोई उसके पीछे लगा है। हाँ, यदि कोई लगा भी था, तो उसका तात्पर्य तुरन्त पकड़ जाने का नहीं था।

उत्तरीय पर्वतों को पार कर सड़क की ऊँचाई कुछ अधिक हो गई है। ज्यों ही ल्यूगियो के जॉन को ज्ञात हुआ कि ऊँचाई के कारण पीछेवाली समतल भूमि पर आता हुआ मनुष्य उसे नहीं देख सकता, त्यों ही उसने अपने घोड़े को सरपट दौड़ा दिया और इस भाँति उड़ा कि क्या कोई उसका पीछा कर सकता था। यदि इसी चाल से वह चला जाता तो तुरन्त ही वह रोन पर पहुँच जाता।

परन्तु नहीं, उसे एक मील के भीतर ही लगाम खींचनी पड़ी ताकि सड़क के मोड़ पर के नन्हें से गाँव के लोग उसकी

शीघ्रता देख कर उत्सुक न हो जायँ एवं उनके मन में सन्देह न उत्पन्न हो जाय। एक मदिरा की दूकान के सामने दो-तीन घोड़े बँधे थे और एक लड़का उनकी देख-रेख कर रहा था। पास ही में दो एक आलसी निठल्लू भी खड़े थे। जॉन ने बिना उनके ध्यान को आकर्षित किये ही निकल जाने की आशा की थी।

परन्तु नहीं, ऐसा न हो सका। ज्यों ही सभ्यतापूर्वक उसने पास में खड़े हुए लोगों को सिर झुकाया, त्यों ही दो व्यक्ति जो आधे सैनिक और आधे अफ़सर ज्ञात होते थे दूकान से बाहर निकले। उनके पहिनावे से जान पड़ता था कि वे लायन्स के आर्क विशप और चैप्टर की पुलिस के सेवक हैं।

उन दोनों में से एक ने जो अधिक मदमाता था पूछा, "मेरे लम्बे मित्र, इतनी शीघ्रता से कहाँ जा रहे हो? तनिक ठहर जाओ और जीन ग्रेवियर की मदिरा का आस्वादन कर लो। जितनी मदिराएँ मैंने पी हैं उन सब से इसकी मदिरा बुरी है, पर कुछ नहीं से तो अच्छी ही है।

इस समय पुरोहित का काम न तो उनको व्याख्यान देना था और न मद्यपियों को उनकी भूल बतला कर उन्हें चेतावनी ही देनी थी, बल्कि उसे तो सूर्यास्त से पूर्व लायन्स में पहुँच जाना था। उसने तनिक भी क्रोध प्रदर्शित नहीं किया, बल्कि अच्छे भाव से हँसते हुए कहा।

'धन्यवाद' यदि और लोग पियेंगे, तो मैं उनके लिये दाम दे दूँगा। परन्तु मैं तो अभी-अभी मिरिबेल में सवार हुआ हूँ और सूर्यास्त से पूर्व ही मुझे लायन्स में पहुँच जाना है।

तब मतवाले व्यक्ति ने कहा, "सूर्य, अजी सूर्य को छोड़ो। अभी पूरे दो घंटे दिन शेष है। उस घोड़े पर सूर्यास्त से बहुत पहले तुम फाटक पर पहुँच जाओगे। आओ, जीन ग्रेबियर की लाल मदिरा का मज़ा ले लो, तब जाना।

पुरोहित ने कोई बेचैनी नहीं प्रदर्शित की। परन्तु एक बार और उसने इनकार करते हुए कहा, "मदिरा का घड़ा निकलवा लाइये और सब लोग आनन्द से पीजिये।" इस प्रस्ताव से उसने सोचा कि उसकी ओर अधिक लोग हो जायँगे। इतने में दूसरा अफ़सर भी बाहर निकला। दुर्भाग्यवश वह पहलेवालों के समान मतवाला न था और न उनकी भाँति किराये का टट्टू ही था। वह लायन्स ही में उत्पन्न हुआ था। जॉन को देखते ही उसने तुरन्त उसे पहचान लिया। उसने दूसरे ढँग से बात-चीत करनी प्रारम्भ की। वह पिता जान की ओर ईर्षापूर्ण दृष्टि से देखता था जैसा उसके पेशे के लोग अजनबी व्यक्तियों की ओर देखते हैं। वह बिना पलक झपकाये एकटक उसकी ओर देखता रहा। पहली दृष्टि के पश्चात् उसने सवार तथा घोड़े को ऊपर से नीचे तक देखा। फिर उसने कहा, "आप जीनवाल्डो के घोड़े पर सवार हैं। हैं न?"

पुरोहित ने उत्तर दिया, "जी हाँ, उन्होंने अपने साईस द्वारा मेरे पास इसे भेजा था। मैंने अपना घोड़ा मिरिबेल में छोड़ दिया है।"

"तो आप जीनवाल्डो के मित्र हैं?"

पुरोहित ने साहस एवं निष्कपट भाव से कहा, "मैं उनके एक मित्र का मित्र हूँ। मैं कल के उत्सव में सम्मिलित होने के लिये उनके घर पहुँच जाने को अत्यन्त उत्सुक हूँ। इसी कारण वश मैं अपने मित्रों के साथ यहाँ अधिक देर तक नहीं ठहर सकता। मुझे मदिरा का दाम चुकता करके यहाँ से अब चल देना चाहिये।

अफ़सर ने कहा, "इतनी जल्दी नहीं। यदि पुल पर आपसे पास माँगा जायगा, तो आप क्या दिखायगे?"

पुरोहित ने हँसते हुए कहा, "मेरे पास कोई पास नहीं है। बहुत दिनों पहले मेरे पास 'वज़ीर' का हस्ताक्षर युक्त एक पास था, लेकिन दिखाते-दिखाते उसके चिथड़े हो गये। मैं सोचता हूँ कि जीनवाल्डो के किसी मित्र को वज़ीर साहब लौटा न देंगे।" फिर उसने अधीरतापूर्वक दूकानदार से पूछा, "कितने दाम हुए? यदि पुल पर पहुँचने के पूर्व सूर्यास्त हो गया, तो सारे संसार के पास व्यर्थ हो जायँगे। भीड़ होने के पूर्व ही मैं वहाँ पहुँच जाना चाहता हूँ।"

जॉन की दी हुई ताम्र-मुद्राओं को दूकानदार ने ले लिया। फिर उसने दूसरों को सलाम करते हुए चल देने

को अपना घोड़ा घुमाया। पर उस हठी अफ़सर ने उसे रोक कर कहा।

"इतनी जल्दी न कीजिये मेरे मित्र। आप भली-भाँति जानते हो कि आपसे पूछ-ताछ करने का मुझे पूर्ण अधिकार है, और यह जान कर आपको आश्चर्य न होना चाहिये कि मैं आप पर सन्देह करता हूँ। यदि आप मेरे तथा मेरे मित्रों के साथ मेज़ियो के गढ़ तक चलने का कष्ट करें तो मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि वहाँ आपको उतना ही आनन्ददायी पलंग मिलेगा जितना जीनवाल्डो के घर पर। तब प्रातःकाल आप हमारे साथ लायन्स चलिये और क्रिसमस के भोज से पूर्व मैं आपको 'वज़ीर' से भेंट करने ले चलूँगा। वे आपको पास दे देंगे। मुझे निश्चय है कि वे प्रसन्नतापूर्वक आपको दूसरा पास दे देंगे। हाँ, यदि वे आपको अपने पास कुछ दिनों तक रखना चाहें, तो दूसरी बात है।"

इतना कह कर वह ज़ोर से ठहाका मार के हँसा। उसके दो साथियों ने भी उसका साथ दिया।

रहा देहातियों और दूकानदार के लिये, वे तो पहले ही से इन छोटे-मोटे अफ़सरों का अत्याचार जानते थे। अतएव उन्हें इस पर कोई विशेष आश्चर्य न हुआ। उन्हें कुछ ज्ञात ही न हुआ। ल्यूगियो का जॉन जानता था कि मैं उनकी सहानुभूति प्राप्त कर सकता हूँ। पर यदि मैं तनिक भी उन गिरहकटों के

अधिकार का विरोध करूँगा, तो वे मुझे किसी प्रकार की सहायता न दे सकेंगे।" अस्तु।

उसने उसी धैर्य के साथ जिसे उसने प्रारम्भ ही से प्रदर्शित किया था अच्छे भाव से हँसते हुए कहा—और उसका कथन सत्य भी था—कि

"वज़ीर साहब मेरे प्राचीन मित्र हैं और भली-भाँति मेरा स्मरण करेंगे। मान लीजिये कि जब आप लोग कल नगर में आवें तो मैं वहीं आप से मिलूँ और आपके साथ वज़ीर के पास चलूँ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जिस समय आप कहें मैं फाटक पर उपस्थित रहूँगा।"

इतना कह कर उसने अपना हाथ बढ़ाया। पर दूसरे ने कठोर हो कर धीरे से कहा, "नहीं, हम लोग इतने मूर्ख नहीं हैं कि दूसरों का हाथ ग्रहण करें। हम तो बेड़ी पहिनाने ही को दूसरों के हाथ ग्रहण करते हैं। आपको आधे घंटे में हमारे साथ 'मेज़ियो' चलना पड़ेगा। तबतक यदि आपकी इच्छा हो तो हमारे साथ भीतर आकर मद्यपान करें, और नहीं तो यहीं खड़े खड़े ठिठुरें। जैसी आपकी इच्छा हो वैसा ही करें। माइकेल, अन्ट्वायम, इन पर दृष्टि रखना, ये भागने न पायँ।" इतना कह कर वह दूकान में जाने के लिये घूमा। परन्तु उसने देखा कि पुरोहित ने उसका तनिक भी विरोध न किया। बल्कि वह तुरन्त घोड़े पर से उतर पड़ा और घोड़े के खुरों की

देख-भाल करने लगा, क्योंकि किसी कारण से उसकी चाल में रुकावट पड़ती थी।

इसी क्षण सब का ध्यान एक नवागंतुक की ओर आकर्षित हो गया। स्वयं रूखा अफ़सर भी सराय की सीढ़ियों पर बटरागी के गाने को सुन कर रुक गया। वह साफ़ शब्दों में ज़ोर से गा रहा था—

"सुनो, सुनाऊँ मैं सब ही को।
उस प्रेमिक की प्रेम व्यथा को॥
उस सुन्दर प्राचीन कथा को।
सुनो सुनाऊँ मैं सब ही को॥१॥
सम बसन्त सुन्दर सजनी के।
दिन सम स्वच्छमयी रजनी के॥
प्रेम-सत्य-मय गाथा गा के।
सुनो सुनाऊँ मैं सब ही को॥२॥"

उसके शब्द पूर्णतया स्वच्छ और स्वर शुद्ध थे। गाने का ढंग अत्युत्तम और उसका उच्चारण तथा स्वराघात बहुत सुन्दर था। वह बेचारा टट्टू जिस पर वह सवार था हाँफते हुए भीड़ में आया। उस पर धूल जम गई थी। गायक ने पूर्ण सन्तुष्टता के साथ उसकी पीठ से कूद कर उसकी लगाम एक साईस को पकड़ा दी।

"आपका सेवक, महाशयो, आप लोगों का सेवक—क्या इस भले आदमियों की संगति में कोई भी ऐसा नहीं है जो

अधिकार का विरोध करूँगा, तो वे मुझे किसी प्रकार की सहायता न दे सकेंगे।" अस्तु।

उसने उसी धैर्य के साथ जिसे उसने प्रारम्भ ही से प्रदर्शित किया था अच्छे भाव से हँसते हुए कहा—और उसका कथन सत्य भी था—कि

"वज़ीर साहब मेरे प्राचीन मित्र हैं और भली-भाँति मेरा स्मरण करेंगे। मान लीजिये कि जब आप लोग कल नगर में आवें तो मैं वहीं आप से मिलूँ और आपके साथ वज़ीर के पास चलूँ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जिस समय आप कहें मैं फाटक पर उपस्थित रहूँगा।"

इतना कह कर उसने अपना हाथ बढ़ाया। पर दूसरे ने कठोर हो कर धीरे से कहा, "नहीं, हम लोग इतने मूर्ख नहीं हैं कि दूसरों का हाथ ग्रहण करें। हम तो बेड़ी पहिनाने ही को दूसरों के हाथ ग्रहण करते हैं। आपको आधे घंटे में हमारे साथ 'मेज़ियो' चलना पड़ेगा। तबतक यदि आपकी इच्छा हो तो हमारे साथ भीतर आकर मद्यपान करें, और नहीं तो यहीं खड़े खड़े ठिठुरें। जैसी आपकी इच्छा हो वैसा ही करें। माइकेल, अन्टूवायम, इन पर दृष्टि रखना, ये भागने न पायें।" इतना कह कर वह दूकान में जाने के लिये घूमा। परन्तु उसने देखा कि पुरोहित ने उसका तनिक भी विरोध न किया। बल्कि वह तुरन्त घोड़े पर से उतर पड़ा और घोड़े के खुरों की

देख-भाल करने लगा, क्योंकि किसी कारण से उसकी चाल में रुकावट पड़ती थी।

इसी क्षण सब का ध्यान एक नवागंतुक की ओर आकर्षित हो गया। स्वयं रूखा अफ़सर भी सराय की सीढ़ियों पर बटरागी के गाने को सुन कर रुक गया। वह साफ़ शब्दों में ज़ोर से गा रहा था—

"सुनो, सुनाऊँ मैं सब ही को।
उस प्रेमिक की प्रेम व्यथा को॥
उस सुन्दर प्राचीन कथा को।
सुनो सुनाऊँ मैं सब ही को॥१॥
सम बसन्त सुन्दर सजनी के।
दिन सम स्वच्छमयी रजनी के॥
प्रेम-सत्य-मय गाथा गा के।
सुनो सुनाऊँ मैं सब ही को॥२॥"

उसके शब्द पूर्णतया स्वच्छ और स्वर शुद्ध थे। गाने का ढंग अत्युत्तम और उसका उच्चारण तथा स्वराघात बहुत सुन्दर था। वह बेचारा टट्टू जिस पर वह सवार था हाँफते हुए भीड़ में आया। उस पर धूल जम गई थी। गायक ने पूर्ण सन्तुष्टता के साथ उसकी पीठ से कूद कर उसकी लगाम एक साईस को पकड़ा दी।

"आपका सेवक, महाशयो, आप लोगों का सेवक—क्या इस भले आदमियों की संगति में कोई भी ऐसा नहीं है जो

सुमधुर गानों का प्रेमी हो ?" फिर उसने स्वच्छ एवं शुद्ध शब्दों में गाना प्रारम्भ किया।

"मम प्रेमिक-प्रेमिका-व्यथा की,
करुण कहानी कौन सुनेगा ?
जिन खटकों-शोकों के सागर
पार किये हैं कौन गुनेगा ?
अपनी प्यारी 'निकलट' हेतु
किये हैं जिसने निर्भय युद्ध।
उस ऑकेसिन-प्रेम-कथा को
वर्णन करूँ विशुद्ध शुद्ध" ॥

"महाशयो, यह गाना ऐसा सुन्दर है कि इसे सुन कर आप एक साथ हँसने और रोने लगेंगे।"

"क्या आप इस सुन्दर कहानी को सुनेंगे ? अथवा यह इतनी सुन्दर है कि आप इसे सुनना ही नहीं चाहते। हम भजनीकों के आप ही लोगों की भाँति माता-पिता, और भाई-बहिन हैं। जैसे आप लोगों को पुत्र-कन्या-शोक होता है वैसे ही हमें भी होता है।" ये सब बातें उसने बड़ी गम्भीरता एवं आदर के साथ कहीं। "जैसे आप लोग ईश्वर से प्रेम करते हैं वैसे ही हम भी करते हैं। यदि आप लोग चाहें, तो मैं सन्तों और भविष्यद्वक्ताओं की कथाएँ सुनाऊँ। और जब हम उनकी कथा कहते एवं सुनते रहें, तो ईश्वर हम लोगों को आशीर्वाद दें।"

इतना कह कर उसने भिन्न स्वर एवं धीमे शब्दों में धीरे-धीरे यों गाया मानो अश्रुपूरित होकर कह रहा हो—

"यीशु-प्रेम के कारण आया
जो करता सब का उद्धार।
यहाँ ठहर कर मैं गाता हूँ
उसी नाम पर उसका प्यार॥"

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि ल्यूगियो का जॉन इस संकेत को समझ गया। अब उसकी समझ में आया कि वह अपने एक मित्र ही से भाग कर बचने का प्रयत्न कर रहा था। वह बेचारा घोड़ा जिस पर चढ़ कर बटरागी ने सीयर-क्लैंक पर सवार पुरोहित को सिपाहियों के चक्कर में पड़ने से पूर्व पकड़ना चाहा था अब भी उसके सामने हाँफ रहा था। पर भजनीक बेचारा क्या करे? वह अपने कार्य में असफल रहा। परन्तु अब भी साहस करके उसने अपने को भी उसी जाल में फँसाने का निश्चय किया। उसने उस नन्हें से गीत द्वारा यह प्रकट कर दिया कि वह पुरोहित का मित्र है और उन विरक्त दर्शकों तथा कट्टर शत्रुओं के बीच में उसका विश्वास किया जा सकता है। ल्यूगियो के जॉन को एक दृष्टि द्वारा भी उसका उत्तर देने को साहस न हुआ। गायक को उत्तर की आवश्यकता भी न थी और न इसी की आवश्यकता थी कि जॉन उसकी ओर दृष्टि करे। जब सब लोग दूकान के एक

कमरे में बैठ गये, तब वह कहने लगा, मानो वह अपनी कला प्रदर्शित करने को बड़बड़ा रहा हो—

"अथवा मैं वह नवीन गीत गाता हूँ जिसके द्वारा स्वर्ण-पुष्प पारितोषिक के रूप में प्राप्त किया गया था।"

"चरथल के इक सुन्दर थल में,
ज्ञात देश के कोने में
पुष्प एक अंकुरित हुआ विक-
सित सुगन्धि मनु सोने में।
जड़ थी उसकी गोबर में पर
थी सुगन्धि लाती उसमें।
ऋतु बसन्त के सुन्दर दिन में
छटा बरसती थी उसमें॥

जैसे उसके मुख से शब्द निकलते थे, वैसे ही उसकी ध्वनि से लोग प्रभावित हो रहे थे। परन्तु वह रुक गया और बोला, "लड़के, मेरी छोटी सारंगी तो लाना। यदि मैं इन महानुभावों के सम्मुख गाऊँगा, तो मैं बाजा भी बजाऊँगा। केवल आप लोग यह बतला दीजिये कि कौन सा गाना गाऊँ?"

ल्यूगियो के जॉन ने कहा, "जो गाना आपने खीष्ट के प्रेम के निमित्त उसके नाम पर गाया था वही गाइये।" इस प्रकार उसने गायक से प्रथम बार बात-चीत की।

तब मुख्य अफ़सर ने मुँह बिचका कर कहा, "छिः, क्या हम भक्त बनने जा रहे हैं ? वह गाना हम लोगों के लिये अत्यन्त प्राचीन और नीरस है। कोई प्रेम-गीत गाओ।

सराय के स्वामी ने कहा, "अजी, प्रेम गीत को छोड़िये । यहाँ युवतियों ने निकोलेट और ऑकेसिन के विषय में बहुत कुछ सुना है। वे उस गान से ऊब गई हैं। वे पुष्पवाला नया गाना सुनना चाहती हैं। गायक महाशय, क्या आप यह गाना उनको सिखा सकते हैं?"

इतने में श्रीकुमारी ऐनी ने अपनी कुछ सहेलियों के साथ सलज्ज भाव से कमरे में प्रवेश किया। गायक ने उठते हुए विनम्र भाव से कहा, "मैं उसे गा सकता हूँ, और श्रीकुमारी ऐनी ऐसी शिष्या को सिखा भी सकता हूँ। गायक ने वहाँ पर बैठे हुए बालकों को उठा कर युवतियों को बैठने के लिये स्थान ख़ाली करा दिया। फिर दो बार सारंगी का स्वर मिला कर गाना प्रारम्भ कर दिया।

१

चरथल के इक सुन्दर थल में, ज्ञात देश के कोने में।
पुष्प एक अंकुरित हुआ विकसित सुगन्धि मनु सोने में॥
जड़ थी उसकी गोबर में पर थी सुगन्धि लातीं उसमें।
ऋतु बसन्त के सुन्दर दिन में छटा बरसती थी उसमें॥
पर बसन्त का अन्त हुआ फिर पतझड़ की आँधी आई।
ऋतु हेमन्त की जमी बरफ़ पुनि सारी पृथ्वी पर छाई॥

कमरे में बैठ गये, तब वह कहने लगा, मानो वह अपनी कला प्रदर्शित करने को बड़बड़ा रहा हो—

"अथवा मैं वह नवीन गीत गाता हूँ जिसके द्वारा स्वर्ण-पुष्प पारितोषिक के रूप में प्राप्त किया गया था।"

"चरथल के इक सुन्दर थल में,
ज्ञात देश के कोने में
पुष्प एक अंकुरित हुआ विक-
सित सुगन्धि मनु सोने में।
जड़ थी उसकी गोबर में पर
थी सुगन्धि लाती उसमें।
ऋतु बसन्त के सुन्दर दिन में
छटा बरसती थी उसमें॥

जैसे उसके मुख से शब्द निकलते थे, वैसे ही उसकी ध्वनि से लोग प्रभावित हो रहे थे। परन्तु वह रुक गया और बोला, "लड़के, मेरी छोटी सारंगी तो लाना। यदि मैं इन महानुभावों के सम्मुख गाऊँगा, तो मैं बाजा भी बजाऊँगा। केवल आप लोग यह बतला दीजिये कि कौन सा गाना गाऊँ?"

ल्यूगियो के जॉन ने कहा, "जो गाना आपने खीष्ट के प्रेम के निमित्त उसके नाम पर गाया था वही गाइये।" इस प्रकार उसने गायक से प्रथम बार बात-चीत की।

तब मुख्य अफ़सर ने मुँह बिचका कर कहा, "छिः, क्या हम भक्त बनने जा रहे हैं ? वह गाना हम लोगों के लिये अत्यन्त प्राचीन और नीरस है। कोई प्रेम-गीत गाओ।

सराय के स्वामी ने कहा, "अजी, प्रेम गीत को छोड़िये। यहाँ युवतियों ने निकोलेट और ऑकेसिन के विषय में बहुत कुछ सुना है। वे उस गान से ऊब गई हैं। वे पुष्पवाला नया गाना सुनना चाहती हैं। गायक महाशय, क्या आप यह गाना उनको सिखा सकते हैं ?"

इतने में श्रीकुमारी ऐनी ने अपनी कुछ सहेलियों के साथ सलज्ज भाव से कमरे में प्रवेश किया। गायक ने उठते हुए विनम्र भाव से कहा, "मैं उसे गा सकता हूँ, और श्रीकुमारी ऐनी ऐसी शिष्या को सिखा भी सकता हूँ। गायक ने वहाँ पर बैठे हुए बालकों को उठा कर युवतियों को बैठने के लिये स्थान ख़ाली करा दिया। फिर दो बार सारंगी का स्वर मिला कर गाना प्रारम्भ कर दिया।

१

चरथल के इक सुन्दर थल में, ज्ञात देश के कोने में।
पुष्प एक अंकुरित हुआ विकसित सुगन्धि मनु सोने में॥
जड़ थी उसकी गोबर में पर थी सुगन्धि लातीं उसमें।
ऋतु बसन्त के सुन्दर दिन में छटा बरसती थी उसमें॥
पर बसन्त का अन्त हुआ फिर पतझड़ की आँधी आई।
ऋतु हेमन्त की जमी बरफ़ पुनि सारी पृथ्वी पर छाई॥

कमरे में बैठ गये, तब वह कहने लगा, मानो वह अपनी कला प्रदर्शित करने को बड़बड़ा रहा हो—

"अथवा मैं वह नवीन गीत गाना हूँ जिसके द्वारा स्वर्ण-पुष्प पारितोषिक के रूप में प्राप्त किया गया था।"

"चरथल के इक सुन्दर थल में,
ज्ञात देश के कोने में
पुष्प एक अंकुरित हुआ विक-
सित सुगन्धि मनु सोने में।
जड़ थी उसकी गोबर में पर
थी सुगन्धि लाती उसमें।
ऋतु बसन्त के सुन्दर दिन में
छटा बरसती थी उसमें॥

जैसे उसके मुख से शब्द निकलते थे, वैसे ही उसकी ध्वनि से लोग प्रभावित हो रहे थे। परन्तु वह रुक गया और बोला, "लड़के, मेरी छोटी सारंगी तो लाना। यदि मैं इन महानुभावों के सम्मुख गाऊँगा, तो मैं बाजा भी बजाऊँगा। केवल आप लोग यह बतला दीजिये कि कौन सा गाना गाऊँ?"

ल्यूगियो के जॉन ने कहा, "जो गाना आपने खीष्ट के प्रेम के निमित्त उसके नाम पर गाया था वही गाइये।" इस प्रकार उसने गायक से प्रथम बार बात-चीत की।

तब मुख्य अफ़सर ने मुँह बिचका कर कहा, "छिः, क्या हम भक्त बनने जा रहे हैं ? वह गाना हम लोगों के लिये अत्यन्त प्राचीन और नीरस है। कोई प्रेम-गीत गाओ।

सराय के स्वामी ने कहा, "अजी, प्रेम गीत को छोड़िये। यहाँ युवतियों ने निकोलेट और ऑकेसिन के विषय में बहुत कुछ सुना है। वे उस गान से ऊब गई हैं। वे पुष्पवाला नया गाना सुनना चाहती हैं। गायक महाशय, क्या आप यह गाना उनको सिखा सकते हैं ?"

इतने में श्रीकुमारी ऐली ने अपनी कुछ सहेलियों के साथ सलज्ज भाव से कमरे में प्रवेश किया। गायक ने उठते हुए विनम्र भाव से कहा, "मैं उसे गा सकता हूँ, और श्रीकुमारी ऐली ऐसी शिष्या को सिखा भी सकता हूँ। गायक ने वहाँ पर बैठे हुए बालकों को उठा कर युवतियों को बैठने के लिये स्थान खाली करा दिया। फिर दो बार सारंगी का स्वर मिला कर गाना प्रारम्भ कर दिया।

१

चरथल के इक सुन्दर थल में, ज्ञात देश के कोने में।
पुष्प एक अंकुरित हुआ विकसित सुगन्धि मनु सोने में ॥
जड़ थी उसकी गोबर में पर थी सुगन्धि लातीं उसमें।
ऋतु बसन्त के सुन्दर दिन में छटा बरसती थी उसमें ॥
पर बसन्त का अन्त हुआ फिर पतझड़ की आँधी आई।
ऋतु हेमन्त की जमी बरफ़ पुनि सारी पृथ्वी पर छाई ॥

कमरे में बैठ गये, तब वह कहने लगा, मानो वह अपनी कला प्रदर्शित करने को बड़बड़ा रहा हो—

"अथवा मैं वह नवीन गीत गाता हूँ जिसके द्वारा स्वर्ण-पुष्प पारितोषिक के रूप में प्राप्त किया गया था।"

"चरथल के इक सुन्दर थल में,
ज्ञात देश के कोने में
पुष्प एक अंकुरित हुआ विक-
सित सुगन्धि मनु सोने में।
जड़ थी उसकी गोबर में पर
थी सुगन्धि लाती उसमें।
ऋतु बसन्त के सुन्दर दिन में
छटा बरसती थी उसमें॥

जैसे उसके मुख से शब्द निकलते थे, वैसे ही उसकी ध्वनि से लोग प्रभावित हो रहे थे। परन्तु वह रुक गया और बोला, "लड़के, मेरी छोटी सारंगी तो लाना। यदि मैं इन महानुभावों के सम्मुख गाऊँगा, तो मैं बाजा भी बजाऊँगा। केवल आप लोग यह बतला दीजिये कि कौन सा गाना गाऊँ?"

ल्यूगियो के जॉन ने कहा, "जो गाना आपने ख्रीष्ट के प्रेम के निमित्त उसके नाम पर गाया था वही गाइये।" इस प्रकार उसने गायक से प्रथम बार बात-चीत की।

तब मुख्य अफ़सर ने मुँह बिचका कर कहा, "छिः, क्या हम भक्त बनने जा रहे हैं ? वह गाना हम लोगों के लिये अत्यन्त प्राचीन और नीरस है। कोई प्रेम-गीत गाओ।

सराय के स्वामी ने कहा, "अजी, प्रेम गीत को छोड़िये । यहाँ युवतियों ने निकोलेट और ऑकेसिन के विषय में बहुत कुछ सुना है। वे उस गान से ऊब गई हैं। वे पुष्पवाला नया गाना सुनना चाहती हैं। गायक महाशय, क्या आप यह गाना उनको सिखा सकते हैं ?"

इतने में श्रीकुमारी ऐली ने अपनी कुछ सहेलियों के साथ सलज्ज भाव से कमरे में प्रवेश किया। गायक ने उठते हुए विनम्र भाव से कहा, "मैं उसे गा सकता हूँ, और श्रीकुमारी ऐली ऐसी शिष्या को सिखा भी सकता हूँ। गायक ने वहाँ पर बैठे हुए बालकों को उठा कर युवतियों को बैठने के लिये स्थान ख़ाली करा दिया। फिर दो बार सारंगी का स्वर मिला कर गाना प्रारम्भ कर दिया।

१

चरथल के इक सुन्दर थल में, ज्ञात देश के कोने में।
पुष्प एक अंकुरित हुआ विकसित सुगन्धि मनु सोने में॥
जड़ थी उसकी गोबर में पर थी सुगन्धि लातीं उसमें।
ऋतु बसन्त के सुन्दर दिन में छटा बरसती थी उसमें॥
पर बसन्त का अन्त हुआ फिर पतझड़ की आँधी आई।
ऋतु हेमन्त की जमी बरफ़ पुनि सारी पृथ्वी पर छाई॥

सुमधुर गानों का प्रेमी हो ?" फिर उसने स्वच्छ एवं शुद्ध शब्दों में गाना प्रारम्भ किया।

"मम प्रेमिक-प्रेमिका-व्यथा की,
करुण कहानी कौन सुनेगा ?
जिन खटकों-शोकों के सागर
पार किये हैं कौन गुनेगा ?
अपनी प्यारी 'निकलट' हेतु
किये हैं जिसने निर्भय युद्ध।
उस ऑकेसिन-प्रेम-कथा को
वर्णन करूँ विशुद्ध शुद्ध" ॥

"महाशयो, यह गाना ऐसा सुन्दर है कि इसे सुन कर आप एक साथ हँसने और रोने लगेंगे।"

"क्या आप इस सुन्दर कहानी को सुनेंगे ? अथवा यह इतनी सुन्दर है कि आप इसे सुनना हो नहीं चाहते। हम भजनीकों के आप ही लोगों की भाँति माता-पिता, और भाई-बहिन हैं। जैसे आप लोगों को पुत्र-कन्या-शोक होता है वैसे ही हमें भी होता है।" ये सब बातें उसने बड़ी गम्भीरता एवं आदर के साथ कहीं। "जैसे आप लोग ईश्वर से प्रेम करते हैं वैसे ही हम भी करते हैं। यदि आप लोग चाहें, तो मैं सन्तों और भविष्यद्वक्ताओं की कथाएँ सुनाऊँ। और जब हम उनकी कथा कहते एवं सुनते रहें, तो ईश्वर हम लोगों को आशीर्वाद दें।"

इतना कह कर उसने भिन्न स्वर एवं धीमे शब्दों में धीरे-धीरे यों गाया मानो अश्रुपूरित होकर कह रहा हो—

"यीशु-प्रेम के कारण आया
जो करता सब का उद्धार।
यहाँ ठहर कर मैं गाता हूँ
उसी नाम पर उसका प्यार॥"

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि ल्यूगियो का जॉन इस संकेत को समझ गया। अब उसकी समझ में आया कि वह अपने एक मित्र ही से भाग कर बचने का प्रयत्न कर रहा था। वह बेचारा घोड़ा जिस पर चढ़ कर बटरागी ने सीयर-क्लैंफ पर सवार पुरोहित को सिपाहियों के चक्कर में पड़ने से पूर्व पकड़ना चाहा था अब भी उसके सामने हाँफ रहा था। पर भजनीक बेचारा क्या करे? वह अपने कार्य में असफल रहा। परन्तु अब भी साहस करके उसने अपने को भी उसी जाल में फँसाने का निश्चय किया। उसने उस नन्हें से गीत द्वारा यह प्रकट कर दिया कि वह पुरोहित का मित्र है और उन विरक्त दर्शकों तथा कट्टर शत्रुओं के बीच में उसका विश्वास किया जा सकता है। ल्यूगियो के जॉन को एक दृष्टि द्वारा भी उसका उत्तर देने को साहस न हुआ। गायक को उत्तर की आवश्यकता भी न थी और न इसी की आवश्यकता थी कि जॉन उसकी ओर दृष्टि करे। जब सब लोग दूकान के एक

कमरे में बैठ गये, तब वह कहने लगा, मानो वह अपनी कला प्रदर्शित करने को बड़बड़ा रहा हो—

"अथवा मैं वह नवीन गीत गाता हूँ जिसके द्वारा स्वर्ण-पुष्प पारितोषिक के रूप में प्राप्त किया गया था।"

"चरथल के इक सुन्दर थल में,
ज्ञात देश के कोने में
पुष्प एक अंकुरित हुआ विक-
सित सुगन्धि मनु सोने में।
जड़ थी उसकी गोबर में पर
थी सुगन्धि लाती उसमें।
ऋतु बसन्त के सुन्दर दिन में
छटा बरसती थी उसमें॥

जैसे उसके मुख से शब्द निकलते थे, वैसे ही उसकी ध्वनि से लोग प्रभावित हो रहे थे। परन्तु वह रुक गया और बोला, "लड़के, मेरी छोटी सारंगी तो लाना। यदि मैं इन महानुभावों के सम्मुख गाऊँगा, तो मैं बाजा भी बजाऊँगा। केवल आप लोग यह बतला दीजिये कि कौन सा गाना गाऊँ?"

ल्यूगियो के जॉन ने कहा, "जो गाना आपने खीष्ट के प्रेम के निमित्त उसके नाम पर गाया था वही गाइये।" इस प्रकार उसने गायक से प्रथम बार बात-चीत की।

तब मुख्य अफ़सर ने मुँह बिचका कर कहा, "छिः, क्या हम भक्त बनने जा रहे हैं ? वह गाना हम लोगों के लिये अत्यन्त प्राचीन और नीरस है। कोई प्रेम-गीत गाओ।

सराय के स्वामी ने कहा, "अजी, प्रेम गीत को छोड़िये। यहाँ युवतियों ने निकोलेट और ऑकेसिन के विषय में बहुत कुछ सुना है। वे उस गान से ऊब गई हैं। वे पुष्पवाला नया गाना सुनना चाहती हैं। गायक महाशय, क्या आप यह गाना उनको सिखा सकते हैं?"

इतने में श्रीकुमारी ऐनी ने अपनी कुछ सहेलियों के साथ सलज्ज भाव से कमरे में प्रवेश किया। गायक ने उठते हुए विनम्र भाव से कहा, "मैं उसे गा सकता हूँ, और श्रीकुमारी ऐनी ऐसी शिष्या को सिखा भी सकता हूँ। गायक ने वहाँ पर बैठे हुए बालकों को उठा कर युवतियों को बैठने के लिये स्थान ख़ाली करा दिया। फिर दो बार सारंगी का स्वर मिला कर गाना प्रारम्भ कर दिया।

१

चरथल के इक सुन्दर थल में, ज्ञात देश के कोने में।
पुष्प एक अंकुरित हुआ विकसित सुगन्धि मनु सोने में॥
जड़ थी उसकी गोबर में पर थी सुगन्धि लातीं उसमें।
ऋतु बसन्त के सुन्दर दिन में छटा बरसती थी उसमें॥
पर बसन्त का अन्त हुआ फिर पतझड़ की आँधी आई।
ऋतु हेमन्त की जमी बरफ़ पुनि सारी पृथ्वी पर छाई॥

२

चरथल का सुन्दर स्थल ही है संसार सुहाता।
दुष्टमयी होकर हम सब को प्रति-दिन यही लुभाता॥
जीवन ज्योति हमारी पापों से हो जाती नष्ट।
फिर हम करने लगते हैं सब नीच कार्य अरु भ्रष्ट॥
मूर्ख अकेले जीवन-नौका लेकर करते पार।
पीछे फिर कर कभी न देखा है क्या यह संसार॥
तब जाँचों की निर्दय आँधी आकर करती जाँच।
हम मूरख टकराते फिरते नीच दुष्टता साथ॥

३

मैं कहता हूँ, बाला कलिका चरथल में उत्पन्न हुई।
हम सब ही की भाँति बेचारी की सुन्दरता नष्ट हुई॥
प्रारम्भिक जीवन में हम सब सुन्दर वस्त्र पहिनते हैं।
कर भोजन वीरत्व पूर्ण इस दुष्ट जगत में पलते हैं॥
फिर आकर मानव-वैरी है हरता सब का ज्ञान।
फँस कर कुटिल फन्द में उसके हो जाते हैरान॥
अस्तु ईश ने स्वर्ग बनाया ऊपर सर्वाकाश।
भीतर जिसके सूर्य-रश्मियाँ करती रहीं प्रकाश॥
ऋतु बसन्त की कलिका फूली जन्मस्थल को भूल गई।
भूली जन्म देवैया को निज मदमाती हो फूल गई॥
हुआ अन्त क्या उस बौरी का? पापमई का जो होता।
एकान्त स्थल में मर कर जो निज स्वत्वों को है खो देता॥

४

वह गोबर घूरा युत कलिका वृद्धि पाय मुरझाय गई।
है धूल वही जिससे आदम की हस्ती जग में आय गई॥
उनकी सन्तति ने निर्लज्जा पाप मयी जीवन पाया।
उस जीवन की हस्ती से यह श्वास निकल उत ही धाया॥
हम पर्वत के उच्च शिखर पर चढ़ते और उतरते हैं।
श्रम कर कर दिन रात घिरे चिन्ताओं से हम मरते हैं॥
मरने पर मर-मर कर जोड़ा सारा धन रह जाता है।
केवल इक मिट्टी का ढेला साथ हमारे जाता है॥

५

वह निर्दय आँधी जिसने उस कलिका का है नाश किया।
है मद, लालच जिसने हम सब में है अपना बास किया॥
चोरी करना, धोखा देना वही सिखाते हैं हमको।
इसी हेतु दुख, मृत्यु सभी कुछ प्राप्त हुआ करते सब को॥
ऋतु हेमन्त का पाला जो अस्तित्व फूल का खोता है।
है वह मृत्यु भयानक जिससे सारा जग रो देता है॥
मृत्यु पकड़ निज पंजे में कर चूर-मूर जीवन सारा।
देती फेंक उसी घूरे पर जहाँ पला था बेचारा॥

युवतियाँ ताल पर अपने सिर हिला रही थीं। कदाचित् ताल में शब्दों की अपेक्षा उन्हें अधिक आनन्द मिल रहा था। परन्तु सैनिकों के सरदार ने सम्पूर्ण गाने पर अपनी अप्रसन्नता प्रकट की। उसने कहा,

"जीन गला तर करने के हेतु उसे थोड़ी सी पेया दो। गोबर का घूरा और मृत्यु, बस ये ही गाने के लिये हैं ? उसको थोड़ी सी मदिरा दो, थोड़ी सी मुझे दो और थोड़ी-थोड़ी सब को दो। मेरे मित्र के मित्र, आप भी थोड़ी पीजिये ताकि यह प्रकट हो जाय कि आप हम से द्वेष नहीं रखते। युवतियो, तुम लोग भी पीयो, सब लोग पीयो, और तब तुम प्रेम-गीत गाओ।"

बड़ी गड़बड़ और हलचल के पश्चात् मदिरा सब को परसी गई और कप्तान महाशय की आज्ञाओं का पालन किया गया। इस बीच में गायक अपनी सारंगी का सुर मिला रहा था और कभी एक स्वर छेड़ता था तो कभी दूसरा। जब अन्त में कप्तान ने कहा, "हाँ, अब हम सब तैयार हैं", तब उसने वही राग छेड़ा जिसे गा कर प्रारम्भ में उनका ध्यान आकर्षित किया था।

... ...

"निकोलेट और ऑकेसिन की कथा"

श्रीमती, तथा श्रीमान्, आप लोग तो जानते ही होंगे कि 'वैलेन्स' के 'कॉउण्ट बोगर्स' ने 'ब्यूकेयर' के 'कॉउण्ट गैरिन' से युद्ध करने का निश्चय किया। और इतनी निर्दयता से युद्ध हुआ कि कॉउण्ट बोगर्स प्रति दिन अपने शूरवीर सैनिकों, पैदलों तथा घुड़सवारों को लेकर नगर-रक्षिणी भित्तियों पर

चढ़ आते थे और घरों को जला कर मनुष्यों को मार डालते थे और भेड़ें चुरा ले जाते थे।

कॉउण्ट गैरिन वृद्ध हो गये थे। उन्होंने अपना जीवन-काल बुरी भाँति से बिताया था। उनके कोई सन्तति न थी। उनका उत्तराधिकारी एक व्यक्ति था जिसका नाम 'ऑकेसिन' था। वह भला एवं सुन्दर था। उसके शरीर की बनावट अच्छी थी और वह कद का लम्बा था। उसके हाथ-पैर बलवान् एवं दृढ़ थे। उसके बाल सुनहले तथा घुंघराले थे। उसकी आँखें श्वेतता-मिश्रित नीली थीं और सदैव हँसती सी प्रतीत होती थीं। उसकी नाक सुन्दर और ऊँची थी। उसके मुख पर कान्ति विराजमान थी। उसका सारा अंग मनोहर था, कहीं किसी प्रकार की त्रुटि नहीं थी। परन्तु यह नवयुवक, सब लोगों की भाँति, इतना प्रेम के वश में हो गया था कि और कुछ करना उसे सुहाता ही न था। वह शूरवीर नहीं बनना चाहता था, हथियार ग्रहण करना नहीं चाहता था और न दंगल ही में जाना चाहता था। जो कुछ उसे करना चाहिये था, वह कुछ भी नहीं करना चाहता था।

उसके पिता को इससे बड़ा दुःख हुआ। एक दिन प्रातःकाल उसने कहा—

"मेरे पुत्र, हथियार धारण कर घोड़े पर चढ़ लो और अपने देश तथा प्रजा की रक्षा करो। यदि वे तुम को अपने बीच में केवल देखेंगे, तो इससे उनमें अत्यधिक साहस आ-

जायगा। तब वे अपने जानमाल की रक्षा के लिये तथा तुम्हारे और मेरे राज्य के लिये जी तोड़ कर युद्ध करेंगे।"

ऑकेसिन ने कहा, "पिताजी, आप यह मुझ से क्यों कह रहे हैं? यदि मैं अपनी प्यारी निकोलेट को बिना प्राप्त किये ही घोड़े पर चढ़ूँ, अथवा दंगल या युद्ध में भाग लूँ, तो ईश्वर मेरी प्रार्थना कभी न सुनें।"

पिता ने कहा, "मेरे पुत्र, यह कदापि नहीं हो सकता। तुम इस दासी युवती के विषय के स्वप्न दूर करो। तुर्कों ने इसे कहीं से मोल लाकर यहाँ के 'विसकॉउण्ट' को बेचा था। उसने उसको शिक्षा-दीक्षा दी। वह उसकी गोद ग्रहण की हुई पुत्री है। किसी दिन वह उसका ब्याह किसी ऐसे वीर व्यक्ति के साथ करेगा जो अपनी तलवार से अपनी जीविका कमायेगा। मेरे पुत्र, जब तुम्हारे ब्याह का समय आयेगा तो मैं किसी राजा अथवा कॉउण्ट की कन्या से तुम्हारा पाणिग्रहण करा दूँगा। इस 'प्रॉविन्स' में कोई भी ऐसा धनी व्यक्ति नहीं है जो प्रसन्नतापूर्वक अपनी पुत्री तुम्हें न दे दे।"

इसके उत्तर में ऑकेसिन ने कहा, "हाय पिताजी, इस संसार में जहाँ कहीं मेरी प्रियतमा निकोलेट जायगी, वहीं की भूमि धन्य हो जायगी। यदि वह फ्रांस अथवा इंग्लैंण्ड की रानी हो जाय, यदि वह जर्मनी अथवा ग्रीस की महारानी हो जाय, तो उसकी उदारता एवं सुन्दरता अधिक नहीं हो सकती और न उसके गुणों ही की उत्तमता बढ़ सकती है।"

इतना कह कर गायक ने ऐनी की ओर सिर हिलाया। वह इस गीत को जानती थी। एक और युवती ने ऐनी का साथ दिया। फिर तीनों मिल कर गाने लगे।

उस पुलिस अफ़सर का विचार था कि सराय के आस-पास के लोग इस गाने के कथानक, भाव एवं धार्मिकता से आकर्षित हो जायँगे। उसका यह विचार ठीक निकला। ज्यों-ज्यों गाने के रूप में कहानी आगे बढ़ती गई, त्यों-त्यों बाहरी आलसियों की भीड़ भीतर इकट्ठी होने लगी। वह साईस जिसके हाथ में घोड़े सौंप दिये गये थे उन्हें एक लड़के को थमा कर भीतर चला गया। लड़के ने भी यह जान कर कि भीतर क्या हो रहा है सब घोड़ों की लगामें एक में बाँध दीं और अस्तबल के एक कोने में सभों को एक रस्सी द्वारा बाँध कर भीड़ में घुस गया। दूसरे झोंपड़े से जो रसोई बनाने के काम आता था दो-तीन स्त्रियाँ और आ गईं। वे ऐनी से अवस्था में अधिक थीं और उसकी सखियाँ थीं। उनके बैठने के लिये भी स्थान खाली कर दिया गया। इस अन्तिम प्रबन्ध में कुछ समय लग गया, पर ज्यों हीं वे स्त्रियाँ बैठ गईं, गायक ने अपनी कहानी फिर प्रारम्भ कर दी।

जब ब्यूकेयर के कॉउण्ट गैरिन ने देखा कि ऑकेसिन के हृदय से निकोलेट का निकाल फेंकना दुष्कर है तो वह अपनी प्रजा विस्कॉउण्ट के पास गया और उससे कहा :—

"महाशय विस्कॉउएट, आपकी दत्तक-पुत्री निकोलेट से हम स्वतंत्र होना चाहते हैं। जिस देश में वह उत्पन्न हुई उसका सत्यानाश हो जाय, क्योंकि उसीके कारण मैं अपने पुत्र ऑकेसिन को खो रहा हूँ। उसको इस समय शूरमा होना चाहिये, पर वह तो सब कार्यों से हाथ खींच बैठा है। यदि मैं निकोलेट को पकड़ पाऊँगा तो उसे जीवित जला दूँगा और उसके साथ आपको भी।"

विस्कॉउएट ने उत्तर दिया, "महाराज, जो कुछ हुआ है उसके लिये मुझे बहुत शोक है, पर इसमें मेरा क्या अपराध है? मैंने अपने रुपयों से निकोलेट को मोल लिया, उसे शिक्षा-दीक्षा दी और वह मेरी दत्तक-पुत्री है। मेरी इच्छा थी कि उसका ब्याह एक सुन्दर नवयुवक से कर देता। वह उसकी जीविका का प्रबन्ध कर सकता है और आपका पुत्र ऑकेसिन तो इतना भी नहीं कर सकता। परन्तु यदि आपकी इच्छा ऐसी ही है, तो मैं अपनी दत्तक-पुत्री को एक ऐसे देश में भेज दूँगा जहाँ ऑकेसिन उसकी झलक भी न पा सकेगा।"

वहाँ के श्रोतागण जिन्होंने ऐसी भावपूर्ण कथा कभी नहीं सुनी थी भजनीक के और पास सटने लगे। अपने विशेष गुण द्वारा, जिसे पढ़ कर प्राप्त करना कठिन है, वह गायक उनसे भली-भाँति हिलमिल कर बातें करने लगा। जब वह कमरे में

इधर-उधर देखता था तो उसे श्रोताओं के नेत्रों से सहानुभूति टपकती हुई दृष्टिगोचर होती थी। यह देख कर उसका साहस और भी द्विगुणित हो गया और उसके शब्द अधिक रहस्य-पूर्ण होने लगे। अन्त में जब उसने पूर्णतया निश्चित कर लिया कि स्त्रियों के आने के समय भीड़ की गड़बड़ी में ल्यूगियो का जॉन अपने स्थान से उठ कर कमरे से बाहर निकल गया, तब उसने कप्तान की ओर मुँह करके कहना प्रारम्भ किया।

"कॉउण्ट गैरिन ने विस्कॉउण्ट से कहा, "आप उसे अवश्य भेज दीजिये, नहीं तो आपके ऊपर दुर्भाग्यों का पहाड़ टूट पड़ेगा।" इतना कह कर वह चला गया।

"विस्कॉउण्ट का महल ऊँची दीवालों से घिरा था और उसके चारों ओर घने बाग़ लगे थे। उसने निकोलेट को उसी महल के सब से ऊँचे कमरे में रख दिया। उसके साथ एक बूढ़ी नौकरानी छोड़ दी गई। उसके खाने-पीने का सामान भी उसी में रख दिया। फिर उसने उस कमरे के गुप्त द्वार पर ताला लगा दिया; ताकि उसके भीतर कोई न जा सके। केवल एक खिड़की खुली छोड़ दी गई। यह खिड़की बड़ी सांकड़ी थी और बाग़ की ओर खुलती थी।"

फिर कहानी कहनेवाले ने उन दो लड़कियों की ओर संकेत किया और तीनों मिल कर फिर गाने लगे।

गाना समाप्त होने पर गायक ने फिर कहानी प्रारम्भ की।

"निकोलेट बन्दीगृह में बन्द कर दी गई और नगर में ढिंढोरा पिट गया कि वह न जाने कहाँ लुप्त हो गई। कोई कहता था कि वह भाग गई और कोई कहता था कि कॉउण्ट गैरिस ने उसे मरवा डाला। इस समाचार से कुछ लोग बहुत प्रसन्न हुए। पर ऑकेसिन को प्रसन्नता कहाँ? हताश होकर वह नगर के विस्कॉउण्ट से मिलने गया।

उसने विस्कॉउण्ट से पूछा, "श्रीमान् विस्कॉउण्टजी, आपने मेरी प्राण प्यारी निकोलेट को क्या कर दिया? मैं संसार की सम्पूर्ण वस्तुओं से उसे अधिक प्रेम करता हूँ। आपने उसे कहीं छिपा दिया है। निश्चय जानिये कि यदि मैं उसके लिये अपने प्राण देदूँगा, तो मेरे मरने का सारा पाप आपके सिर होगा। क्योंकि आप ही मेरी प्रियतमा को मुझसे अलग करके मुझे मरने के लिये बाध्य कर रहे हैं।"

विस्कॉउण्ट ने उत्तर दिया, "महाशय, आप निकोलेट का ध्यान छोड़ दीजिये। वह आपके योग्य नहीं है। वह एक दासी है। मैंने उसे अपने रुपयों से मोल लिया है। उसका ब्याह उसी के समान किसी दरिद्र नवयुवक से होना उचित है, न कि आप ऐसे एक राजकुमारी से। आपको तो किसी राजकुमारी अथवा कॉउण्ट की पुत्री से ब्याह करना चाहिए। सोचिये तो, यदि आप इस दरिद्र की कन्या से विवाह कर

लेंगे, तो आपका क्या होगा ? क्या आप कभी प्रसन्न रह सकेंगे ? क्योंकि ऐसा करने से आपकी आत्मा कभी स्वर्ग नहीं जा सकती, उसे सदैव नर्क-वास करना पड़ेगा।"

ऑकेसिन ने क्रुद्ध स्वर से कहा, "स्वर्ग ? स्वर्ग लेकर मैं क्या करूँगा ? यदि मुझे वहाँ प्रियतमा निकोलेट के बिना ही जाना पड़ेगा, तो मैं वहाँ जाना नहीं चाहता। स्वर्ग ! क्या आप सोचते हैं कि मैं वहाँ जाना चाहता हूँ। आप जानते हैं वहाँ कौन जाता है ? वहाँ जाते हैं बूढ़े पुरोहित, लंगड़े-लूले, अन्धे-काने जो रात-दिन वेदी पर भूखों मर कर, नंगे रह कर सिर रगड़ते हैं, जो मरने से पूर्व ही मर जाते हैं, जो सदैव दुःखी एवं बीमार रहते हैं और वेदी पर पड़े-पड़े काँपा करते हैं स्वर्ग में ऐसे ही लोग जाते हैं। इन लोगों के साथ में मैं स्वर्ग नहीं जाना चाहता। हाँ नर्क में मैं प्रसन्नतापूर्वक चला जाऊँगा, क्योंकि नर्क में जाते हैं भले पादरी, सुन्दर शूरमा जो लड़ाई अथवा बड़े युद्ध में प्राण देते हैं। वहाँ जाते हैं सैनिक और उच्च कुल के लोग। हाँ, इनके साथ मैं प्रसन्नतापूर्वक नर्क जाने को तैयार हूँ।"

विस्काँउएट ने कहा, "रहने दीजिये, जो कुछ आप कह रहे हैं उसका शतांश भी ठीक नहीं है। आप निकोलेट को कभी भी नहीं देख सकते। यदि आपका रंग-ढंग यही रहा, तो न तो वह आपके लिये अच्छा होगा और न मेरे लिये। ऐसा करने में

आप, मैं, और निकोलेट आपके पिता की आज्ञा से जीवित जला दिये जायँगे।"

क्रुद्ध ऑकेसिन बड़े ज़ोर से 'हाय' करते हुए विस्कॉउएट के यहाँ से चल दिया। विस्कॉउएट को भी उससे कम क्रोध नहीं चढ़ा था।

श्रोतागण और पास सटने लगे ताकि कहानी का एक भी शब्द न छूटने पाये। सब लोगों का ध्यान कहानी में मग्न था कि इतने में एक नवीन यात्री सराय के सामने आकर रुक गया।

उसने चिल्ला कर कहा, "क्या मेरे घोड़े की देख-रेख करने-वाला यहाँ कोई नहीं है" ?

अस्तबल का लड़का पेरट्वायन झपट कर बाहर निकला, पर जब उसने देखा कि सब घोड़े न जाने कहाँ चले गये हैं, तो उसे बड़ी लज्जा और भय मालूम हुआ।

पर अपने कष्ट एवं भय को छिपाते हुए उसने यात्री के घोड़े को पकड़ लिया, मानो कुछ हुआ ही नहीं है, और उससे कहा, "मैं आपके घोड़े की देख-रेख करूँगा, महाशय, आप कोई चिन्ता न कीजिये। घर के भीतर जाइये। वहाँ एक गायक गाना गा रहा है। वह सारे देश में भ्रमण करता है। वह निकोलेट की कहानी कह रहा है। मैं आपके घोड़े की देख-भाल करूँगा। किसी बात का डर न मानिये"।

यदि यह नवागंतुक बाहर रहेगा, तभी बेचारे ऐण्ड्वायन के लिये डर की बात होगी।

उस यात्री ने थोड़ी देर ठहर कर अपने घोड़े के विषय में दो एक बातें उससे कहीं। बेचारा ऐण्ड्वायन तो यह पूछने के लिये मर रहा था कि उसने आते समय पाँच काठी युक्त घोड़े कहीं देखे हैं; पर उसने यह पूछने का साहस न किया। उसने सोचा कि यदि इसने उन घोड़ों को कहीं देखा होता, तो अवश्य उनके विषय में कुछ कहता"।

अन्त में कई बार प्रार्थना-विनती करके उसने उस मनुष्य को सराय के भीतर भेज दिया और उसके भीतर चले जाने पर असाधारण उत्कंठा से द्वार बन्द कर दिया। बाहर से वह उन दो लड़कियों को भजनीक के साथ मिल कर गाते हुए सुन सकता था।

परन्तु बेचारे अस्तबल के लड़के ने निकोलेट और ऑकेसिन दोनों को शपथपूर्वक श्राप दिया और चाहा कि सारे भजनीक समुद्र पार भेज दिये जाते! यदि स्वामी अथवा अफ़सरों के जानने के पूर्व घोड़े मिल न गये, तो सोने जाने से पहले उसकी पीठ की अच्छी पूजा होगी। यह निश्चय था। क्रिसमस में उसे छुट्टी न मिलेगी, यह भी निश्चय था। हाँ, वह भयभीत लड़का इस के विषय में निश्चय रूप से न जानता था आया शीत-ऋतु के प्रारम्भ में जब कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा है तब उसे हथकड़ी

पहिना के उन भयानक बन्दीगृहों में ले जायँगे अथवा नहीं जिनके विषय में थोड़ी देर पूर्व वे अफ़सर बातें कर रहे थे।

ज्यों ही उसने द्वार बन्द किया, त्यों ही जल्दी से उस घोड़े को जो उसे सौंपा गया था अस्तबल में न ले जाकर एक खूंटे में वहीं कसकर बाँध दिया; और बड़ी शीघ्रता से सड़क की ओर दौड़ गया। उसे आशा थी कि पहाड़ पर चढ़ कर वह चारों ओर के चरागाहों को भली-भाँति देख सकेगा। कदाचित् वहाँ से वे घोड़े दिखाई पड़ जायँ।

उसने कहा, "वे चारों दुष्ट घोड़े एक साथ हो होंगे, क्योंकि वे एक दूसरे से बँधे थे।"

तब उसे स्मर्ण हो आया कि एक लड़की ने धीरे से कहा था कि निकोलेट और आँकेसिन की कहानी बड़ी लम्बी है। यदि भजनीक इस कहानी को चित्ताकर्षक बना सकेगा, तो कदाचित् वे अफ़सर वहाँ देर तक ठहर जायँगे।

पेराट्वायन, तुम्हें भजनीक का भय नहीं करना चाहिये। वह अपनी कहानी को भरसक चित्ताकर्षक बनाने का प्रयत्न कर रहा है। इसी हेतु वह वहाँ है ही। वह किसी न किसी भाँति समय व्यतीत कर रहा है ताकि सीयर-ब्लैंक लायन्स में सकुशल पहुँच जाय।

पेराट्वायन सड़क द्वारा उस टीले पर पहुँचा जहाँ से ल्यूगियो के जॉन ने दूकान में खड़े हुए लोगों को देखा था।

वहाँ पहुँच कर उसने चारों ओर के चरागाहों पर दृष्टि दौड़ाई। कुछ गायें तथा दो-एक भटकते हुए यात्री दिखाई पड़े। सड़क पर धूल उड़ रही थी जिसमें कुछ वस्तुएँ छिपी सी ज्ञात होती थीं। पर घोड़ों का कहीं पता न था।

तब वह बेचारा लड़का एक पेड़ पर चढ़ गया। पर ऐसा करने में केवल समय की हानि ही हुई, घोड़ों का पता न लगा। पेड़ पर से उसने देखा कि लँगड़ा फ़िलिप अपनी गाय हाँके घर की ओर चला आ रहा है।

पेड़ से उतर कर वह फ़िलिप से मिलने के लिये झपटा। फ़िलिप बहिरा और अन्य लोगों की भाँति कुन्द था। जबतक उसको भली-भाँति यह ज्ञात न हो जाता था कि पूछनेवाला कौन है, क्यों पूछ रहा है, और पूछने में उसका तात्पर्य क्या है। तबतक वह किसी प्रश्न का उत्तर सीधे-सीधे न देता था जब उसे पूर्णतया सन्तोष हो गया, तब उसने कहा।

"घोड़े, घोड़े तो कहीं नहीं दीख पड़े। हाँ, दो घंटे पूर्व लाल कपड़ा पहने हुए एक मनुष्य एक खच्चर हाँके जा रहा था। परन्तु घोड़ा तो एक भी दिखलाई नहीं पड़ा।"

ऐएट्रवायन समझ गया कि यदि फ़िलिप के आँखें होतीं, तो वह सीयर-ब्लैंक, भजनीक तथा नवागंतुक को आते हुए अवश्य देखता। कम से कम तीन घोड़े तो उसी सड़क से आये

थे। उसके इस कहने ने कि 'एक भी घोड़ा दिखलाई नहीं पड़ा' उसका निरुत्साहित कर दिया।

बेचारा लड़का! उसने एक क्षण तक दूकान की ओर देखा। उसके ध्यान में आया कि आज सवेरे 'लुलू' ने उससे किस सुन्दर रीति से बातें की थीं और किस भाँति उसने कल उसे एक नीला फ़ीता देने की तैयारी की थी। उसने अपने नये कपड़ों के सूट के विषय में जो उसके सोने के कमरे में एक सन्दूक में बन्द थे उससे बतलाने का विचार किया था।

पर उसने उस कोड़े की मार के विषय में भी सोचा जो पकड़े जाने पर वह खानेवाला था। अब वह लुलू तथा अपने सुन्दर पहनावे को कभी न देख सकेगा। उसने अन्तिम बार दूकान की आर देखा और सड़क पर भाग गया। वह दूकान एवं लायन्स से भाग जाने के लिये इतनी तीव्रता से दौड़ रहा था, जितना वह दौड़ सकता था।

भजनीक ने जो प्रत्येक वस्तु को देखता था उस नवागंतुक को भी आते देखा। उसने द्वार बन्द करते समय पेरट्वायन की बातें भी सुनीं। पर वह कहानी कहने में एक क्षण भी न रुका। अजनबी ने भी संकेतों द्वारा प्रकट कर दिया कि वह उसमें रुकावट नहीं डालना चाहता था। वह श्रीमती ग्रेवियर द्वारा तैयार की हुई आग के पास बैठ गया।

अफ़सरों का कप्तान तनिक चौंक उठा, मानो गीत के अन्तिम पद में उसे झाँप आ गई थी। पर यह देख कर कि कहानी कहनेवाला बिना रुके आगे बढ़ रहा है, वह ध्यानपूर्वक सुनने लगा। गायक कह रहा था।

"ऑकेसिन घर लौट आया। वह अपनी प्रियतमा के वियोग में व्याकुल हो रहा था। वह अपने कमरे में छिप कर रोने लगा। उधर युद्ध होता रहा। कॉउण्ट बोगर्स बराबर कॉउण्ट गैरिन को दबाते रहे। उनके पास बहुत बड़ी सेना थी। जिस समय ऑकेसिन अपने कमरे में बन्द हो अपनी प्रिया निकोलेट के हेतु आँसू बहा रहा था, उस समय कॉउण्ट बोगर्स नगर-रक्षिणी-भित्ति गिराने की तैयारी में लगे थे।"

कप्तान ने कहा, "हाँ, हाँ, उन दीवाल गिरानेवाली कलों के विषय में सुनाओ। मैंने स्वयं इस प्रकार के एक युद्ध में 'ग्रोन' में भाग लिया था।" इतना कह कर उसने फिर पेया पी और अपनी कुर्सी में लेट कर इस भाँति सुनने लगा जैसे व्याख्यान-प्रेमी आँखें बन्द कर व्याख्यान सुनते हैं।

भजनीक कहने लगा, "कॉउण्ट बोगर्स ने अपने एक वीर सरजेन्ट द्वारा दीवाल गिराने का यंत्र नगर की एक ओर की दीवाल पर लगवा दिया। दो कॉउण्ट और एक ड्यूक की संरक्षता में दूसरा यंत्र दूसरी ओर लगा दिया गया। नगर के

चारों ओर घुड़सवार और पैदल घेर कर खड़े हो गये। अन्त में दीवाल गिरा देने की तैयारी ठीक हो गई।"

सरजन्ट ने नशे भरे शब्दों में कहा, "घुड़सवारों की क्या आवश्यकता थी?"

भजनीक ने जान-बूझ कर यह भूल की थी। उसने कहा, "क्षमा कीजिये, जिसने मुझे यह कहानी बतलाई थी, उसने ऐसा ही कहा था। कदाचित् उसने इतने घेरे नहीं देखे थे जितने आपने देखे हैं।"

अपनी बाधा की सफलता पर सन्तुष्ट होते हुए मदमस्त समालोचक ने मद भरे शब्दों में कहा, "ठीक, यही बात ठीक है।" तब भजनीक ने पूर्ववत् विश्वसनीय ढंग से फिर कहना प्रारम्भ किया। मानो उस सभा भर में उसकी भूल निकालने-वाला केवल एक सरजेन्ट था।

"नगर के प्रत्येक व्यक्ति को दीवाल की रक्षा के लिये तैयार हो जाने की आज्ञा दी गई। उन्होंने समझा कि पूर्व ओर से धावा होगा क्योंकि दीवाल उसी ओर टूटी थी।"

अनुभवी सैनिक ने कहा, "हाँ, हाँ, वहीं तो धावा होगा ही, जहाँ दीवाल टूटी होगी।" तब उसने सराय के स्वामी तथा अपने साथियों की ओर सन्तुष्टतापूर्वक सिर हिलाया मानो वह कह रहा था कि "हम युद्ध के विषय में इन गायकों की अपेक्षा कहीं अधिक जानते हैं।"

भजनीक ने फिर कहना प्रारम्भ किया, "यदि चढ़ाई का सम्पूर्ण भार केवल ड्यूकों पर ही होता, तो कभी सफलता न प्राप्त होती, पर वह सरजेन्ट जिसके बारे में मैंने आपसे पहले ही कह दिया है"—

वाक्य समाप्त भी न हो पाया और न सरजेन्ट द्वारा किये गये आश्चर्य-कर्मों का वर्णन ही प्रारम्भ हो सका, अथवा उसकी प्रतिद्वंद्विता में ड्यूक एवं कॉउण्ट द्वारा किये हुए व्यर्थ प्रयत्नों का वर्णन शुरू भी न हो पाया कि इतने में बाहर ठंड में बँधे हुए घोड़े ने बड़े ज़ोर से हिनहिनाना प्रारम्भ कर दिया।

उसकी हिनहिनाहट से सारा कमरा गूँज उठा। सराय-मालिक जीन स्वयं बाहर झपटते हुए नौकरों के पीछे हो लिया। घोड़े का स्वामी तथा अफ़सर लोग भी चल पड़े। इस गड़बड़ी में वह भजनीक और युवतियाँ अकेली रह गईं।

"ऐण्ट्वायन कहाँ है"? "ऐण्ट्वायन कहाँ है?" चारों ओर 'ऐण्ट्वायन, ऐण्ट्वायन' ही सुनाई पड़ता था। वस्तुतः इस प्रकार का कोलाहल होना वहाँ कोई नई बात न थी। जब किसी बात की आवश्यकता होती थी, तब लोग 'ऐण्ट्वायन, ऐण्ट्वायन' ही चिल्लाते थे। वही बेचारा सब कामों के लिये बुलाया जाता था।

जीन ग्रेवियर ने, जिसे अपनी दूकान की कमी झूठ बोल कर पूरी करने की बान पड़ गई थी, कहा, "इस ठंड में बाहर न

निकलिये महाशय, भीतर कमरे में चलिये। मेरी स्त्री ने आपके लिये बियारी बना रखी है। ऐएट्वायन घोड़ों को पानी पिलाने ले गया है।

अजनबी ने शपथ खाते हुए कहा, "पानी पिलाने! लेकिन मेरे घोड़े को खरहरा करने तथा सुलाने क्यों नहीं ले गया। आप और आपके मनुष्य प्रेम-गीत गा रहे हैं और मेरा घोड़ा ठंड में बँधा मर रहा है।"

जीन ग्रेवियर ने कहा, "अवश्य, अवश्य, मैं स्वयं खरहरा कर दूँगा और घोड़े को मल दूँगा।" इतना कह कर वह स्वयं बेचारे घोड़े को अस्तबल में ले गया। 'ओड' नामक एक आलसी व्यक्ति वहीं खड़ा था। उसने संकेत से उसे पीछे आने को कहा। जीन सोचने लगा कि ऐएट्वायन उन घोड़ों को कहाँ ले गया।

हिचकी लेते हुए और बहुत सी शपथें खाते हुए सीढ़ी पर खड़े होकर कप्तान ने चिल्ला कर कहा, "जीन ग्रेवियर, लौट आओ। यह क्या गड़बड़ है? लायन्स के विशप एवं चैप्टर के माननीय सैनिकों के घोड़े तुमने क्या किये?"

जीन ग्रेवियर ने न सुनने का बहाना किया। तब उस मतवाले मूर्ख ने यह समझ कर कि उसके पीछे दौड़ तो सकते नहीं अपनी शारीरिक असमर्थता को भयप्रद शब्दों द्वारा पूरा करते हुए दुबारा कहा, "लौट आओ, कुत्ते, लौट आओ, और अपने ऊपर लगाये गये इस अपराध का उत्तर दो।"

इस बार जीन ग्रेवियर ने आगे बढ़ने का साहस न किया। उसने कहा,

"ईश्वर के लिये उन घोड़ों को ढूँढ़ लाओ, ओड। पियेर को सड़क के चढ़ाव पर भेज दो और पैंड्री को उतार पर। ईश्वर करे, पेराट्वायन ने उन घोड़ों को अस्तबल में बाँध दिया हो"।

फिर उसके मतिष्क में एक नये असत्य का प्रादुर्भाव हुआ। उसने पीछे आनेवाले क्रोधित अजनबी की ओर घूम कर कहा, "मैंने भूल की महाशय, इतनी ठंड पड़ रही है कि लड़का उन घोड़ों को अस्तबल में ले गया है।"

शोक, यदि पेराट्वायन ने उस अजनबी से साहस करके पूछ लिया होता कि आया उसने पाँच काठी युक्त घोड़े देखे थे अथवा नहीं तो वह ठीक मार्ग पर उन्हें ढूँढ़ने जाता, और बिना पता लगे ही उन्हें लौटा लाता। तब वह लुलू को बड़े दिन के उपहार में फीता देता और अपना बढ़िया पहनाव पहनता। पर अब वह बेचारा अपनी जान बचाने को चरागाहों के पास भाग रहा है।

पैंड्री घोड़ों के झुंड को एक में बाँध आया। एक क्षण तक तो किसी ने नहीं देखा कि पाँच के स्थान पर चार ही घोड़े हैं। पर ज्यों ही वह दूकान के सामने पहुँचा, त्यों ही सीयर-ब्लैंक की अनुपस्थिति प्रत्यक्ष हो गई।

जोन ग्रेवियर ने चिल्ला कर कहा, "वही मेक्सिमियक्स से आनेवाले व्यक्ति ने घोड़ों को चुराया था। वह सर्वोत्तम घोड़ा ले भागा है।" ऐसा कहते हुए वह उदासी के साथ दूकान को लौट आया। वह सोच रहा था कि कौन सा ऐसा झूठ बोलूँ कि वह शान्त, श्वेत बालोंवाला मनुष्य जो द्वार के पीछे बैठा है सन्तुष्ट हो जाय।

परन्तु पाठक लोग जानते हैं कि वह शान्त स्वभाववाला वृद्ध इसके बहुत पूर्व वहाँ से चला गया था।

इस बीच में वह इतनी शीघ्रता से आगे बढ़ रहा था जितना तेज़ सीयर-ब्लैंक जा सकता था। अभी आध घंटा दिन शेष था और आध घंटा उसे दूकान में विवश होकर देर करनी पड़ी थी।

जिस समय उसने अपने को स्वतंत्र पाया, उस समय वह अपने घोड़े पर न चढ़ा, प्रत्युत उस रस्सी को काट दिया जिससे पाँचों घोड़े बँधे थे। फिर पाँचों घोड़ों को साथ लेकर वह चल पड़ा, मानो उनको जलाशय में पानी पिलाने ले जा रहा हो। यदि कमरे के भीतरवालों में से कोई उनके पैरों की आहट सुनता, तो वह यही समझता कि अस्तबल का लड़का उन्हें पानी पिलाने ले जा रहा है, अथवा उनको छाये में ले जा रहा है, क्योंकि अब, सन्ध्या हो चली थी। जब घोड़े पानी पी चुके, तो वह अपने घोड़े पर चढ़ बैठा। रस्सी को हाथ में

पकड़े वह लगभग दो-सौ गज़ टहलता हुआ गया। जब वह एक उजाड़ पनचक्की के पास झाड़ी की आड़ में पहुँचा, तो उसने उन घोड़ों को कस कर बाँध दिया। अब वह अपने घोड़े पर चढ़ कर रफूचक्कर हो गया। पन्द्रह मिनट तक तो वह आँधी की भाँति उड़ता रहा।

तब उसने समझा कि वह भजनीक जिसके नमस्कार को उसने ग्रहण कर लिया था, पर जिसके बुलाने पर कान न दिया था, उसका सच्चा मित्र था, उसी की सहायता से वह उस भयानक दशा से मुक्त हो पाया था। उसके गुप्त चिह्न द्वारा यह प्रकट हो गया था कि वह "लायन्स के दीनों" से सम्बन्ध रखता है।

उसने ल्यूगियो के जाँन को पहचान लिया था, निश्चित करने में उसे एक मिनट लग गया। एक मिनट के पश्चात् उसे निश्चय रूप से ज्ञात हो गया कि वह पुरोहित जिसे लायन्स के सब दीन मनुष्य प्रेम और आदर की दृष्टि से देखते हैं जोखिम में पड़ने जा रहा है। तब वह घूम पड़ा और ज़ोर से उसे बुलाया। उसे आशा थी कि समय के भीतर ही वह उसे अफ़सरों के पंजे से बचा लेगा, क्योंकि उसे ज्ञात था कि मदिरा की दूकान में वे बैठे हैं। वह स्वयं उनसे कतरा कर निकल गया था। उन दिनों लायन्स के अफ़सरों का नाम इतना बुरा हो रहा था, कि कोई भी शान्ति-प्रिय मनुष्य भरसक उनके मार्ग से दूर ही रहना चाहता था।

अब पिता जॉन ने सोचा कि जिस भाँति वह वीर व्यक्ति मुझे बचाने एवं मेरे भाग्य में भाग बँटाने आया था उसी भाँति मुझे भी उसे बचाने जाना चाहिये। जबतक पुरोहित पुल पार न हो गया, तबतक उसने अपने को सुरक्षित न समझा। पर पीछे किसी के बुलाने का शब्द न सुनाई पड़ा, और प्रत्येक मिनट में सीयर-ब्लैंक दो-तीन फर्लांग उड़ रहा था।

भाग्यवश उस समय सड़क पर कोई नहीं था, अतएव अपनी शीघ्रता से उसने किसी का ध्यान आकर्षित न किया।

पन्द्रह मिनट के पूर्व उसने अपनी चाल कम न की। इस समय तक लायन्स के स्तूप दूर पर दृष्टिगोचर होने लगे थे। अब उसे सन्तोष हो गया कि बिना किसी रुकावट के मैं सूर्यास्त से पूर्व ही पुल पार कर जाऊँगा। अब भी वह तीव्रगति से घोड़ा दौड़ा रहा था। मार्ग में नगर जानेवालों के झुंड पड़ते थे। कभी-कभी वह उनमें से किसी से त्योहार के विषय में दो-चार बातें भी कर लेता था। चैप्टर इस त्योहार मनाने में अत्यधिक ध्यान दे रहा था। कदाचित् उसका तात्पर्य यह था कि लायन्स तथा आस-पास के निवासियों पर यह प्रकट कर दिया जाय कि उनके नये ऐहिक स्वामी एवं आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शक से क्या-क्या लाभ हैं।

पुरोहित जॉन जब एक धनी कृषक से बातें करता जा रहा था जो अपने भाई का निमंत्रण पाकर नगर में त्योहार मनाने

जा रहा था, तो उसे कुछ संरक्षिता ज्ञात हुई। उनके आगे-आगे गाड़ी जा रही थी जिसमें कृषक की स्त्री तथा बेटी बैठी थीं। बात-चीत, जैसी सदैव हुआ करती थी, धर्म-युद्ध के विषय में होने लगी। उस मनुष्य की बात-चीत से ऐसा ज्ञात हो रहा था मानो उस युद्ध के कारण और स्थान के विषय में वह जानता ही न हो। पुरोहित शक्ति भर उसे समझाने का प्रयत्न कर रहा था।

अन्त में उसने पूछा, "क्या हमारे वीर सैनिक उस विधर्मी कुत्तों को लेकर ईस्टर तक लौट आएँगे ?" पुरोहित ने धार्मिक भाव से उत्तर दिया, "परमेश्वर जानें।" उसने फिर कहा, "परमेश्वर तो जानते ही हैं, पर आप क्या सोचते हैं ? उनको गये बहुत दिन हो गये।"

पुरोहित ने कहा, "यात्रा बड़ी लम्बी है।"

पर मेरी समझ में इतनी लम्बी तो नहीं है जितनी उन आगंतुक अँग्रेज़ों की थी।"

पिता जॉन ने आश्चर्य-पूर्वक कहा, "अजी, उससे कहीं लम्बी।"

"उनसे लम्बी है तो उन्होंने समुद्र क्यों पार किया ? स्थल-मार्ग से वे क्यों नहीं गये ?"

पिता जॉन ने समझाया कि इंग्लैण्ड एक द्वीप है, और यदि इंग्लैण्ड के राजा अपने राज्य से कहीं भी जाना चाहें, तो उनको समुद्र पार करना पड़ेगा।

"और क्या राजा सलादीन और दुष्ट राक्षस महाडएड भी दूसरे द्वीप में रहते हैं? यदि स्थल से जाना पड़ता तो मैं स्वयं उस पवित्र युद्ध में सम्मिलित होता।"

पिता जॉन ने फिर समझाया कि "पवित्र नगर किसी द्वीप में नहीं है। वहाँ लोग स्थल-मार्ग से भी पहुँच सकते हैं। प्राचीन युद्ध में बहुत से वीर सैनिक स्थल-मार्ग से गये थे। सारी यात्रा उन्होंने घोड़ों पर समाप्त की थी। पर उनमें से इतने लोग नष्ट हो गये कि इस बार वहाँ शीघ्र पहुँचने के लिए राजाओं ने जहाज़ों में यात्रा की है।"

कृषक मित्र ने कहा, "यह उनकी भूल है। बहुत से लोग जो समुद्री यात्रा नहीं करना चाहते स्थल-मार्ग से प्रसन्नता-पूर्वक जाते। मैं, फिलिप, जीन, ह्यूबर्ट, जोज़फ़—ऐसे-ऐसे सात मनुष्यों के नाम गिना सकता हूँ। यदि समुद्र से न जाना पड़ता, तो ये सातों उस युद्ध में जाते।

पुरोहित दया-युक्त उसकी बातें सुनता था, पर उनकी चाल बड़ी धीमी हो गई थी। अस्तु, वह अधिक विलम्ब करने में असमर्थ हो उसे नमस्कार कर आगे बढ़ा। कुछ दूर चल कर उसे दूसरा झुंड मिला जो त्योहार मनाने के लिये नगर को जा रहा था।

पर पीछे से वज़ीर के अफ़सरों द्वारा बुलाये जाने का भय उसे सदा लगा रहा।

अब उसके मार्ग की अन्तिम बाधा आई। सौ घुड़सवार सैनिक उसी मार्ग से आ रहे थे। इन्हीं लोगों का मेज़ियक्स में प्रबन्ध करने के हेतु वे अफ़सर पहले ही से भेज दिये गये थे। उन्हीं अफ़सरों के चक्कर में जॉन पड़ गया था। उन्हें देख कर पुरोहित सड़क के एक कोने में खड़ा हो गया और उनके निकल जाने की प्रतीक्षा करने लगा। जब अन्तिम सैनिक निकल गया, तो वह वीरतापूर्वक चरागाह के बाँध को पार कर उस अस्थायी पुल पर उनसे पहले पहुँच गया, जहाँ उसे अन्तिम बार रोन को पार करना था। इसी पुल को प्रातःकाल प्रिनहैक ने पार किया था। सूर्य भगवान् फ़ोवियर्स पर रक्त आभा धारण किये सुशोभित हो रहे थे। पिता जॉन ने फिर चाल कम कर दी। इससे नगर से आनेवाले नौकरों का ध्यान उस ओर आकर्षित न हुआ। ये नौकर किसानों के लड़के थे और नगर में काम करते थे। आज वे अपने घर त्योहार मनाने जा रहे थे। चाल कम हो जाने से उन ग्राम-निवासियों का ध्यान भी उसकी ओर न गया जो चैप्टर द्वारा क्रिसमस में किये गये उत्सव का अवलोकन करने जा रहे थे। इतने झुंड के झुंड लोग जा रहे थे और उनकी गति इतनी धीमी थी कि पुल पर के फाटक के खुला रहने में पुरोहित को तनिक भी सन्देह न रह गया।

पुल पर कोई रोक-टोक न थी। इतने नागरिक एवं ग्रामीण जा रहे थे कि आज का दिन अपवाद कर दिया गया था।

आज के लिये वे सैनिक-नियम लागू न थे, इसीलिये द्वारपाल आलसी हो अपना गँड़ासा पास रखे ऊपरी किवाड़ के पास एक बेंच पर बैठा था और किसी की जाँच-परताल न करता था।

जॉन ने प्रिनहैक से सुना था कि किस भाँति गुप्त चिह्न द्वारा वह पुल पर से पार हो गया था। अतएव उसने द्वारपाल एवं पीछे रक्षक-गृह में बैठे हुए अफ़सर की ओर ध्यानपूर्वक देखा। पर वह दो में से किसी को न पहचान सका। वे "लायन्स के दीनों" में से न थे। कदाचित् वे दोनों किराये के आदमी थे जिन्हें चैप्टर ने दूसरे प्रान्त से बुलवाया था।

वह पुरोहित धीरे-धीरे सँभालकर पुल पार हो गया। अब वह ऐसी भूमि पर चलने लगा जहाँ के प्रत्येक घर से वह परिचित था और जहाँ के विषय में कुछ दुःख एवं सुखपूर्ण स्मरण उसके मस्तिष्क में थे। सड़कें मनुष्यों से भरी थीं क्योंकि क्रिसमस के पूर्व वाली सन्ध्या भी मुख्य क्रिसमस की भाँति छुट्टी का समय थी। पिता जॉन जानते थे कि यदि वे अपने निज के पहिनावे में आते तो प्रत्येक पाँचवा व्यक्ति उन्हें पहचान जाता कि यह देश-निर्वासित मनुष्य है। उनका पहचाना जाना ख़तरे से ख़ाली नहीं था, और उसके ऊपर भय यह था कि कहीं आज ही रात को वज़ीर का कोई अफ़सर उन्हें पकड़ न ले। इससे उस कार्य में जिसके लिये वे बुलाये गये थे बड़ी

अड़चन पड़ जायगी। अतएव सड़क पर मनुष्यों के बीच से होकर जाने में उन्हें दिन भर की बाधाओं से अधिक भयप्रद ख़तरे का सामना करना पड़ा। उसका ख़तरे में पड़ जाना, रोगिणी को ख़तरे में डालना था। अतएव ख़तरों से बचने का उन्होंने शक्ति भर प्रयत्न किया।

सड़क के कोने में इकट्ठे हुए मनुष्यों को वह पुरोहित उत्सुकतापूर्ण दृष्टि से देखने लगा। उसे आशा थी कि 'मैं किसी ऐसे व्यक्ति को पहचान लूँगा जिसका सम्बन्ध 'लायन्स के दाँतों' से है। और तब उस गुप्त संकेत से अलग बुला कर वह प्रसिद्ध घोड़ा उसके द्वारा अस्तबल में भिजवा दूँगा और मैं स्वयं पैदल जीनवाल्डो के घर पहुँच जाऊँगा। इससे किसी का ध्यान मेरी ओर आकर्षित न होगा।" पर उन थोड़े से 'दाँतों' को ऐसे भीड़-भड़कों की कोई चिन्ता न थी। हाँ, ऐबट द्वारा किये गये क्रिसमसोत्सव में वे अवश्य सम्मिलित होते थे। अस्तु, विवश हो पुरोहित उस भीड़ से हट कर एक गली में घुसा जहाँ बहुत कम आलसी लोग एकत्रित थे। वह घोड़े से उतर गया और उसकी लगाम पकड़ कर पैदल चलने लगा। चलते-चलते वह एक सौदागर के चौक में पहुँचा। वहाँ बहुत से लड़के एकत्रित थे। एक ताम्रमुद्रा निकाल कर उसने कहा, "कौन मेरा घोड़ा, उस छोटे पुल के पार ले जायगा? जो ले जायगा, उसको मैं यह मुद्रा दूँगा।"

यह सुन कर सब से बड़े लड़के ने कहा, "यह आपका घोड़ा नहीं है, यह तो श्रीजीनवाल्डो का घोड़ा है। जीनवाल्डो तथा उनके साईसों को छोड़ इस पर और किसी को चढ़ने का न्यायपूर्ण अधिकार नहीं है।"

सभी लड़के उस मुद्रा को पाने के लिये लालायित थे, पर घोड़े ले जाने में सबको भय लग रहा था। एक चुराये हुए घोड़े के साथ पाया जाना उन दिनों लायन्स में अपराध समझा जाता था और उसका दंड एक लड़के को क्रिसमस की छुट्टी काट कर अथवा अन्य रीति से दिया जाता था।

पुरोहित ने अपना धैर्य न जाने दिया। उसने शान्तिपूर्वक कहा, "यह जीनवाल्डो का घोड़ा है और उन्हीं के अस्तबल में ले जाने को मैं कह रहा हूँ। क्या जो मैं दे रहा हूँ वह पर्याप्त नहीं है? अच्छा, यह लो, दूसरी मुद्रा भी मैं ले जानेवाले को दे दूँगा।"

पैसों की लालच बड़ी थी, पर उससे कम भय की धाक न थी। अस्तु, दूसरे ने उजड्डतापूर्वक शपथ खाते हुए कहा, "यात्री लोग अपने घोड़े स्वयं ले जायँ और उनको खरहरा करें एवं मलें।" और तब इन दोनों दुष्टों ने लम्बी-चौड़ी बातों द्वारा उस धूलि-धूसरित ग्रामीण पर लायन्स के शान की धाक जमानी चाही। तत्पश्चात् वे ज़ोर से चिल्ला कर वहाँ से उस ओर चल पड़े जिधर से ल्यूगियो का जॉन आया था।

उस झुंड के दो छोटे लड़के भी जाने को उद्यत थे कि इतने में पुरोहित ने कुछ ख़तरा उठाते हुए, अथवा उनके चेहरे के शुद्ध भोलेपन से आकर्षित हो उनके कान में धीरे से कहा, "क्या यीशु के प्रेम के निमित्त तुम यह घोड़ा जीनवाल्डो के यहाँ ले जा सकते हो ?"

उस वीर बालक ने काठी पर बैठते हुए कहा, "जब मैं उसके नाम पर बुलाया जाता हूँ तो मैं कहीं भी जाने को तत्पर हो जाता हूँ।"

"वहाँ तुम कहना कि जिसे आपने बुलवाया है, वह आ गया है।"

"वहाँ मैं कहूँगा कि जिसे आपने बुला भेजा है, वह आ गया है। नमस्कार"।

लड़का चल दिया और पुरोहित चौक, महराब, प्रायद्वीप, नदी पर के पुल आदि को शीघ्रता से पार करता हुआ लड़के के दो-तीन मिनट पीछे जीनवाल्डो के घर पर पहुँच गया। वहाँ द्वार पर फ्लारेंसनिवासी ग्यूलियो उसका स्वागत करने को खड़ा था।

नवाँ परिच्छेद

क्रिसमस के पूर्व की संध्या

गुरु और शिष्य दोनों एक दूसरे से गले मिले और बिना कुछ बोले एक दूसरे का चुम्बन किया। पाँच वर्षों के पश्चात् दोनों से भेंट हुई थी। पत्र-व्यवहार भी बहुत कम होता था। तब वे तुरन्त रोगिणी के विषय में बात-चीत करने लगे।

पुरोहित ने कहा, "वह कैसी है?"

"मैं कम से कम इतना कह सकता हूँ कि अभी वह जीवित है। इससे अधिक मैं कुछ नहीं कह सकता। प्रति घंटे उसकी नाड़ी तीव्र और निर्बल होती जा रही है, और उसकी सांस की गति भी बिगड़ रही है। परन्तु अब कष्ट के दौरे नहीं होते।

क्या पेन्स में के मल्लाहों के साथ वाली रात की सुधि आपको है ? उनसे कहीं अधिक इस बालिका ने कष्ट भोगे हैं।"

"क्या वह तुम्हें पहचानती है ?"

"वह किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को नहीं पहचानती। पर कभी-कभी वह अपने 'प्रिय पर्वत', अथवा किसी बूढ़े लँगड़े भिक्षुक, या राजा सलादीन अथवा अपनी मौसेरी बहन गेब्रियल से बातें सी करती हुई दीख पड़ती है।"

"विष पीने के पूर्व जो बातें उसके ध्यान में थीं उन्हीं के विषय में वह बड़बड़ाती है। इन विषों में यही होता है।"

रोगिणी के सुन्दर कमरे में प्रवेश करने से पूर्व ही उन दोनों में इतनी बात-चीत हो गई।

उन दिनों वैद्यक-विज्ञान का केवल बाल्य-काल था और बड़े-बड़े वैद्यक-शास्त्र के विद्वान् भी भिन्न-भिन्न विषों का अन्तर नहीं जानते थे। आज-कल विषों के प्रभावानुसार कई श्रेणियाँ बन गई हैं। दक्षिणी-फ्रांस में उत्पन्न होनेवाली वह जड़ी जिसे धाय प्रघन ने भूल से दवा की जड़ी समझ ली थी एक प्रकार की विषैली जड़ी थी। श्रीमती चालडो ने उत्सुकतावश दवा को अधिक प्रभावमयी बनाने के लिये उस जड़ी को कूट कर उसमें मिला दिया था और बेचारी बालिका ने अपनी माता को प्रसन्न करने के लिये सब कुछ कड़वा होने पर भी पी लिया था। आजकल के विज्ञानानुसार वह फ्लारेन्स-निवासी वैद्य

केवल नवसिखिया, अनाड़ी ही कहा जा सकता था जो अपने अनुभव किये गये फलों पर कार्य करता था। वह स्वयं इस बात को स्वीकृत कर सकता था कि इससे अधिक वह कुछ नहीं था। परन्तु उसका अनुभव-क्षेत्र विस्तृत एवं बुद्धिमत्ता-पूर्ण था। बालकपन ही से जीवन के नियम और रीतियों ने उसको मुग्ध कर लिया था। जो कुछ अस्वस्थ तथा स्वास्थ्य-पूर्ण दशाएँ उसने देखी थीं, उन्हें ठीक-ठीक समझ कर स्मरण कर लिया था। जब उसने अपने गुरु को पत्र लिखा, तो उसमें लिख दिया था कि उस जड़ी के अतिरिक्त रोन की तराई में उत्पन्न होनेवाली एक विषैली जड़ी का भी उसे सन्देह है, क्योंकि उसे कुछ ऐसे लक्षण प्रदर्शित हो रहे थे जो केवल धाय प्रधन वाली ही जड़ी के न थे, और न माता द्वारा एकत्रित की हुई किसी अन्य जड़ी ही से उत्पन्न हो सकते थे। दिन में ये लक्षण और प्रत्यक्ष हो गये थे। इसी हेतु फ्लारेन्स-निवासी ने अपनी दवा भी परिवर्तित कर दी थी। पर तौ भी रोगिणी की दशा बुरी ही होती जाती थी। उसके शरीर की दृढ़ एवं सराहनीय बनावट तथा जीवन की पवित्रता प्रारम्भ ही से अपना प्रभाव प्रदर्शित कर रही थी। पर प्रति घंटे उसका बल क्षीण होता जाता था।

ल्यूगियो का जॉन बच्ची के पलँग के पास आया और शान्ति तथा दयापूर्वक उसके पिता का उत्सुक एवं उदारमय नमस्कार स्वीकृत किया। बाल्डो को ऐसा ज्ञात हुआ कि

ग्यूलियो का यह गुरु जिसकी इस कष्ट के समय में अत्यन्त उत्सुकता से प्रतीक्षा की जा रही थी उसके सम्बन्धी पीटरवाल्डो का अनन्य मित्र है। पचासों बार इसने उसे पीटर के साथ उसके घर अथवा गोदाम में देखा था। जीनवाल्डो पीटर के मित्रों को और भी घृणा की दृष्टि से देखता था, क्योंकि वह समझता था कि इन्हीं लोगों ने उसे बहका कर और उसका काम-धाम छुड़वा कर उसे मूर्खता में फँसा दिया है। अब, ईश्वर की आज्ञा ऐसी हुई कि उसी व्यक्ति के लिये जीनवाल्डो ने अपने आदमी तथा घोड़े भेजे, उसी को बुलाने के लिये उसने लायन्स के नियमों का उल्लंघन किया और उसी के आने की आशा में वह दिन भर ईश्वर से प्रार्थना करता रहा।

श्रीमती वाल्डो ने अपनी कुर्सी से उठकर आदरपूर्वक इस अजनबी को बैठने के लिये स्थान दिया। पर एक क्षण तक कमरे में किसी ने एक शब्द भी न कहा।

नये वैद्य ने अपने ठंडे हाथों को रोगिणी की नाड़ी अथवा उसके सिर पर न रखा। उसने अपने कानों को उसके हृदय के पास लेजाकर उसके निर्बल श्वास को गति देखी। बालिका के नथनों से निकली हुई साँस को उसने सूंघने का प्रयत्न किया। मोमबत्ती उसके समीप ला कर उसने उसके चेहरे का रंग देखा और स्वाभाविक रीति से घुली हुई आँखों के अत्यन्त समीप बत्ती लाकर उसकी भी परीक्षा की।

तब उसने अपने शिष्य से सब बातें विस्तारपूक वर्णन करने को कहा।

पाठक तो इसके विषय में पहले ही से जानते हैं। श्रीमती वाल्डो तथा उनके पड़ोसी भी उस समय की प्रचलित दवाइयों से भिज्ञ थे। उन्होंने विष निकालने के लिये तेल मिश्रित गरम पानी पिलाया था। इससे बालिका का पेट विष से कुछ मुक्त हो गया था। परन्तु ग्यूलियो को ज्ञात हुआ कि विष इतनी देर तक पेट में रहा कि उसका प्रभाव नस-नस में व्याप्त हो गया था। ऐंठन के दौरों-द्वारा यह बात प्रमाणित हो जाती थी कि सारा विष शरीर से नहीं निकल पाया है।

युवक वैद्य ने अपने गुरु से कहा, "ऐंठन अधिक देर तक न ठहरती थी। पर ऐंठन के पश्चात् बालिका का मुख पीला पड़ जाता था और उसके चेहरे पर मुर्दनी छा जाती थी। और फिर ऐसा दौरा हो जाता था मानो हम लोगों ने कोई दवा ही न की हो। कई बार उसके दाँत इस भाँति बैठ गये थे कि मुँह खोलना कठिन हो गया था। मैंने उसे गर्मी पहुँचाने का प्रयत्न किया है और स्त्रियों द्वारा प्रारम्भ की गई मालिश जारी रक्खी है। उसकी नाड़ी की गति मुझे विशेष अच्छी ज्ञात हुई अतएव दोपहर को और फिर तीन घंटे पश्चात् मैंने उसका थोड़ा सा रक्त निकालने का साहस किया। वह आपकी परीक्षा के लिये सुरक्षित रखा है। वह यह है। फिर एक घंटे पर मैंने

उसे यह दवा छः बार दी है। इसे मैंने स्वयं समुद्री सीपियों को फूंक कर बनाया था। मैं जानता हूँ कि इसमें और कुछ नहीं मिला है। यह निरी शुद्ध दवा है। परन्तु मैं नहीं कह सकता कि इससे कुछ लाभ हुआ है अथवा नहीं। मैंने उसे मदिरा देने में कुछ हिचकिचाहट की थी, क्योंकि उसके शरीर का रक्त निकाला गया था। पर जब उसकी नाड़ी का पता न चला और श्वास की गति का शीशे द्वारा भी पता न लगा, तब मैंने उसे मदिरा पिलाई। वह मदिरा यह है। इससे कुछ हानि न हुई। अतएव दोबार और पिलाई। और आज मैंने उसकी माता द्वारा तैयार की हुई यह बलकारक औषधि भी तीन-चार बार पिलाई है।"

गुरु ने अपनी स्वीकृति प्रदर्शित करने के लिये सहानुभूति-पूर्वक सिर हिलाया और वह शेष बलकारक औषधि जिसे उसका शिष्य दिखा रहा था, स्वयं पी गया। मुसकराते हुए उसने श्रीमती वालडो को कटोरा दे दिया। व्यतीत चौबीस घंटों में यह प्रथम मुसकराहट उस कमरे में प्रदर्शित हुई थी। इससे सूचित हो गया कि वैद्य वर्तमान दशा से हताश नहीं है। कम से कम माता का साहस और बढ़ गया। इस भाँति रोगिणी के कुटुम्ब को उत्साहित करते हुए नये वैद्य ने अपना काम प्रारम्भ किया। वैद्यों का यही कर्तव्य भी है। सहसा उस भली स्त्री को स्मरण हो आया कि जो मनुष्य पन्द्रह लीग घोड़ा दौड़ाये चला आ रहा है उसे जलपान की अत्यन्त आवश्यकता

होगी। यह विचार उसे पहले ही करना चाहिये था। अतएव वह तुरन्त अपने रसोई-गृह में दौड़ती हुई गई और नौकरानी को ब्यालू बनाने की आज्ञा दी।

ल्यूगियो का जॉन स्वयं आग के पास जा कर अपने ठंढे हाथों को गरमाने लगा। उसने फ्लारेन्स निवासी से कई प्रश्न और पूछे। स्त्रियों द्वारा की गई दवाइयों की पत्तियाँ और छिलके जो वहाँ पड़े थे मँगवा कर देखे। ज्यों ही उसे निश्चय हो गया कि अब उसके छूने से बालिका को शीत न लगेगी, त्यों ही वह उठ कर पलंग के पास गया, हाथों और पैरों के रक्त-संचार की परीक्षा की, उसके हृदय की धड़कन सुनी और कलाई की नाड़ी की गति ज्ञात की। तब जितनी मदिरा उसके शिष्य ने पिलाई थी उसकी पँचगुनी उसने अपने हाथ से उंडेल कर बालिका को पिलाई। यद्यपि बालिका बहुत भयभीत हो रही थी, तो भी उसकी आज्ञा टालने का साहस वह न कर सकी।

फिर उसने कहा, "अब उसे मत छेड़ो, चुप-चाप पड़ी रहने दो।" इतना कह कर दोनों फिर आग के समीप चले गये।

उस नवयुवक ने कहा, "आपने मुझे एक बड़े भय से मुक्त कर दिया है। मैं तो गरबर्ट की स्वयंसिद्धि से बहुत घबड़ा रहा था।"

"उस स्वयंसिद्धि के प्रतिकूल काम करके तुमने बहुत अच्छा किया है। कदाचित् उस स्वयंसिद्धि का खंडन करने ही से अब तक बालिका के प्राण बचे हैं। पोप सिलवेस्टर ने अपनी स्वयंसिद्धियाँ लिखने के पश्चात् बहुत कुछ सीखा है और हमें मृतक पापों से जीवितों की अपेक्षा अधिक नहीं डरना चाहिये। तुम्हारी मदिरा ने तनिक भी हानि नहीं की है। और यदि उसकी चेतना-शक्ति फिर आने लगे, तो हमें भरसक उसकी सहायता करनी चाहिये। ज़रा अपनी दवाइयों की टोकरी तो मुझे दिखाना, इस खट्टी मदिरा से बलवती बलकारक औषधि देने की इस समय आवश्यकता है।

हब्शी दास ने आग के पास एक छोटी मेज़ लगा दी और अपने स्वामी की सहायता से उसने दवाइयों की कई बोतल लाकर उस पर रख दीं। गुरु ने बोतलों पर चिपके हुए कागज़ों को बारी-बारी से देखा। कभी-कभी वह कोई बोतल खोल कर एकाध बूंद दवा अपनी बाईं हथेली पर डाल लेता था और चख कर उसकी परीक्षा करता था। इस भाँति उसने दो बोतलें छाँट कर निकाल लीं और शेष को फिर टोकरी में बन्द करवा दिया। तब ग्यूलियो की ओर मुख कर के उसने मधुर मुसकान के साथ कहा, "क्या तुम अन्धकाराच्छन्न प्राचीन-काल में चले गये हो। बर्नहार्ड की मृत्यु के पश्चात् मुझे ऐसी दवाइयाँ कभी देखने को न मिलीं। उसके पास भी इससे अच्छी दवाइयाँ न थीं। मैं सोचता हूँ कि हम प्रसन्नचित्त

आदम और हौआ हैं और आदम हौआ की बनाई हुई औषधियों का पान कर रहे हैं।"

फ्लारेन्स-निवासी ने कहा, "माननीय गुरु वर, तनिक ध्यान रखिये कि आप कहाँ हैं। जरा धीरे-धीरे बोलिये। हम लोग पुनः अन्धकारावृत्त काल में पहुँच गये हैं और इस घर की छाया में हम अन्धकारमय काल के अत्यन्त अन्धेरे केन्द्र में वर्तमान हैं। आप किसीके सामने ऐसी बात क्यों करते हैं जिससे 'कोरियर' के पास समाचार पहुँच जाय और हम देश-निर्वासित कर दिये जायँ। मैं 'अवेरोज़' के स्थान पर 'अबुलकैसिस' के विषय में बात करना चाहता हूँ क्योंकि इस नाम को आपके अतिरिक्त और लायन्स का कोई नहीं जानता। नहीं, हमें हौआ की जड़ी-बूटी द्वारा ठीक उसी भाँति जीना और मरना है जिस प्रकार पोप अलेक्ज़ैण्डर के धार्मिक विचारों के अनुसार त्राण अथवा नर्क प्राप्त करना है। मैंने बूँद-बूँद कर के इन दवाइयों को एकत्रित किया है। ये छोटी शीशियाँ जिन्हें आपने अलग रख दिया है आप ही की हैं। जिस समय वज़ीर के दुष्ट नौकर आपके औषधालय की सारी वस्तुएँ सड़क में फेंक रहे थे, उसी दिन इन्हें मैंने बचाकर अपने पास रख लिया था। मैं प्रसन्नतापूर्वक आपके औषधि-यंत्रों को भी उठा ले आता, परन्तु आर्क विशप के मनुष्य मेरे सामने ही खड़े थे। वे सब यंत्र महल में भेज दिये गये।

"महल में ?"

"मैं तो यही समझता हूँ, पर सम्भव है कि वे घूरे पर फेंक दिये गये हों अथवा "मूली पाशा" को उपहार स्वरूप दे दिये गये हों। इस कमरे के बाहर लायन्स में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो उनके मूल्य को जानता हो अथवा उनका प्रयोग कर सकता हो।

पिता जॉन ने अपने शिष्य के अन्तिम शब्दों पर ध्यान न देते हुए, मानो वह स्वप्न देख रहा हो, कहा, "महल में ? क्या कहा, महल में भेज दिये गये ? इतने में श्रीमती गेब्रियल ने धीरे से कमरे में प्रवेश किया। वे यात्री के जलपान का सामान लेकर आई थीं। मेज़ पर सारा सामान रखते हुए उन्होंने कहा, "मैं आशा करती हूँ कि आप थकावट के मारे मूर्छित नहीं हो रहे हैं।"

फिर उसी सुमधुर मुसकराहट के साथ उसने उत्तर दिया, "मैं भला चंगा हूँ, क्योंकि मैं सोचता हूँ कि आपकी प्रिय पुत्री की दशा बुरी नहीं है। इस समय आपकी प्रार्थनाएँ ही काम आ रही हैं। और आप लोगों तथा मेरे इस मित्र ने जो सहायता की है वह उन प्रार्थनाओं ही के योग्य है।" यह कहते हुए उस पुरोहित ने अपना भोजन प्रारम्भ कर दिया। वह किसी विद्वान् व्यक्ति की भाँति नहीं; बल्कि एक सैनिक अथवा शिकारी की भाँति खाने पर जुट गया। खाते समय भी वह

फ्लारेन्स-निवासी से बात-चीत करता गया। श्रीमती गेब्रियल नौकरानी की भाँति उसकी ओर देखते हुए खड़ी थीं। उनकी उपस्थिति की कोई विशेष चिन्ता न करते हुए उसने कहा, "तुम कहते हो कि महल में भेज दिये गये। क्या तुम्हारा मतलब है कि यहाँ अब कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो अनन्त सत्य की चिन्ता करे? क्या यहाँ कोई भी ऐसा नहीं है जो यह सोचे कि ईश्वर ने किस प्रकार इस संसार की सृष्टि की। लैम्बर्ट, पटिपन, शुगर, मॉण्टेरियो, मार्ली, आदि कहाँ चले गये? और वे तुम्हारे नवयुवक साथी जो अपने को "पवित्र पाँच" कहा करते थे कहाँ हैं? हाय, मैं अपने प्रश्नों का उत्तर स्वयं दे लेता हूँ। पटिपन और मार्ली तो उस दुर्दिन के पूर्व ही मर गये थे। शुगर और लैम्बर्ट बोहीमिया में हैं क्योंकि यहाँ के लोग सत्यता नहीं जानते और न सत्यता इन लोगों को। लोग कहते हैं कि मॉण्टेरियो पवित्र युद्ध में गया है। कदाचित् वह और अनुभव प्राप्त करके लौटेगा। ईश्वर करें कि वे सब के सब उसी की भाँति सुविचार लेकर जायँ।"

"और ला लैबोरियर अपनी पुस्तकों को जला और यंत्रों को तोड़ कॉर्निलन के संघ में सम्मिलित हो गया है। उन 'पवित्र पाँच' में से केवल मैं बचा हूँ। जॉर्ज रूम सागर में है, ह्यु राजाधिराज के साथ है और दूसरे 'पकर' में हैं। वे पूर्व में हैं जहाँ मैं स्वयं आज होता।

नहीं, मेरे गुरुवर, मैं कहता हूँ कि लाथन्स अन्धकारावृत काल का अत्यन्त अँधेरा केन्द्र है।"

इसी समय दाई जो पलँग के पास थी बोली और पुरोहित रोगिणी के पास चला गया। बालिका अब अधिक शान्त थी। मदिरा जो उसने उसे पिलाई थी उसके पेट में न थमी। तब वह माता को लिटाने, और पेट पर कपड़ा रखने का आदेश देकर अपने शिष्य के पास लौट आया और मेज़ पर रखी हुई शीशी उठा कर उसने कहा, "इसमें से तीस बूँद पिला दो। परन्तु हम पाप कर रहे हैं कि बलकारक औषधि के स्थान पर हम उसे खट्टी मदिरा पिला रहे हैं। क्या तुम कहते हो कि यदि प्रेम-द्वारा हमें अरनॉल्ड अथवा अबुल कैसिस के नियमों द्वारा बनाई गई दो सौ बूँद औषधि नहीं मिल सकतीं, तो पैसों द्वारा कदापि नहीं मिलेगी? क्या किसीके पास यह औषधि नहीं है?"

ग्यूलियो ने धीरे से कहा, "नहीं, जब से सिपाहियों ने साइमन किमकी का औषधालय तोड़ा और उसकी बहुमूल्य औषधियों को नाली में उँडेल दिया, तब से सब लोगों ने दवा-दारू रखना छोड़ दिया।

दूसरे ने कहा, "महल के अतिरिक्त और कहीं नहीं है। आर्क विशप अपने दायें और बायें हाथ का अन्तर जानता है और सत्त एवं काढ़ा को भली-भाँति पहचानता है। वह

मूर्खता-पूर्ण युद्ध में भाग लेने गया है। उसके स्थान पर कौन है ?"

वह फ्लारेन्स-निवासी पुरोहित-सम्बन्धी बातों से अनभिज्ञ था। उसने पलँग के पास बैठे हुए जीनवाल्डो को बुलाया और उससे अपने गुरु का प्रश्न पूछा कि "आर्क बिशप की अनुपस्थिति में लायन्स की बागडोर आज-कल किसके हाथ में है ?" यदि आज प्रातःकाल कोई उससे यही प्रश्न करता, तो ग्यूलियो उसका यही उत्तर देता कि "कोई हो, मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं है।"

जीनवाल्डो ने आदरपूर्वक उत्तर दिया, "सेंट ऐमर के पिता स्टेफ़न चैप्टर के डीन थे। वे ही आर्क बिशप के स्थान पर कार्य कर रहे थे। परन्तु इस समय वे अपने कुटुम्बियों से भेंट करने के लिये बरगंडी चले गये हैं और पिता विलियम जो बड़े कैनन थे उनके स्थानापन्न हैं। मैं जानता हूँ कि क्रिसमसोत्सव में वे ही आर्क बिशप का स्थान ग्रहण करेंगे।"

"सेंट बॉनेट के विलियम, 'रो' के विलियम, चैपिनेल के विलियम, कोलोन के विलियम, मैं सबों को जानता हूँ और उनमें से कोई भी ऐसा नहीं है जो मेरे गुप्तचिह्न को न जानता हो। ग्यूलियो तुम इस स्थानापन्न आर्क बिशप के पास मेरा पत्र ले जाओ।" इतना कहते हुए जॉन ने उसको एक पत्र लिख दिया।

ग्यूलियो ने कहा, "आप ऐसा करने का साहस न कीजिये, मेरे गुरुवर।"

"इस बच्ची के पेट में तुम्हारी जल-मिश्रित मदिरा नहीं पच सकती। उसके भीतर भी उतनी ही पुष्टि कारक औषधियों की आवश्यकता है जितनी उसके चमड़े पर तुम बाहर से लगा रहे हो। आर्क बिशप के औषधियोंवाले सन्दूक में निस्सन्देह मेरी और किमकी की बलकारक औषधियाँ हैं। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। यदि स्वयं आर्क बिशप यहाँ होता, तो कोई भय की बात न होती। वह मेरी ही भाँति औषधियों का प्रयोग जानता है। रहा साहस के लिए, परमेश्वर के एक बच्चे को कहीं भी भय नहीं है। मैं 'यीशु के प्रेम के निमित्त' यहाँ आया हूँ और 'यीशु ही के प्रेम के निमित्त' उसके एक सेवक को इस बच्ची के लिये बलकारक औषधि भेजने की आज्ञा दूँगा। तुम वहाँ जाने से इनकार नहीं कर सकते, वह दवा देने से इनकार नहीं कर सकता। तब, यदि प्रभु की इच्छा हमारे प्रयत्नों में सहायता देने की हुई, तो सब ठीक हो जायगा। कम से कम हम अपनी शक्ति भर 'उसके नाम पर' प्रयत्न करेंगे।"

फ्लारेन्स-निवासी एक शब्द भी न बोला। वह चुपचाप उठा, चिट्ठी ली और सिर नवाया। उस चिट्ठी में लिखा था—

"यीशु के प्रेम के निमित्त।"

सेंट जॉन के कथीड्रल के कैनन मेरे भ्राता विलियम,

आपके झुंड की एक बच्ची फ्लोची वाल्डो के पास बैठ कर मैं यह पत्र लिख रहा हूँ। बच्ची मर रही है क्योंकि हमारे पास अबुल कैसिस के द्वितीय नियम के अनुसार बनी हुई कॉरडोवा की बलवारक औषधि नहीं है। मेरे भाई, उस औषधि को 'उसके नाम पर' भेज दीजिये।

खीष्ट में आपका भाई,

ल्यूगियो का जीन।

और पत्र के नीचे माल्टा के क्रूश का एक चित्र बना था।

फ्लारेन्स का ल्यूलियो पत्र लेकर चौक पार कर गया। जाते समय उसने अपने काले लबादे को जिसे पहन कर आया था पहन लिया। वह जिस विश्वास के साथ कार्य करने जा रहा था, उस पर उसे स्वयं आश्चर्य हो रहा था। यदि कोई उससे कहता कि तुम्हें यह सन्देश ले जाकर जाना होगा, तो वह कह देता कि ऐसा करना मूर्खतापूर्ण है और इसमें

सफलता नहीं प्राप्त हो सकती। पर जब उसे जाना ही पड़ा तो उसके गुरु के विश्वास ने उसे विश्वास प्रदान किया। इतना ही नहीं, बल्कि कार्य की सफलता में भी उसे लेशमात्र सन्देह न रह गया। उसे प्रकट हो गया कि गुरु की समझ में जबतक कॉरडोवा की बलकारक औषधि न मिलेगी, तबतक बालिका के बचने की आशा नहीं की जा सकती। उसे इस समय शुद्ध एवं पुष्टिकारक औषधि की अत्यन्त आवश्यकता थी।

इस भाँति सोचता हुआ वह विद्यार्थी इस विचित्रतम कर्तव्य का पालन करने के लिये चल पड़ा। जीवन में ऐसा अवसर उसे कभी नहीं मिला था। परन्तु उसे सफलता की निश्चयात्मक-पूर्ण आशा थी।

थोड़ी ही दूर जाने के पश्चात् उसे सन्ध्या-प्रार्थना के गान सुनाई पड़ने लगे। सेंट जॉन गिरजे के नये बने हुए मध्य-भाग में सब छोटे-बड़े पुरोहित एकत्रित हो उस महोत्सव के शुभागमन में ईश्वर-भजन कर रहे थे। गिरजे का मध्य-भाग, ओसारा एवं सामने की सड़क लोगों से भरी थी। उस नवयुवक को ज्ञात हुआ कि उस भीड़ में से जाना असम्भव है। तब वह घूम कर बगलवाले छोटे फाटक पर गया। उसमें से होकर वस्त्रागार पार करता हुआ वह पूर्वीय भाग में वेदी के पास पहुँचा। वहाँ से उसने गिरजे में प्रवेश करने का प्रयत्न किया।

कमरे में घुसने में उसे कठिनता न हुई, क्योंकि उस व्यापक उत्साह एवं गड़बड़ी में क़र्जी, सेवक और दारोगा लोग द्वारों पर खड़े हो ग्राम-निवासियों को भीतर करने में लगे थे। अस्तु, फ्लारेन्स-निवासी उस भीड़ के पीछे हो कर जो अर्द्ध अफ़सराना वेष में तमाशा देखने के लिये भीतर घुस रहे थे अन्दर घुस गया। उसने इस भीड़ में से तुरन्त बुद्धिमत्ता-पूर्वक अपने काम के मनुष्य को चुन लिया। उसने उस लम्बे पुरोहित के कान में जो अपने सामने की भीड़ का अवलोकन कर रहा था ग्रामीण भाषा में, जो उसके देश में बोली जाती थी, धीरे से कुछ कहा। उसकी आशा के अनुसार वह पुरोहित उसी का देश-वासी निकल आया। वह ग्यूलियो की बात समझ गया।

ग्यूलियो ने धीरे से कहा, "मैं डीन महोदय से कुछ बातें करना चाहता हूँ।"

पुरोहित ने उसकी धृष्टता पर आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "यह असम्भव है। देखो, वहाँ डीन महोदय आर्क विशप के स्थान पर सुशोभित हैं। एक ही क्षण में वे 'ईगल' (पुस्तक पढ़ने की मेज़) (चोल) की ओर प्रस्थान कर देंगे"।

ढीठ ग्यूलियो ने फिर उसी भाषा में कहा, "जो मनुष्य के लिये असम्भव है, वह ईश्वर के लिये सम्भव है।" यह सुन कर

पुरोहित यह देखने के लिये यह कौन व्यक्ति है जो धर्म-पुस्तक से इस प्रसन्नता और आदर के साथ उद्धरण कर रहा है उसकी ओर घूमा।

ग्यूलियो ने उत्सुकतापूर्वक फिर कहा, "मेरे मित्र, मैं कहता हूँ कि मैं डीन के लिये वह सन्देश लाया हूँ जिसमें जीवन और मृत्यु का प्रश्न है। दूसरे के लिये तो जीवन और मृत्यु का प्रश्न है ही, कदाचित् स्वयं डीन के लिये भी वही प्रश्न है। वे मेरे मार्ग में विघ्न डालनेवाले व्यक्ति से कदापि प्रसन्न नहीं हो सकते।"

पुरोहित ने क्रोधित स्वर में कहा, "कौन तुम्हें रोकता है। यदि तुम जा सकते हो, तो जाते क्यों नहीं? तुम स्वयं देखते हो कि हम दोनों के लिये वहाँ तक पहुँचना असम्भव है। शान्त, शान्त, देखो वे 'ईगल' पर घुटने टेक रहे हैं।"

'ईगल' काँसे का बना हुआ था। उसके परों पर धर्म-पुस्तक पड़ी थी। उसी में से कैनन महाशय चैण्टर के स्थान पर कुछ पढ़नेवाले थे। उन्होंने शुद्ध एवं उत्साह-पूर्ण ध्वनि में पढ़ना आरम्भ कर दिया।

ग्यूलियो ने पर्याप्त उच्च स्वर में अपने साथी से कहा, "मेरे मित्र, आओ, हम दोनों 'यीशु के प्रेम के निमित्त' आगे बढ़ें। हम उनके पास यह सन्देश लेकर पहुँच सकते हैं। कौन

सी ऐसी वस्तु है जिसे हम दानों 'उसके नाम पर' प्रयत्न करके नहीं कर सकते?"

जिस उत्सुकता से उसने ये शब्द कहे थे और जिस नाम की उसने दुहाई दी थी उसने पुरोहित को पिघला दिया। यह न जानते हुए कि वह क्या कर रहा है और यह भूल कर कि उन खड़े हुए मनुष्यों पर उसका कुछ अधिकार है वह पुरोहित लोगों को हटा कर इस भाँति मार्ग करने लगा मानो उस काम में उसका भी कुछ भाग हो। और यदि पवित्र-कार्य में किसी का कुछ भाग होता है, तो अवश्यमेव उसका भी था। उसका ढंग इतना निश्चयात्मक था कि सामने खड़े हुए लोगों ने तुरन्त उसकी आज्ञा मान ली। एक ही क्षण में क्रमी लोगों की पंक्ति के सम्मुख पहुँच कर जो आदरपूर्वक धार्मिकोत्सव देख रहे थे उसे एवं ग्यूलियो, दोनों को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसी क्षण ग्यूलियो के हृदय में ईश्वरीय-प्रेरणा-शक्ति ने प्रवेश किया। उसके हृदय में ऐसा प्रभावोत्पादन हुआ जो प्रायः मानव-जीवन में कम हुआ करता है। जब कोई व्यक्ति अपने से अति अधिक बृहत् जीवन एवं शक्ति द्वारा प्रभावित हो जाता है, तो वह निर्भीकतापूर्वक कार्य करता है। अदृष्ट दृश्यों एवं अगम्य स्थलों में भी वह निर्भय हो चला जाता है। अपने अपरिचित पथ-प्रदर्शक का हाथ पकड़ कर ग्यूलियो गिरजे का पूर्वीय भाग जहाँ वेदी थी पार करता हुआ तथा घुटने टेके हुए पुरोहितों के बीच से 'ईगल' के पास निर्भीकतापूर्वक पहुँच गया। वहाँ

आर्क-कैनन विलियम घुटने टेके प्रार्थना कर रहे थे। आज्ञानुसार पुरोहित ने भी एक ओर घुटने टेक दिये। ग्यूलिया भी दूसरी ओर घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगा। क्रर्जी लोगों को उनका वहाँ जाना अत्यन्त गूढ़ एवं आश्चर्यपूर्ण ज्ञात हुआ। यहाँ के एकत्रित लोगों को भी वह रहस्यमय प्रतीत हुआ, परन्तु उनको आश्चर्य न हुआ। उनके लिये तो उस महोत्सव का एक भाग ही मालूम पड़ा। उस उत्सव में बहुत सी ऐसी बातें हो रही थीं जो रहस्यमयी थीं। उनके लिये उन्हीं बातों में से एक यह भी थी।

स्थानापन्न आर्क विशप को इन दोनों के आने का पता न था। वे तो प्रार्थना में इतने मग्न थे और एकत्रित लोगों को वास्तविक धर्मभाव समझाने में इतने लीन थे, कि उन्हें वाह्य जगत् वा कुछ ज्ञान ही न रह गया था। वे अपने हृदय में ईश्वर से उस बड़े कार्य-सम्पादन में सहायता की प्रार्थना कर रहे थे और धर्म-पुस्तक का भाव समझाते जाते थे। बीच-बीच में भजन-गान के हेतु वे रुक भी जाते थे। पर उनका ध्यान इधर-उधर न जाता था। वह नया बाजा जो उस नये गिरजे में बज रहा था लोगों के लिये एक नवीन वस्तु था। पुरोहित और ग्यूलियो भी चुपचाप घुटने टेके रहे, उन्होंने उनके कार्य में किसी प्रकार की विघ्न-बाधा न डाली।

थोड़ी देर में प्रार्थना-कार्य समाप्त हो गया और चार पुरोहित भजन-गान करने लगे। ज्यों ही डोन ने अपने निजके

उच्चारित शब्दों की धार्मिकता से भयभीत हो अपना झुका हुआ सिर ऊपर उठाया, त्यों ही ग्यूजियो ने उनके कन्धे को छू कर लैटिन भाषा में कहा, "यीशु के प्रेम के निमित्त मैं यहाँ आया हूँ और आपसे बात-चीत कर रहा हूँ। एक मृतक-शैया पर पड़ी हुई बालिका को आपकी अत्यन्त आवश्यकता है। मुझे 'उसके नाम पर' आपके पास आने की आज्ञा दी गई है।"

उस बृहत् वृत्त में कोई भी ऐसा तुच्छ पदधारी पुरोहित न था जो ठीक महोत्सव के समय अनधिकार विघ्न उपस्थित करनेवाले पर क्रोध एवं आश्चर्य के मारे लाल-पीला न हो गया हो। पर विलियम को जिसका हृदय इस उत्सुकतामयी इच्छा से प्रकाशित हो रहा था कि वहाँ के एकत्रित हुए लोग समझ लें कि चरनी में उत्पन्न हुआ एक बालक किस भाँति शान्ति-प्रदान कर सकता है, किस भाँति प्रभुओं का प्रभु और राजाधिराज एक विनम्र कुटिया में सेवा कर सकता है। उसे ज्ञात हुआ कि पवित्र आत्मा ने इस विघ्न द्वारा उसकी हार्दिक प्रार्थनाओं का उत्तर भेजा है। जब उस नवयुवक ने धर्मपुस्तक की भाषा में उस ईश्वरीय प्रेरणा के सहित जो प्रारम्भ से सारा आश्चर्य-कर्म कर रही थी अपना सन्देश कहा, तो इसने तुरन्त उत्तर दिया :—

"प्रभु, मैं तत्पर हूँ, जहाँ आप ले चलेंगे, मैं आपका अनुसरण करूँगा।" उसी क्षण डीन की दृष्टि पुरोहित

अलेक्ज़ैण्डर पर पड़ी। उसकी उपस्थिति को भी उन्होंने उस आश्चर्य-कर्म का एक भाग समझा। उन्होंने उसे स्पर्श कर पुस्तक में का एक स्थान दिखाते हुए कहा, "जब भजन गानेवाले गाना समाप्त करें, तो इस स्थल के आगे के विषय पर उपदेश करना।" इतना कह वे फ्लारेन्स-निवासी को साथ ले वहाँ से चल पड़े। घुटने टेके हुए आश्चर्यान्वित पुरोहितों के बीच से वे गिरजे के मध्य भाग को पार कर अन्धकार-मय वस्त्रागार के तहखाने में पहुँचे। दारोगा से लेकर कैनन तक गिरजे के अफ़सरों का एक झुंड उनके पीछे-पीछे चला, पर उनके मुख्याधिपति ने उन्हें वापस लौटा दिया। उन्होंने कहा, "मैं इस दूत के साथ अकेला जाऊँगा। 'नोएल' (क्रिसमस) का उपदेश तनिक भी कम न होने पाये।"

तब उन्होंने फ्लारेन्स-निवासी की ओर घूम कर कहा, "मैं आपके साथ चलने को तत्पर हूँ।"

उस नवयुवक ने इस बात पर कि उसे इस घटना पर तनिक भी आश्चर्य न हुआ आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "आपको मेरे साथ चलने की आवश्यकता नहीं है। आप केवल इस पत्र को पढ़ लें, बस।" सच बात यह थी कि उस दैवी प्रेरणा में वही होना चाहिये जो कुछ हुआ था और ऐसी ही प्रेरणा-द्वारा सत्य व्यक्ति एक दूसरे से पवित्र आत्मा में

गुँथ जाते हैं। आश्चर्य की बात केवल इतनी है कि ऐसी शक्ति और सिधाई सब जीवों में नहीं होती।

पिता विलियम ने पत्र को आद्योपान्त देखा; उन्होंने 'यीशु के प्रेम' एवं 'उसके नाम पर' की दुहाई पढ़ी, अपने अभ्रष्ट प्राचीन मित्र ल्यूगियो के जॉन का हस्ताक्षर पहचाना और नीचे बने हुए पूर्ण परिचित माल्टा के क्रूस का दर्शन किया। कार्यारम्भ ही से जो प्रभाव उन पर पड़ रहा था, वह इन शब्दों द्वारा तनिक भी कम न हुआ। उन्हें पवित्र पथ-प्रदर्शक की उपस्थिति अब भी ज्ञात हो रही थी। उन्होंने फिर दुबारा पत्र पढ़ा।

उन्होंने उदास होकर आह भरते हुए कहा, "हाय, मेरे भाई, जो कुछ हमारा भाई माँग रहा है, उसे देने की क्षमता मुझ में नहीं है। यदि हमारे भाई सेंट ऐमर के स्टेफ़ेन यहाँ होते, तो वे दे सकते थे, क्योंकि आर्क विशप की औषधियों का ज्ञान उन्हीं को है। कोलो के विलियम भी थोड़ा-बहुत उनके विषय में जानते हैं। पर मैं, मैं तो बिलकुल अनभिज्ञ हूँ। इसके अतिरिक्त मैं उस कमरे को जहाँ वे औषधियाँ हैं खोलने का साहस ही नहीं कर सकता, क्योंकि मुझे भय है कि कहीं ऐसा न हो कि मैं उन देवों को जाग्रत कर दूँ जिनका शान्त करना मेरे वश की बात नहीं।"

ल्यूलियो ने कहा, "मुझे क्षमा कीजिये, मैंने यह विद्या उसी गुरु से सीखी है जिससे स्वयं आर्क विशप ने प्राप्त की है।"

उस पवित्र वातावरण में उसने 'अबुल कैसिस' तथा 'अवेरोज़' ऐसे विधर्मी कुत्तों का नाम लेना उचित न समझा। यदि आप मुझे उस कमरे में ले चलें, तो मैं स्वयं औषधि निश्चित कर लूँगा। जो मनुष्य के लिये असम्भव है, ईश्वर उसी को सम्भव कर देता है।"

विलियम ने कहा, "जैसी प्रभु की इच्छा। यीशु के प्रेम के निमित्त मैं तुम्हारी आज्ञा के अनुसार कार्य करूँगा। जो सेवा 'उसके नाम पर' की जाती है, उसमें कोई भूल नहीं हो सकती।"

ऐसा कहते हुए धर्माध्यक्ष ने तहखाने में उजाला करनेवाली एक पवित्र मोमबत्ती उठा ली और ग्यूलियो को भी दूसरी बत्ती उठाने की आज्ञा दी। कमरे को अन्धकाराच्छादित छोड़, इन विचित्र बत्तियों को लिये उन्होंने आँगन पार किया। सेवा में नियुक्त सेवकों को आश्चर्य चकित करते हुए वे आर्क विशप के गुप्त द्वार से उनके गृह में घुसे। वहाँ का द्वारपाल भी उन्हें देख आश्चर्यान्वित हो गया। आर्क विशप का महल उस समय सर्वोत्तम एवं सर्व सुन्दर गृहों में से एक था। जिस समय वह नवयुवक उस विभूतिमान महल के द्वार पर खड़ा हुआ, उस समय वह वहाँ की शिल्प-कला की सुन्दरता देख कर मुग्ध हो गया। एक क्षण पश्चात् कैनन फिर उसके पास आये और चाभियों का एक बड़ा गुच्छा ले गलियारे के अन्तिम सिरे

तक गये। वहाँ पहुँच कर उन्होंने ताला खोल दिया और मुस-कराते हुए ग्यूजियो से कहा—

"अब तक मैं यह विश्वास करता था कि मैं स्वप्न देख रहा हूँ।"

नवयुवक ने आदरपूर्वक उत्तर दिया, "मेरे स्वामिन्, हम दोनों के पथ-प्रदर्शक अदृष्ट स्वर्ग दूत हैं।"

आर्क विशप के औषधालय के भारी किवाड़ खुल गये। द्वार खोलनेवाले कैनन महाशय स्वयं इस कमरे में पहले कभी नहीं आये थे। उस वैज्ञानिक व्यक्ति को भी रसायन के रहस्य-मय यंत्रों को देखकर आश्चर्य हुआ। ढेर के ढेर यंत्र वहाँ एकत्रित थे। रसायन शास्त्र के बाल्यकाल के कई यंत्रों को उसने पहचान लिया। अपने गुरु के औषधालय में उसने उन यंत्रों का स्वयं प्रयोग किया था। आर्क विशप ने गुरु के भाग जाने पर उन यंत्रों को नष्ट होने से बचा लिया था। उसके विचारा-नुसार किमकी के भी यंत्र वहीं एकत्रित थे। उन रहस्यमय यंत्रों के एकत्रित होने से वह स्थान अनोखी वस्तुओं का एक भंडार सा प्रतीत होता था। पर उन्हें समय खोना नहीं था। अतएव वह नवयुवक इधर-उधर देखने लगा। अन्त में उसकी दृष्टि एक सन्दूक पर पड़ी जिस पर वेनिस की पच्चीकारी की हुई थी। तब उसने अपने साथी से पूछा, "क्या गुच्छे में इस सन्दूक की चाभी नहीं है?" दो-एक बार प्रयत्न करने पर

सन्दूक खुल गया। उसमें काँच एवं चाँदी की शीशियाँ क्रम से रक्खी थीं। नवयुवक ने तुरन्त पहचान लिया कि वे सैरासीन कला के नमूने थीं।

उसने अपनी बत्ती समीप करके शीशियों पर लिखे हुए भिन्न-भिन्न औषधियों के नाम पढ़े। उसकी दृष्टि में कुछ औषधियों का मूल्य एक राजा को बन्दी-मुक्त करने के मूल्य से कम न था। परन्तु इस समय किसी राजा को बन्दी-मुक्त नहीं करना था, प्रत्युत फ़लीची के प्राण बचाने थे। एक ही क्षण में उसे इच्छित औषधि मिल गई। शीशी पर अरबिक और लैटिन में लिखा था, "काँड्डोवा की पुष्टिकारक औषधि जो अबुल-कैसिस के द्वितीय नियमानुसार बनी है।"

ज्यूलियो ने कहा, "श्रीमान् देखते हैं कि इसी औषधि की हमें आवश्यकता है। क्या मैं इसे बच्ची के पास ले जाऊँ।"

धर्माध्यक्ष ने झुक कर शीशी पर की लिखावट पढ़ी। उन्होंने कहा, "यह स्वयं आर्क बिशप के हाथ की लिखावट है। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि ये सैरासीन्स जिन्हें हम कुचल डालना चाहते हैं ऐसी जीवन प्रदायनी औषधियाँ हमारे घर भेज देते हैं। यदि मेरे स्वामी इसे अमूल्य न समझते, तो वे कभी इसकी रक्षा न करते। लेकिन लिखा है कि विधर्मी भी सेवा करते हैं। 'मुझसे माँगो, तो मैं विधर्मियों को तुम्हारी

सेवा करने के लिये दूँगा।' प्रिय पुत्र, जो कुछ आवश्यक हो, 'यीशु के प्रेम के निमित्त' ले जाओ। पवित्र-माता 'उसके नाम पर' कार्य करनेवालों को आशीर्वाद दें।

बिना जाने हुए पिता ने प्रारम्भ और अन्त में लायन्स के दीक्षित दीनों के गुप्त शब्दों का दो बार प्रयोग किया। वह गुणी नवयुवक उन शब्दों को सुन पहले ही की भाँति चौंक पड़ा और सोचा कि सच्चे धर्माध्यक्ष ने उनका प्रयोग बड़ी बुद्धिमत्तापूर्वक किया है। जब उसे ले जाने की आज्ञा मिल गई, तो उसने उसे साथ वाली शीशियों में से निकाल लिया। धर्माध्यक्ष ने सन्दूक बन्द कर द्वार बन्द कर दिया और उसके साथ बच्ची के पास चलने को उद्यत हो गये। उन्होंने कहा, "यदि बच्ची की दशा निराशा-जनक हो तो मैं उसकी अन्तिम क्रिया करूँगा।"

ग्यूलियो ने कहा, "पिताजी, बच्ची अचेत है। पर कम से कम कई घंटों तक उसकी सांस नहीं निकलेगी। इस समय उपदेश की सेवा से आप मुक्त नहीं किये जा सकते। उपदेश समाप्त होने पर यदि उसे आपकी आवश्यकता पड़ेगी तो मैं आपकी सेवा में फिर उपस्थित होऊँगा।"

पुरोहित ने फ्लारेन्स-निवासी को आशीर्वाद दिया और इसने उसे धन्यवाद। फिर दोनों अलग हो गये। जलती बत्ती हाथ में लिये हुए धर्माध्यक्ष ने अन्धकारमयी सड़क को पार

कर भीड़ को गिरजे का द्वार खोलने की आज्ञा दी। महोत्सव के अध्यक्ष को पूर्णतया सुसज्जित देख सारी भीड़ आदरपूर्वक पीछे खिसक गई। तब वह पवित्र व्यक्ति इस घटना पर आश्चर्य करता हुआ आगे बढ़ा। लोग उसके लिये मार्ग छोड़ देते थे। उसके हाथ में अब भी वही बत्ती थी। ऐसा ज्ञात हो रहा था मानो वह स्वप्न देख रहा हो। जनसमुदाय को यह भी उत्सव का एक भाग जान पड़ा। कैनन और क़र्जी लोगों को आश्चर्य हो रहा था। जिस समय उसका विनम्र स्थानापन्न इन शब्दों को पढ़ रहा था, वह वेदी के पास आ पहुँचा :—

"प्रभु की महिमा प्रकट होगी और सब लोग ईश्वर का त्राण देखेंगे।"

पिता विलियम को उन शब्दों का अर्थ कभी इतना स्वच्छ रूप से प्रकट न हुआ था जितना इस समय हो रहा था। उन्होंने पिता अलेक्ज़ैण्डर की बगल में घुटने टेक दिये। वह जलती हुई बत्ती उन्होंने इन्हें थमा दी और फिर अपना पवित्र कार्य प्रारम्भ कर दिया।

इस भाँति यीशु का स्मरण-भोज हुआ। अन्त में पिता विलियम ने यह प्रार्थना की :—

हे प्रभु, हमें ऐसी शक्ति प्रदान कीजिये कि आपके एकलौते पुत्र के जीवन में जिसका स्वर्गीय रहस्य हम इस रात को खा

और पो रहे हैं अपना जीवन व्यतीत करें। उसी प्रभु के नाम पर हम यह प्रार्थना करते हैं।"

पिता विलियम को ऐसा ज्ञात हुआ कि इस नवीन जीवन के विषय में आज के पूर्व उन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं था। घुटने टेके हुए जब उन्होंने सोचा कि किस भाँति आज रात में प्रेम-धर्म द्वारा फ़लीची तथा अन्य कष्टान्वित रोगी जीवन प्राप्त कर रहे हैं, तो उन्हें इस बात का अपूर्व अनुभव हुआ कि "प्रभु ने अपने लोगों को दर्शन दिया है।"

दसवाँ परिच्छेद

क्रिसमस का प्रातःकाल

हम्शी द्वार पर अपने स्वामी के लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने बतलाया कि गुरु श्रीमती वाल्डो के भोजनालय में हैं। अस्तु, वह नवयुवक पुष्टिकारक औषधि लिये हुए वहीं चला गया।

गुरु अपने वाह्य-वस्त्रों को निकाल, कोयलों के पास खानसामा की तरह कार्य में जुटा था। उसे देख उसने कहा, "ईश्वर को धन्यवाद है कि तुम आ गये, और वह वस्तु जिसके लिये तुम भेजे गये थे लेकर आये। उसने लाल औषधि को प्रकाश के सामने करके देखा और उसकी उत्तमता एवं पूर्ण स्वच्छता देख उसके चेहरे पर एक मधुर मुसकान दौड़ गई।

उसने कहा, "प्रिय पुत्र, यह जलमयी मदिरा बच्ची के पेट में नहीं ठहर सकती। तुमने इसे कम मात्रा में पिला कर ठीक ही किया था। अभी-अभी, जैसा तुमने वर्णन किया था उसे ऐंठन का एक दौरा हुआ है। मैं नहीं जानता, पर कदाचित् मेरे ही कारण इस दौरे की पुनरावृत्ति हुई है। मैं उसे अपनी दृष्टि के सामने बलकारक औषधि के अभाव के कारण मरते न देख सकता था। अब हम उसके हृदय की गति उसके पेट में बिना मदिरा की बाढ़ लाये ही परिवर्द्धित कर सकते हैं।

तुम्हारे चले जाने पर मेरा विश्वास घटने लगा था। मुझे भय हुआ कि यदि वे तुम्हें पकड़ रखेंगे, तो फिर बालिका न बच सकेगी। अतएव मैं श्रीमती के बर्तनों में औषधि तैयार करने लगा। पर यह औषधि इतनी बलवती नहीं है जितना यह सत्त।"

अस्तु, उन्होंने बच्ची के कमरे में फिर एक बार प्रवेश किया।

फ्लारेन्स-निवासी को यह देख बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके जाने के पश्चात् बालिका बहुत दुर्बल हो गई थी। वह कमरा छोड़ने से पूर्व वहाँ पूरे सत्ताईस घंटे था। प्रत्येक मिनट में उसने उसकी मुखाकृति देखी थी। उस समय क्षीणता क्रमशः इतनी हो रही थी कि बार-बार देखने से उसे अन्तर प्रकट ही न हो पाता था। पर उसके एक घंटे की अनुपस्थिति में

आकाश-पाताल का अन्तर पड़ गया था। अपनी अनुपस्थिति के कारण अब वह उस अन्तर को विस्तारपूर्वक समझ गया।

ल्यूगियो के जॉन ने तीन-चार चाँदी के चम्मच गरम कर रखे थे। हाथ में दस्ताना पहन कर उसने उनमें से एक उठा लिया और आवश्यकतानुसार यीशु द्वारा प्रेषित औषधि को उसमें उंडेल एक अर्द्ध मुँदे पानी के प्याले पर शीतल किया। तत्पश्चात् दृढ़ हाथों से उसने बच्चो के बैठे हुए दाँतों को उभाड़ कर उसके मुख में उंडेल दिया। जिस समय वह उसे दवा पिलाता था, वह तनिक भी न छटपटाती थी। जीनवाल्डो और गेब्रियल चारपाई के पास बैठे सब देखते रहे।

वैद्य अपना एक हाथ बच्ची के पेट पर रखे था और दूसरे से आँखें बन्द कर नाड़ी की गति गिन रहा था। तत्पश्चात् कमरे के दूसरे छोर पर जा, उसने ग्यूलियो के पेंडुलम को हिला दिया। थोड़ी ही देर में बच्ची के मुख के भाव से प्रकट हो गया कि अब वह कष्ट-मुक्त हो रही है। पाँच मिनट तक लोग उसके मुख की ओर एकटक निहारते ही रहे, और किसी के मुख से एक शब्द भी न निकला। उस बीच में बच्ची ने दो बार अपना सिर हिलाया, मानो वह कह रही हो, "अब मैं सोऊँगी।" अब उसकी मुखाकृति से ज्ञात होने लगा कि वह बिल्कुल कष्ट-मुक्त हो गई। फ्लारेन्स-निवासी ने कई बार पेंडुलम हिलाया, और उसका गुरु बार-बार हृदय और श्वास की गति की परीक्षा करता रहा।

वह कुछ बोलता न था और न कोई अन्य ही बोलता था। पर, कदाचित् दस मिनट के पश्चात् परीक्षा-फल से सन्तुष्ट होकर उसने कुछ बूँद औषधि फिर गरम की और बालिका के मुँह में उंडेल दी। इस बार मुँह खोलने में वह तनिक भी न छटपटाई। छटपटाने से कभी-कभी उनके कार्य में बड़ी बाधा पड़ती थी। दवा पिला कर गुरु ने उसके मस्तक पर अपना हाथ रखा और मुसकराया। इसी मुसकराहट के देखने की आशा में वहाँ के सब लोग बैठे थे। फिर उसने धीरे से श्रीमती गेब्रियल से कहा, "अब कपड़े से उसका पेट सेंकिये और उसके पैरों के नीचे गरम पानी रख दीजिये। यदि उसे नींद आ जायगी तो वह चंगी हो जायगी"। तत्पश्चात् उसने ग्यूलियो से कहा, "इस विषय में औरों का मत पोप सिलवेस्टर से अधिक माननीय है।

तब सब लोग बैठ गये। दोनों वैद्य आग के पास और माता-पिता पलँग के पास। एक कोने में एक नौकरानी बैठी थी; पर कोई एक शब्द भी न बोल रहा था। अन्तिम कार्य जो उनकी शक्ति कर सकती थी, कर दिया गया। उस झुंड के प्रत्येक व्यक्ति ने भरसक प्रयत्न किया था और प्रत्येक व्यक्ति जानता था कि जीवन-मरण का प्रश्न अब उसके हाथ में नहीं है। सब लोग अपने-अपने ढंग से प्रार्थना कर रहे थे। यहाँ तक कि हब्शी भी अपने ईश्वर की वन्दना कर रहा था। माता, सेंट फ़लीची और सेंट गेब्रियल की प्रार्थना में मग्न थी।

दुःखित पिता ने अब तक समझ रखा था कि उसकी पुत्री और स्त्री ही आवश्यक प्रार्थना करने को पर्याप्त हैं, अथवा यदि और आवश्यकता पड़ी, तो वह किसी को दाम देकर प्रार्थना करा लेगा। फ्लारेन्स-निवासी जीवन के आत्मा की वन्दना कर रहा था कि वह जीवित आत्मा बच्ची की आत्मा को एवं उसकी गति को तीव्र कर दे ताकि माँस एवं रक्त, औषधि एवं विष उसकी आवश्यकताएँ पूर्ण करें और उसकी आज्ञा मानें। पुरोहित जो सबसे अधिक बुद्धिमान् था परमपिता परमात्मा की प्रार्थना कर रहा था। वह कह रहा था—"हम सब के पिता, हम सब की सहायता कर।"

इस समय फ्लारेन्स-निवासी का पेंडुलम शान्त लटक रहा था। अतएव अपने-अपने हृदय की गति गिन कर अनुमान करने के अतिरिक्त बीतता हुआ समय जानने का और कोई उपाय उनके पास न था। पर अत्यधिक समय व्यतीत न होने पाया था कि गुरु ने वहाँ की शान्ति भंग कर दी। वह बालिका के पलंग के पास गया और उसके सिर एवं हृदय पर हाथ रख कर परीक्षा की। तब प्रसन्न हो मुसकराते हुए उसने अपने सहायक की ओर सिर हिलाया और धीरे से कहा—"इस बार और अधिक औषधि लाओ।" श्रीमती गेब्रियल उत्सुक एवं प्रश्नपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देख रही थीं। इसका उत्तर उसने केवल मुसकराकर और सिर हिला के दिया। इतना

सैन पर्याप्त था। अस्तु, वह बेचारी घुटने टेक कर हृदय से शान्तिपूर्वक प्रार्थना करने लगी।

कुछ क्षण तक वैद्य ने उसे प्रार्थना में मग्न रहने दिया, पर कुछ देर पश्चात् उसने उसका कन्धा छू कर कुछ करने को कहा। इससे उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। वह काम केवल सिर के नीचे वाले तकिये को बदलना था और बलवान नौकरानी की सहायता से बच्ची को उठा कर पलंग के दूसरी ओर लिटा देना था। ऐसा करने से सोने का अच्छा अवसर मिल जायगा। इस समय नींद ही प्रकृति की सर्वोत्तम औषधि ज्ञात होती थी। जब श्रीमती सौंपा हुआ कार्य कर चुकीं, तब वैद्य ने उन्हें तथा उनके पति को कमरे से चले जाने की आज्ञा दी। नौकरानी से उसने फ्लारेन्स-निवासी के हेतु एक पलंग बिछाने को कहा, मानो वही उसका गुरु हो। जब पलंग तैयार हो गया, तो उसने उन दोनों को भी वहाँ से भेज दिया। तत्पश्चात् हब्शी दास को आग के पास और लकड़ी एकत्रित करने की आज्ञा दे उससे गलियारे में बुलाये जाने की प्रतीक्षा करने को कहा। उसने सब बत्तियाँ बुझा दीं और पलंग के सामने का पर्दा हटा दिया। तब वह स्वयं एकमात्र रक्षक बन आग के पास पड़ी हुई आराम-कुर्सी में लेट गया और शान्तिमयी रात्रि में अपने प्रयत्नों तथा प्रार्थनाओं के फल की प्रतीक्षा करने लगा।

चिमनी के पीछे आग की चिनगारियाँ चारों ओर उड़ रही थीं मानो वह देखनेवाले से कोई अदृष्ट-कहानी कह रही हों।

आग के सामने बैठा हुआ वैद्य अतीत का ध्यान कर रहा था। आज ही दोपहर को जब वह सेंट जेरोम के उपदेशों के पाठों को मिला रहा था तब कोयले के व्यापारी ने आकर उसके कार्य में विघ्न डाल दिया। आज का अनुभव उसके सम्पूर्ण जीवन के अनुभवों से अनोखा था। यद्यपि गुरु को अतीत के विषय में अधिक सोचने की बान न थी, तौ भी आज प्राचीन स्मृतियों के बीच में बैठ कर अतीत का ध्यान न करना उसके लिये असम्भव हो गया।

उन दो ब्रह्मचारियों में से, जो अचानक कॉर्निलन के फाटक के पास मिल गये थे, एक उसका लँगोटिया मित्र था। वह उसके पिता के एक समीपी पड़ोसी का पुत्र है। दोनों में बचपन से मित्रता थी। एक साथ दोनों बचपन में गौरइयों को पकड़ने के लिये बालू में गड्ढे बनाते थे। दोनों साथ-साथ बढ़े थे, दोनों ने साथ-साथ खेतों में काम किया था। जब वे बड़े हो गये, तब दोनों ने एक साथ पढ़ना-लिखना सीखा। वहाँ का पुरोहित दोनों को बहुत चाहता था। वह गिरजे में प्रार्थना के समय हल्ला-गुल्ला मचानेवाले बालकों को निरुत्साहित कर देता था। जब वे कुछ बड़े हुए तो उसने उन्हें कपड़े पहनाकर घंटी, पुस्तक, होम की सामग्री आदि लाने का काम सौंप दिया। वह उनको साथ लेकर टहलता था और भक्त, उनके युद्ध और विजय, खेतों तथा दलदलों में रहनेवाले पक्षी, साँप, मेंढ़क, फल, फूल आदि के विषय में बातें किया करता था।

अपने स्वाभाविक झुकाव तथा पुरोहित के चुनाव के कारण वे गिरजे के कार्यों में भाग लेने लगे। जिस समय अन्य लड़के गृह-निर्माण, बाग़वान, व्यापारियों के दूतत्व आदि का काम कर रहे थे, अथवा किसी बड़े आदमी के यहाँ नौकर बन बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहन कर और लड़कों को ललचा रहे थे, उस समय फ्रैंस्वा का जीन गिरजे में सेवा कर रहा था, अथवा पुरोहित से शिक्षा ग्रहण कर रहा था, या उसके सन्देशों को इधर-उधर ले जा रहा था। कभी-कभी उसे कथीड्रल भी जाना पड़ता था। वहाँ के आर्कडीकन एवं कैननों से उसकी घनिष्ठता हो गई थी। जिस समय उसके अन्य साथी सांसारिक कार्यों में मग्न हो रहे थे, उस समय वह आत्मिक अध्ययन में लीन था। उन दोनों ब्रह्मचारियों में फ्रैंस्वा, जिसका धार्मिक नाम स्टेफ़न था, बड़ा था। एक बार उसे क्लेयर वॉक्स के संघ में सन्देशा ले जाना पड़ा था। उसके उत्तर की प्रतीक्षा में उसे कुछ देर तक वहाँ ठहरना भी पड़ा था। उसी समय महान् बर्नर्ड की मृत्यु हुई थी। सारा यूरप बर्नर्ड का बड़ा आभारी था और उसको आदर की दृष्टि से देखता था। फिर गुरु ने सोचा कि उसी गम्भीरता एवं उदासीपूर्ण घंटे की शिक्षा से मैंने प्रतिज्ञा कर ली कि दूसरों की सहायता एवं सेवा में अपना जीवन अर्पण कर दूँगा। इस भाँति कई वर्षों की जीवनी उसके ध्यान में एक-एक के पश्चात् आती रही। उन वर्षों की घटनाएँ एवं प्रसन्नताएँ एक-एक करके उसके मस्तिष्क में आने लगीं।

अपने फुर्तीले मित्रों के साथ वह नदी में सैर किया करता था। इस घटना की सुधि श्रीमती मांट फ़्रैरैण्ड ने दोपहर को उसे दिलाई थी। इस सुधि से उसके हृदय में एक मरोड़ सी उत्पन्न हो गई। जिस समय का दृश्य वह सोच रहा था उस समय भी उसके हृदय में एक हलचल मची थी। उसने अपने तई पूछा, यदि—?

"यदि मैं उस समय पुरोहित बनने की प्रतिज्ञा भंग कर देता और यदि अपनी माता की दत्तक पुत्री ऐनी से जो वीर, सत्य, स्वामि-भक्त और सुन्दर थी अपने साथ विवाह कर लेने को कहता, और यदि वह भी मेरे साथ विवाह करना स्वीकृत कर लेती, तो क्या हम दोनों मिल कर ईस्वर एवं मनुष्य की सेवा न कर सकते? क्या तब हम अपने एवं अन्यों के जीवन को स्वर्गीय न बना सकते? पर मैं उससे विमुख हो गया। इन मनुष्यों को भी जिनके बीच में आज मैं हूँ मैंने त्याग दिया और पुरोहिती-शिक्षा प्राप्त करने लगा। इस समय वह मॉण्ट मर्ले के संघ में ब्रह्मचारिणी बनी बैठी है। क्या वह इस जीवन से प्रसन्न है? क्या मैं ही इस जीवन से प्रसन्न हूँ?"

तब युवावस्था की शिक्षाओं एवं प्रतिज्ञाओं का दृश्य आया। उस समय के साथियों की सुधि आई। वे कैनन, डीकन, आर्क विशप और विशप बन गये हैं। वे फ़िलिप और रिचर्ड के साथ पूर्व देश में हैं। उनमें से कुछ अपने घरों के

स्वामी हैं। हाँ, बहुतों का स्वर्गवास हो गया है। जब वे एक साथ काम कर रहे थे तब कहा करते थे कि अमुक यह होगा और अमुक यह पद धारण करेगा; पर सब को सब बातें झूठी निकलीं।

फिर घटनापूर्ण-जीवन-काल आया। उन दिनों की सुधि आई जब लायन्स में वह प्रसन्नतापूर्वक प्रत्येक भाँति के उत्सवोत्सुक व्यक्तियों को उनका पथ-प्रदर्शन कर रहा था। उस समय उसके हाथ में इतना काम था कि अतीत एवं भविष्य के विषय में सोचने का उसे अवसर ही न मिलता था। पीटर वाल्डो का उत्साह कैसा अदम्य था। ज्यों-ज्यों वे धर्म पुस्तक एवं पत्रियों का अध्ययन करते थे त्यों-त्यों नवीन सत्य और उच्च जीवन का रहस्य प्रकट होता जाता था। सब एक दूसरे के साथ सहानुभूति रखते थे। वे अपने को 'लायन्स के दीन' कहते थे। सड़कों, गलियों, झाड़ियों, खाइयों आदि स्थानों से भिक्षुकों, स्त्रियों, बच्चों, भूखों आदि को एकत्रित कर उन्हें भोजन खिलाते थे और उनके साथ प्रार्थना करते थे। इसी समय में उसने वैद्यक शास्त्र का अध्ययन किया था जिसका फल आज की रात्रि में उसे मिल रहा है। उसने कॉरडोवा और सेविल की यात्रा भी की थी। किमकी और अबुलकैसिस से उसकी भेंट हुई थी। रिवकर्ड ने भी जो आजकल आर्क विशप हैं पर्याप्त उत्साह प्रदर्शन किया था। वे और जॉन दोनों अबुल-कैसिस की अँधेरी कोठरी में गये थे और सत्त निकालने की

आश्चर्यपूर्ण रीति देखी थी। फिर दोनों ने अपना यंत्र बना कर वैसे ही सत्त निकालने का प्रयत्न किया था और उसमें उन्हें सफलता भी मिली थी। आह! उसके पश्चात् क्या हुआ? रिचर्ड लायन्स का आर्क विशप बन गया और ल्यूगियो का जॉन देश से निर्वासित कर दिया गया। सदैव उसकी जान अत्यन्त भयावह स्थिति में रहने लगी।

इस भाँति परीक्षा के दिनों की सम्पूर्ण बातें उसके ध्यान में आईं। पहले उसने पीटर वालडो बर्नर्ड और स्टेफ़न के साथ धर्मपुस्तक सुधारने का काम किया। फिर पीटर वालडो के साथ उसने रोम की यात्रा की। पोप ने उसका स्वागत किया। उस स्वागत से उनका उत्साह और भी बढ़ गया। फिर बेलमेइस के जॉन पोप का पत्र पाकर अत्यन्त क्रुद्ध हो गये। झूँठ-मूँठ की जाँच कर उन्हें वहिष्कृत कर दिया। यह वहिष्कृत-काल देश-निर्वासन-काल से भी अधिक दुखदाई था। पीटर दुबारा रोम गया। ल्यूसियस ने राज-परिषद् आमंत्रित किया। क्लर्जी लोग साधारण व्यक्तियों के प्रतिकूल थे ही, वे अग्राह्य कर दिये गये। फिर जॉन ने उच्च स्वर से कहा, "शोक, जैसी दशा प्रारम्भ में थी, वैसी ही सदा रही। मन्दिर के प्रारम्भ में बेचारे बढ़ई की दूकान का स्वागत नहीं किया जा सकता था, और न आजकल ही किया जा सकता है। उसे लोगों ने ग्रहण न किया प्रत्युत उससे घृणा की।"

क्या बोल कर उसने अपनी रोगिणी की नींद में बाधा डाल दी है ?

वह तकिये पर घूम कर "माँ, माँ" कह रही थी।

ल्यूगियो के जॉन ने बत्ती सामने कर दी ताकि वह उसे देख ले। फिर उसने धीरे-धीरे उसके पलंग के पास जा कर कहा, "तुम्हारी माँ सोरही हैं, प्यारी बच्ची। उन्होंने तुम्हारी देख-भाल के लिये मुझे यहाँ नियत कर दिया है। और ये अंगूर रख दिये हैं कि उनसे तुम अपने होठ तर कर लो।"

बालिका ने यह सोच कर कि आधी रात को उसे अंगूर खाने की क्या आवश्यकता है हँसते हुए कहा, "ओंठ तर करने के लिये अंगूर।" तब उसने अपनी केहुनी के बल उठने का प्रयत्न किया। पर उसे ज्ञात हो गया कि अभी उठने की शक्ति उसमें नहीं है, अतएव वह फिर तकिये पर गिर पड़ी और सन्देहपूर्वक कहने लगी, "मैं कहाँ हूँ ? यह क्या है ?"

"तुम बहुत रोग-ग्रस्त हो गई थीं, प्यारी बच्ची, पर अब अच्छी हो। लो, ये अंगूर खा लो। इससे तुम्हारी माँ प्रसन्न होंगी, अथवा लो यह थोड़ा सा शोर्वा पी लो। तुम्हारी माँ तुम्हें पिलाने को इसे दे गई हैं।

"औषधि दे गई हैं? क्या मैंने जड़ी-बूटियों की कुछ औषधि नहीं पी है? या—या—केवल यह एक भयानक स्वप्न था? ओः मैंने बड़ा भयानक स्वप्न देखा है।" इतना कह वह बिल्कुल थकित हो तकिये पर गिर पड़ी।

"प्यारी फ़लीची, तुम सब भूल जाओगी। माता की औषधि पी लो और फिर यह बलकारक औषधि पी कर सो जाओ।" बहुत अधिक कहने-सुनने की आवश्यकता न थी। जिस समय वह उसे खिला रहा था, बच्ची शान्त पड़ी थी। दवा पी लेने पर उसने उसे उसी सुन्दरता से धन्यवाद दिया जिस भाँति वह भिक्षुक अथवा सेंट टामस के गिरजे के पुजारियों से बोला करती थी। फिर तुरन्त ही वह सो गई। इस बार की नींद इतनी गहरी एवं सुन्दर थी कि उसके पीले चेहरे से कष्ट के सारे चिह्न मिट गये। पुरोहित ने यह देख ईश्वर को अपने हृदय से धन्यवाद दिया। यह ईश्वर ही की कृपा थी कि उसका स्वास्थ्य फिर लौट रहा था और एक बच्ची के सोने का सुन्दर दृश्य उसके सामने उपस्थित था।

जब वह आग के पास फिर लौट आया तो उसे कथीड्रल के घंटों की सुरीली झनकार सुनाई पड़ी। फिर एक के पश्चात् दूसरे गिरजे में घंटे कलरव करने लगे और जीवन के प्रभु के जन्म-काल की घोषणा देने लगे।

ल्यूगियो के जॉन ने आदरपूर्वक कहा, "हमारे यहाँ एक बच्चा उत्पन्न हुआ है।"

धीरे-धीरे रात बीतने लगी; पर उसे स्वप्न में भी यह ध्यान न आया कि द्वार की दूसरी ही ओर एक चटाई पर श्रीमती गेब्रियल दबकी बैठी हैं और अपनी बच्ची के पास आने की सैन अथवा आज्ञा की प्रतीक्षा कर रही हैं। सारे घर में शान्ति छाई हुई थी और वह बुद्धिमान् व्यक्ति सोच रहा था कि सब लोग उसकी आज्ञा मान कर सो रहे हैं। जब-जब उसे अवसर मिलता था, तब-तब वह बच्ची को शोर्वा पिला देता था और आर्क विशप की पुष्टिकारक औषधि भी दे देता था। वह सुन्दर बालिका नींद में कई बार मुसकराई। ज्यों-ज्यों प्रकृति अपना अधिकार जमाती जाती थी, त्यों-त्यों विष का बल कम होता जाता था और अच्छे-अच्छे स्वप्न उसे दिखाई देते थे। अन्त में रात्रि व्यतीत हो गई। उसने पर्दा हटा कर देखा तो भूरा प्रकाश पूर्व की ओर दृष्टि गोचर हो रहा था। इस प्रकाश में प्रातःकाल के तारे सुन्दर रीति से चमक रहे थे और उनका प्रतिबिम्ब नदी के जल में पड़ रहा था। प्रकाश इतना मधुर था कि उससे बालिका की नींद में कोई बाधा न पड़ सकती थी। उसने हब्शी से श्रीमती गेब्रियल को बुलाने के लिये कहा। और देखो, वे तो वहाँ पहले ही से उपस्थित हैं। वह उन्हें फ़लीची के मुख पर नवीन जीवन का प्रकाश दिखाने के लिये पलँग के पास ले गया। ज्यों ही वे वहाँ पहुँचे, बालिका ने अपनी आँखें

खोल दीं और उत्साहपूर्वक चारों ओर निहारा। वह उठ बैठी और "माँ, माँ" पुकारने लगी।

तब उसने बच्ची को उसकी माँ को सौंप दिया।

उस नवोत्पन्न जीवन के पारितोषिक द्वारा उस घर का क्रिसमस दिवस प्रारम्भ हुआ।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

बारहवीं रात्रि

जब बारहवीं रात्रि आई तो जीनवाल्डो के कारख़ाने के बड़े कमरे में से सब चरखे निकाल दिये गये। उनके स्थान पर तीन लम्बी मेज़ें रख दी गईं जो उस लम्बे कमरे के एक छोर से दूसरे छोर तक फैली थीं।

दिन भर रसोई-गृह में उत्साही नौकरों की भीड़ लगी रही और पड़ोसियों से प्रार्थना की गई थी कि अपनी-अपनी रसोई में बढ़िया-बढ़िया भोजन तैयार करें। लायन्स में इस प्रकार के भोजन की तैयारी कई वर्षों से नहीं देखी गई थी। लोग कहते थे कि "जब आर्क विशप ने राजा फ़िलिप और रिचर्ड को

निमंत्रित किया था, तब भी इस प्रकार का वैभवपूर्ण भोज न हुआ था।"

उस दिन प्रातःकाल में फ़लीची, उसकी माता, उसके पिता, उसकी मौसेरी बहन गेब्रियल और कुटुम्ब के बहुत से दूसरे लोग जिनका नाम गिनाना कठिन है, सब मिल कर कथीड्रल को धन्यवाद देने चले। फ़लीची की इच्छा थी कि लोग उसे उसी के सेंट टामसवाले गिरजे में ले चलें जो पहाड़ी की चोटी पर था, पर वह बहुत दूर था। यद्यपि फ़लीची एक रथ में बैठी थी जो प्रायः बहुत कम प्रयोग किया जाता था, पर तो भी वहाँ पहुँचना कठिन था। कथीड्रल में भी वे तभी उपस्थित हो सकते थे जब पिता विलियम वहाँ की प्रार्थना का संचालन करें क्योंकि बिना उनके उनका उत्सव पूर्ण ही नहीं हो सकता था।

प्रार्थना के पश्चात् वे घर लौट आये। तब वह बड़ा दालान खोल दिया गया। फ़लीची को यह दालान बड़ा रहस्यमय प्रतीत होता था, क्योंकि कभी-कभी ही उसमें दिन का प्रकाश प्रवेश कर पाता था; परन्तु आज प्यारे बूढ़े यूड्ल ने जो फ़लीची के उत्पन्न होने के पूर्व ही से उस कुटुम्ब के नौकरों की सरदारी कर रहा था उसे ख़ूब सजा रक्खा था। प्रत्येक छोर पर दहकती हुई आग जल रही थी। यूड्ल ने लड़कों से सदैव हरी रहनेवाली पत्तियाँ मँगा कर चिमनी, खिड़की आदि स्थानों पर टाँग दी थीं। जीनवाल्डो ने दूर-दूर से लोगों

को निमंत्रित किया था। वे सब एक-एक करके आने लगे। जीनवाल्डो तथा उसके कुटुम्ब के लोग उनका आदर-स्वागत करते थे। पहले तो नवागंतुक कुछ लज्जित से हुए, पर जीन-वाल्डो के आदर-सत्कार ने सब को लज्जा दूर कर दी और वे सब हिल-मिलकर आनन्द करने लगे। उस समय दालान की शोभा अवर्णनीय हो गई। लोग ज़ोर-ज़ोर से आनन्दपूर्वक आपस में बातें करते थे। प्यारी छोटी फ़लीची एक आराम कुर्सी पर बैठी थी। उसकी समझ में उसे इतनी सँभाल की आवश्यकता न थी; पर उसके माता-पिता प्रतिक्षण उसकी चिन्ता में लगे रहते थे। फ़लीची के पास कई सहायिकाएँ नियत कर दी गई थीं जो उसके सन्देश इधर-उधर ले जा रही थीं। उसने कहा, "मैं सिंहासनासीन रानी हूँ।" वास्तव में उन एकत्रित लोगों के बीच वह रानी के समान सुन्दर लग रही थी। गेब्रियल उसकी मुख्य सहायिका थी। वह कभी उसके कान में कुछ कहती और कभी इधर-उधर दौड़-धूप करती, मानो फ़लीची की आज्ञाओं का पालन बड़े परिश्रम से हो सकता था। पहले घंटे में सीसेल के मार्क की सुन्दर पुत्री फ़ैनकन फ़लीची की कुर्सी के पास लजाती हुई खड़ी रही। वह छुट्टी के पहनावे पहने थी जैसा पर्वतीय लोग पहनते हैं। उसके पहनावे इतने सादे एवं सुन्दर थे कि लायन्स की लड़कियों का ध्यान तुरन्त उनकी ओर आकर्षित हो जाता था। प्रथम चुम्बन ही में वह फ़लीची से हिल-मिल गई। हाँ फुर्तीली, कूटनीतिज्ञ

प्रबन्धकारिणी गेब्रियल से हिलने-मिलने में उसे अधिक समय लगा। पर अन्त में फैनकन भी वहाँ के आदर-सत्कार से पिघल गई। दिन ढलते-ढलते सब अतिथि आ गये और सम्पूर्ण दालान में नाच-गान होने लगा। फ़लीची के सिंहासन के चारों ओर सदैव एक दरबार सा लगा रहता था और वह जोड़े चुन-चुन कर उनको नाचने के लिये भेज दिया करती थी।

सूर्यास्त के पूर्व ही अन्य सब लोग भी उस उत्सव में सम्मिलित हो गये। जिस समय यूड्स श्रीमती गेब्रियल को सूचना दे रहा था कि सब तैयारी सम्पूर्ण हो गई है, उसी समय पिता जॉन भी अतिथि के रूप में फिर आ उपस्थित हुए। श्रीमतीजी उन्हें अपनी प्यारी पुत्री फ़लीची के पास ले गईं। उन्होंने अपने अभ्यस्त मधुर एवं नम्र ढंग से कहा, "श्रीमहारानीजी मुझे आज्ञा मिली है कि अब मैं आपको भोजन करने लिवा चलूँ। अतएव आप मेरे साथ चलिये और सब लोगों को वहाँ चलने की आज्ञा दीजिये। इतने में पिता विलियम वहाँ आ उपस्थित हुए। उन्हें देख कर फ़लीची आश्चर्य-चकित एवं भयभीत हो गई। उन्हें उसने पहले कभी नहीं देखा था। वे उसकी माता का हाथ पकड़े पिता जॉन का अनुसरण कर रहे थे। तब आज्ञा हुई कि फ्लारेन्स-निवासी ग्यूलियो श्रीकुमारी ला एस्ट्रेंज के साथ चले। उनके पीछे अन्य अतिथि चलने लगे। सब लोगों ने अपने लिये जोड़ा चुन लिया था। कुछ मिनट

के पश्चात् सब को बैठ जाने की आज्ञा मिली। फ़लीची अपनी माता के पास बैठी और उनके बगल में दोनों पुरोहित तथा ग्यूलियो और ला पस्ट्रेंज बैठे। फिर मॉट फ़ेरैण्ड के बेरन और उनकी स्त्री श्रीमती एलिक्स बैठीं। दोनों ब्रह्मचारी स्टेफ़न और ह्यू भी संघ से छुट्टी लेकर आ गये थे। मिल का ग्वाल्टियर भी उपस्थित था। सीसेल का मार्क भी अपनी स्त्री और बच्चों के साथ आ गया था। उसका सबसे छोटा बच्चा ह्यूबर्ट भी उनके साथ आया था। बेचारा ग्रिनहैक पट्टी में हाथ लटकाये वर्तमान था। पुल पर के फाटक का अफ़सर और द्वारपाल दोनों बुला लिये गये थे। पर्वत का किसान भी निमंत्रित किया गया था। वे साईस भी जिन्होंने उस दिन घोड़ों की देख-भाल की थी भोज में बुलाये गये थे। वह बालक भी जो सीयर-ब्लैंक को अस्तबल में ले गया था आया था। पिता अलेक्ज़ैण्डर भी जो फ्लारेन्स-निवासी को गिरजे के मध्य भाग से निर्भीकता-पूर्वक डीन के पास ले गये थे उपस्थित थे। प्रत्येक दूत जो उस भयानक रात्रि में फ़लीची के पिता तथा वैद्य को बुलाने भेजा गया था भोज में सम्मिलित था। प्रत्येक पड़ोसी जिसने फ़लीची की बीमारी में तेल, बरफ़ अथवा जड़ी-बूटी से सहायता की थी तथा प्रत्येक दासी जिसने उसके लिये गरमी का प्रबन्ध किया था, निमंत्रित थे। भजनीक और पेराट्वायन भी आये थे। हर कोटि के बहुत से अतिथि वहाँ उपस्थित थे। उनमें कुछ उच्च कोटि के थे, कुछ साईस थे,

कुछ दास-दासियाँ थीं। जिस किसी ने उस परीक्षा की रात में तनिक भी सहायता दी थी, वह अवश्य भोज में निमंत्रित किया गया था।

पिता विलियम ने भोज के लिये ईश्वर का आशीर्वाद माँगा, फिर आनन्द से भोज प्रारम्भ हुआ। नवयुवक तथा युवतियाँ एक दूसरे को छकाने का गुप्त मसाला लाई थीं। बारहवीं केक में पकाये गये पवित्र सेम-बीज को काटने का सभी प्रयत्न कर रहे थे। फ़लीची ने उसे काटने का ढोंग रचा, पर वास्तव में वह ल्यूगियों के जॉन के दहिने दृढ़ हाथ से काटा गया था।

नहीं, इसमें धोखा देने अथवा बलप्रयोग की कोई आवश्यकता न थी। मार्क की पुत्री सुन्दर फैनकन के भाग में वह सेम-बीज पड़ा। फिलिप लाएस्ट्रेंज ने चाँदी की तश्तरी में उसे रखा और झुक कर सलाम करते हुए कहा, "श्रीमहारानी फ़लीची ने अपने राजकीय आदर सहित श्रीमहारानी फैनकन के पास यह भेजा है।" इसे सुन फैनकन लज्जा के मारे लाल हो गई। भोज और आनन्द साथ-साथ होते गये। सब से अधिक आनन्द जीनवाल्डो को प्राप्त हो रहा था। यद्यपि वह मेज पर नहीं बैठा था, पर वह एक अतिथि के पास से दूसरे के पास जाता था। नौकरों की भाँति उसके हाथ में एक रूमाल था। वह किसी के लिये तश्तरी लाता था, तो किसी के लिये प्याला।

वह सब से खूब खाने और पीने की प्रार्थना करता था। अपने अतिथियों को खाद्य-वस्तु देकर तथा उनको सब भाँति से प्रसन्न करके वह खूब प्रसन्न हो रहा था।

जब भोज समाप्त हो गया, इसलिये नहीं कि स्वादिष्ट पदार्थों की कमी पड़ गई, प्रत्युत इसलिये कि बारहवीं रात्रि की भूख का भी अन्त होता ही है, तब जीनवालडो ल्यूगियो के जॉन के पास आकर खड़ा हो गया। उसने उसके कान में कुछ कहा। पिता उठे और लोगों को शान्त होने का आदेश दिया। सब लोग उनकी प्रतीक्षा तो कर ही रहे थे, एकदम शान्त हो गये। तब उन्होंने कहा, "आज फ़लीची का भोज है। उसके पिता ने उस भयानक रात्रि में सहायता देनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को निमंत्रित किया है। वह आप लोगों को हृदय से धन्यवाद देते हैं और प्रार्थना करते हैं कि आप सब कुशलपूर्वक अपना जीवन-काल व्यतीत करें। इसे वह स्वयं कह कर अति प्रसन्न होते, पर वह कहने में भय खाते हैं। अतएव मैंने उनकी ओर से कह दिया है।" यह सुन कर सब लोग चारों ओर से कर-तल ध्वनि करने लगे और सब ओर से ये शब्द आये, "उनका स्वागत, उनको धन्यवाद।" कुछ लोगों ने चिल्ला कर कहा, "श्रीकुमारी फ़लीची चिरञ्जीवो हों।" और बेचारी प्रसन्न-वदना फ़लीची चिल्ला रही थी और उसकी माता भी चिल्ला रही थी, मानो दोनों के हृदय फट रहे थे।

तब जीनवाल्डो ने हाथ हिला कर कहा, "मैं इन पिताओं के समान बोलना नहीं जानता, पर मैं प्रयत्न करूँगा। मैं आप लोगों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ कि मेरी प्यारी बच्ची बच गई और हम सब लोगों की प्रसन्नता का मूल-कारण हुई। हा, मेरे मित्रो, मैंने आप लोगों से सहस्रों बार निर्दयतापूर्वक कहा है कि मुझे अपने काम से काम है और लोग अपना काम करें। हाय, मैंने ये शब्द इस उत्सव में उपस्थित कई व्यक्तियों से बार-बार कहे हैं। पर नोएल की सन्ध्या को एक अपूर्व शिक्षा मुझे मिली। उस भयानक रात्रि में मैंने सीखा कि मेरी तथा मेरी प्रियतम वस्तुओं की रक्षा के हेतु बहुत से अन्य लोगों की आवश्यकता है; और वे लोग वीरतापूर्वक अपने जीवन की चिन्ता न कर मेरी सहायता को आये। उसी क्षण मैंने ईश्वर से प्रार्थना की और उनसे प्रतिज्ञा की कि चाहे मेरी पुत्री मरे अथवा जिये, पर मैं अपना जीवन अपने भाई और बहिनों की सेवा में अर्पण कर दूँगा। पर प्रिय मित्रो, जबतक मैं ईश्वर से तथा आप लोगों से क्षमा न माँग लूँ, तबतक मैं अपनी प्रतिज्ञा का पालन नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने बार-बार कहा है कि मैं अपनी चिन्ता करता हूँ, लोग अपनी करें। मैं दूसरों के लिये अपना जीवन उत्सर्ग नहीं कर सकता, जबतक दूसरे मेरी स्वार्थ परता के लिये मुझे क्षमा न कर दें। अस्तु, फ़लीची के चरणों पर मैं उनसे तथा आप लोगों से प्रार्थना करता हूँ, और ईश्वर से भी विनती करता हूँ कि सब लोग मुझे यह

ज्ञान दें कि मैं दूसरों के हेतु, तथा दूसरे लोग मेरे हेतु कैसे जीवन-यापन कर सकते हैं।"

कुछ अतिथि रो रहे थे और कुछ कर-तलध्वनि कर रहे थे। उनमें से कुछ चिल्ला कर कह रहे थे, "स्वामी जीन चिरंजीवी हों"। पर पिता विलियम ने, जिनके गालों पर अश्रुधारा बह रही थी, हाथ हिलाया और सब लोग शान्त हो गये। आर्क बिशप के स्थानापन्न को यहाँ उपस्थित और ल्यूगियो-निवासी जॉन के इतने समीप खड़ा देख कर उन्हें बड़ा आश्चर्य हो रहा था। वे स्वांग करने के ढंग से ऐसा मुसकरा रहे थे, मानो किसी गुप्त रहस्य का उद्‌घाटन करनेवाले हों। जब उन्होंने देखा कि सब लोग अत्यन्त उत्सुक हो रहे हैं, तब अपनी उँगली से माल्टा का क्रूश आकाश में बना कर उन्होंने कहा, "मैं अपने भाई को स्वार्थपरता त्याग कर दूसरों के लिए जीवन व्यतीत करने की शिक्षा दूँगा। भाई, जो कुछ तुम करो, 'यीशु के प्रेम के निमित्त' करो, और जिस किसी का स्वागत करो, 'उसके नाम पर' करो।"

इतना कह कर श्रीमती वाल्डो तथा फ़लीची के पीछे से वे ल्यूगियो-निवासी जॉन के पास आये, और उनके गले में हाथ डाल कर उनका मुख अपनी ओर किया और उसका चुम्बन लिया। यह देख सब लोग आश्चर्य करने लगे।

प्रसन्नता के शब्दों तथा करतलध्वनि से बैठक गूँज उठी। सब लोग आश्चर्य चकित थे और सब के नेत्र अश्रुपूरित थे। दीक्षित लोगों को सब से बड़े आश्चर्य की बात यह थी कि लायन्स का राज्य-कर्त्ता राजकुमार उनके गुप्त चिह्न को कैसे जान गया। जो लोग जीनवालडो द्वारा भयानक रात्रि में अनुभव किये गये रहस्य को न समझ सकते थे उनकी समझ में यही आया कि ओलिकन पर्वत पर सलादीन और फ़िलिप एक दूसरे का चुम्बन कर रहे हैं। मॉट फ़ेरैराड ऐसे कट्टर दीक्षितों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि लायन्स के आर्क बिशप अथवा उसके स्थानापन्न के भी हृदय है और वे भी दुष्टता को त्याग भली बात मुँह से निकाल सकते हैं। अलेक्ज़ैरएडर, ह्यू, स्टेफ़न आदि पुरोहितों को बड़ा आनन्द प्राप्त हो रहा था, क्योंकि उनका अधिपति स्वयं दूसरों के साथ प्रेम तथा सहानुभूति प्रकट करने में उससे एक पग आगे था।

ल्यूगियो के जॉन को कोई आश्चर्य की बात न ज्ञात हुई। उन्होंने भी विलियम को छाती से लगा मुख चुम्बन किया और फिर कहा, "वास्तव में आज ईश्वर का राज्य आ गया है। ईश्वर के नगर की रक्षा हो गई है और हम सब उसमें वर्तमान हैं। इससे अधिक आनन्ददायिनी कौन सी बात हमें स्वर्ग से प्राप्त हो सकती है? विलियम, आप हम लोगों

को समझने में कभी भूल न करेंगे और न हम आपको समझने में भूल करेंगे। जो कुछ आप हम लोगों से कहेंगे, वही हम करेंगे, क्योंकि आप 'यीशु के प्रेम के निमित्त' आज्ञा देंगे, और हम 'उसके नाम पर' उसका पालन करेंगे।

बारहवाँ परिच्छेद

सम्पूर्ण कथा

यह कथा जो आपने पढ़ी है मेरे चाचा एड्रियन लायन्स नगर से लाये हैं। फ़लोची, ग्यूलियो, जीनवालडो, कैनन विलियम आदि की पददलित भूमि पर वे घूमे-फिरे हैं। उन्होंने छोटे-बड़े पुलों को पार कर जोनवाल्डो का कारखाना देखा है। पर्वत के ऊपर स्थित सेंट टामस के गिरजे में भी वे गये हैं। आज-कल वह गिरजा 'आवर लेडी ऑव फ़ोर्वियर्स' के नाम से प्रसिद्ध है। उन्होंने स्वयं प्रुशियन युद्ध से सुरक्षित लौट आए सैनिकों का चढ़ावा देखा है जो वहाँ लटक रहा है। मेरे चाचा ने घाटी पार तीस लीग दूरस्थ मॉट ब्लैंक के भी दर्शन किये हैं।

वे डॉफ़िन पर्वतों तथा उत्तरीय पहाड़ियों पर गये थे। ल्यूगियो-निवासी पिता जॉन की भाँति ब्रीवन तथा अलबराइन की घाटियों में उन्हें भी रोन नदी दो बार पार करनी पड़ी थी। वे कह नहीं सकते कि कोयले के व्यापारी सीसेल के मार्क की झोपड़ी मिली थी या नहीं, पर इतना कह सकते हैं कि उस स्थान के आस-पास वे पहुँच गये थे।

उन्होंने एक दिन लायन्स के शान्त पुस्तकालय में व्यतीत किया जहाँ किसी ने पीटरवाल्डो की चिन्ता न की थी और वहीं उस दिन पंचम हेनरी के समान उनका आदर-सत्कार हो रहा था। उस पुस्तकालय में उन्होंने लायन्स का इतिहास पढ़ा। दीवाल पर इतिहासकार क्लॉड फ्रैंसिस मेनेस्ट्रीयर का एक बड़ा चित्र टँगा था। मॉट फ़ैलकन द्वारा लिखे गये लायन्स के इतिहास को भी उन्होंने पढ़ा। कदाचित् मॉट फ़ैलकन ने ही अपनी टूटी-फूटी फ्रेंच भाषा में मेरे चचा का स्वागत-सत्कार किया था। फिर उन्होंने उन लेखों को पढ़ा जो मॉट फ़ैलकन के उत्तर में लिखे गये थे। इससे मेरे चचा को भली-भाँति ज्ञात हो गया कि पीटरवाल्डो, ल्यूगियो-निवासी जॉन, तथा 'लायन्स के दीनों' द्वारा जलाई हुई आग, दो एक ही शताब्दियों में बुझ नहीं गई, प्रत्युत वह उस समय भी धधक रही थी जब मेरे चचा वहाँ गये थे।

वहाँ के पर्वतों, नदियों तथा सोतों के बहुत से चित्र मेरे चाचा घर लाये थे। और भी बहुत से चित्र तथा फोटो उनके

पास थे जिन्हें हमने आपको नहीं दिखाया है। वे पीटरवाल्डो तथा ल्यूगियो-निवासी जॉन के मित्रों की बहुत सी कथाएँ भी लाये थे। उन घाटियों तथा खोहों के विषय में उन्होंने बड़ी लम्बी-लम्बी कथाएँ सुनाई थीं जिनमें लायन्स के दीन शताब्दियों तक लुक-छिप कर अपनी रक्षा और अपने धर्म का प्रतिपालन करते थे। पर उनका सम्बन्ध हमारी फ़लीची के क्रिसमस और बारहवीं रात से नहीं है। इस लिये मेरे चाचा द्वारा लिखी हुई इस कथा में वे कथाएँ नहीं लिखी गई हैं।

सितम्बर मास की दो सुहावनी संध्याओं को न्यू साइबेरिस समुद्र के किनारे मेरे चाचा ने फ़लीची, जीनवाल्डो, फ्लारेन्स-निवासी ग्यूलियो, पर्वतीय यात्रा, कोयला जलानेवाले की झोपड़ी, ल्यूगियो के जॉन, क्रिसमस की सन्ध्या, पिता विलियम आदि के विषय की यह कथा पढ़कर हमें सुनाई थी जिसका शीर्षक हम और आपने 'उसके नाम पर' दिया है। मेरे पुत्र फ़िलिप को बारहवीं रात के भोज का वर्णन अन्त तक सुनने की आज्ञा मिल गई थी। वह बहुत देर तक बैठा सुनता रहा। जब कथा समाप्त हो गई, तब उसकी माता ने बत्ती लेकर सोने जाने को कहा, पर वह ठहर गया और पूछा, "चाचा एड्रियल, क्या यह कहानी सच है?"

मेरे चाचा ने उत्तर दिया, "क्यों नहीं? पीटरवाल्डो और जॉन ल्यूगियो का देश-निकाला सच ही है। ये दो ऐसे व्यक्ति

थे जिनके योग्य संसार न था। उसी समय रिचर्ड और फ़िलिप धर्म-युद्ध में गये थे और रोन पर का पुल तोड़ दिया था। अवेरोज़ अबुल कैसिन ने उसी समय यूरोप के वैद्यक शास्त्र में क्रान्ति उपस्थित कर दी थी। लायन्स के दीनों को अपनी रक्षा के लिये पहाड़ों और खोहों में छिपना पड़ा ही था और अपनी रक्षा के हेतु कहानी में वर्णित गुप्त चिह्नों से कहीं अधिक चिह्नों का प्रयोग करना पड़ा था। यह कहानी नहीं बतलाती कि किस कैनन विलियम ने आर्क बिशप का स्थान ग्रहण किया था, परन्तु यह तो निश्चय ही है कि वह कोई कैनन रहा होगा। कथा से पता नहीं चलता कि सीयर ब्लैंक की टाँगें श्वेत थीं या श्याम और न यही पता लगता है कि मार्क की पुत्री फ़ैनकन पन्द्रह वर्ष की थी अथवा सोलह वर्ष की। पर मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि इतना तो अवश्य सत्य है कि 'यीशु के प्रेम के निमित्त' कार्य करनेवाले को यदि 'उसके नाम पर' किसी की सहायता प्राप्त हो जाती थी, तो वह कभी असफल नहीं होता था।

उसकी चाची प्रिसिल्ला ने कहा, "मेरे प्यारे फ़िलिप, पिछले सप्ताह में बिलकुल वही कथा यहाँ भी हो गई है लेकिन तुम्हें तो अपनी नाव और बन्दूक से उसे सुनने या देखने के लिये छुट्टी ही नहीं मिलती।"

"यहाँ हो रही है, प्यारी चाची ?" फ़िलिप वह सदा होती रहती है। यीशु ख्रीष्ट अपने कथनानुसार ढेर का ढेर जीवन प्रदान कर रहे हैं और मृतकों को जिला रहे हैं। जब डाक्टर सरजेंट आधी रात को बीस मील घोड़े पर चढ़ कर श्रीमती फेव्रिज के पास प्रातः के पूर्व पहुँच जाते हैं, तब क्या तुम यह सोचते हो कि वे इस आशा में जाते हैं कि नगर-निवासी उन्हें एकाध डालर दे देंगे ?" वे ऐसा करते हैं क्योंकि यीशु ख्रीष्ट ने उन्हें ऐसा करने की आज्ञा दी है। हाँ वे यह नहीं कहते कि 'यीशु के प्रेम के निमित्त', अथवा 'उसके नाम पर' मैं ऐसा कर रहा हूँ। जब श्रीजॉन्सन ने कल रात को मेरी की छाती पर लगाने के लिए रंगा हुआ लकड़ी का चूरा न भेज कर वास्तविक सरसों भेजा, तो क्या तुम यह समझते हो कि उन्होंने तुम्हारे पिता द्वारा कर बचाने की आशा में ऐसा किया ? उन्होंने ऐसा किया क्योंकि वे दूसरों को धोखा देकर एक पाई भी लेने से मर जाना अच्छा समझते हैं। और यह तुम्हारे पिता जॉन के शब्दों में 'यीशु के प्रेम के निमित्त' हुआ है। अथवा, जब कल रात को वह तार वाला तार गाड़ी टूट जाने पर किंगस्टन से पैदल आया क्योंकि उसे भय था कि तार आवश्यक है, तो क्या तुम समझते हो कि उसने किराये की लालच से ऐसा किया ? उसने माल्टा के क्रूश का कोई चिह्न नहीं बनाया और द्वार पर उसने कोई गुप्त शब्द नहीं कहा, तौ भी उसने 'यीशु के प्रेम के निमित्त' अपना कार्य

किया। यदि वह 'उसके नाम पर' विश्वास करनेवाले व्यक्तिये के बीच में न रहता और न घूमता, तो वह जीवन भर कदापि ऐसा न करता।

प्यारे फ़िल, आज के पाँच सौ वर्ष पश्चात् तुम्हारी और मेरी कथा प्रकाशित होगी। उस समय हम लोग बड़े विचित्र मालूम पड़ेंगे। यदि हमारा कार्य सीधा सादा, प्रेमपूर्ण तथा 'यीशु के प्रेम के निमित्त' होगा, अथवा यदि हम 'उसके नाम पर' एक सूत्र में बँध जायँगे तो हमारी कथा लोग बड़े चाव से पढ़ेंगे।"

॥ इति ॥